राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 मोदी सरकार के लिए वक्फ संशोधन विधेयक पास कराना अब......

उमर अदुल्ला के लिए गांदरबल सीट आसान नही.............. 12

वर्ष : 12 | अंक : 147 | पटना, शनिवार, 07 सितम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

सीएम नीतीश ने गणेश चतुर्थी के अवसर पर दी बधाई

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गणेश चतुर्थी के अवसर पर प्रदेश एवं देशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने गणेश चतुर्थी को आपसी भाईचारा, पारस्परिक प्रेम, सामाजिक सौहार्द एवं शांतिपूर्ण सद्भाव के साथ मनाने की अपील की है।

भारत ने रिहा किए 14 पाकिस्तानी नागरिक

चंडीगढ़। केन्द्र सरकार ने पंजाब समेत देश की अन्य जेलों में बंद पाकिस्तान के 14 कैदियों को सजा पूरी करने के बाद शुक्रवार को रिहा कर दिया। इन पाकिस्तानी नागरिकों को अटारी-बाघा सीमा पर पाकिस्तान भेजने के लिए सीमा के रेंजरों के हवाले कर दिया गया। इससे पहले बीएसएफ के अधिकारियों ने इनकी जांच की और फिर पाक रेंजरों से अपने नागरिकों की शिनाख्त की। भारत सरकार के फैसले के बाद विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने कड़ी सुरक्षा के बीच सभी कैदियों को बाघा बार्डर पर भेजा। जहां पहले से ही उनके परिवार के सदस्य मौजूद थे। इन कैदियों में से आठ कैदी गुजरात जेल से और छह कैदी अमृतसर जेल से रिहा हुए हैं।

सड़क हादसा, 12 की मृत्यु

हाथरस। उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में शुक्रवार देर शाम रोडवेज बस और मैजिक वाहन की भिड़ंत में 12 लोगों की मृत्यु हो गयी जबकि 16 अन्य गंभीर रुप से घायल हो गये। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे में गहरा दुख जताते हुये शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदन व्यक्त की और घायलों के समुचित उपचार के निर्देश दिये। उन्होने अधिकारियों को मौके पर जाकर राहत एवं बचाव कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिये हैं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि आगरा-अलीगढ राजमार्ग पर बाईपास के पास यह हादसा उस समय हुआ जब यात्रियों से भरा टाटा मैजिक वाहन रोडवेज बस को ओवरटेक करने की कोशिश कर रहा था।

मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने नवनिर्मित क्षेत्रीय चक्षु संस्थान का किया उद्घाटन

आईजीआईएमएस में 188 करोड़ की लागत से आंख अस्पताल का हुआ लोकार्पण

सूबे में स्वास्थ्य व्यवस्था बेहतर इलाज कराना हुआ आसान : नीतीश

- 850 करोड़ की लागत की विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तथा केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे पी नड्डा ने शुक्रवार को इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान परिसर में 188 करोड़ रुपये की लागत से नवनिर्मित क्षेत्रीय चक्षु संस्थान का शिलापट्ट अनावरण कर एवं फीता काटकर उद्घाटन किया। उद्घाटन के बाद मुख्यमंत्री ने नवनिर्मित क्षेत्रीय चक्षु संस्थान का निरीक्षण किया। इस दौरान प्रथम तल पर जाकर ओपीडी, वार्ड एरिया, ऑपरेशन थियेटर रूम, जेनरल वार्ड आदि का निरीक्षण किया और वहां की व्यवस्थाओं की जानकारी ली। मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने आईजीआईएमएस परिसर में आयोजित कार्यक्रम में रिमोट के माध्यम से स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत 850 करोड़ रुपये की लागत से विभिन्न परियोजनाओं का रिमोट के माध्यम से उद्घाटन एवं शिलान्यास किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा का अभिनंदन करते हुए कहा कि आईजीआईएमएस की स्थापना वर्ष 1984 में हुई थी। शुरू में इस संस्थान में ठीक ढंग से काम हुआ लेकिन कुछ वर्षों के बाद यहां की व्यवस्था खराब होने लगी। वर्ष 2005 में सरकार में आने के बाद हमलोगों ने इस संस्थान के सुधार पर पूरा ध्यान दिया। लोगों के इलाज की आधुनिक व्यवस्था कराई गई, बड़ी संख्या में डॉक्टरों की पोस्टिंग की गई, आई बैंक एवं आधुनिक किडनी ट्रांसप्लांट यूनिट स्थापित की गई, हार्ट के मरीजों के लिए कार्डियक सेंटर बनाए गए, स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई। बाल हृदय योजना के तहत हृदय में छेद से पीड़ित बच्चों का निःशुल्क इलाज राज्य सरकार द्वारा अपने खर्च पर अहमदाबाद के सत्य साई अस्पताल में भेजकर कराया गया। अब इन बच्चों का इलाज पटना के आईजीआईएमएस तथा आईजीआईसी में शुरू हो गया है। मुझे खुशी हो रही है कि इस कड़ी में आज आईजीआईएमएस के परिसर में आंखों के क्षेत्रीय संस्थान का उद्घाटन किया जा रहा है। साथ ही स्वास्थ्य संस्थानों में भवनों तथा सुविधाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया जा रहा है जिसमें हाल ही में बनाए गए हेल्थ यूनिवर्सिटी का भवन भी शामिल है। इन सभी की लागत 850 करोड़ रुपये है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आईजीआईएमएस में पहले दवाई एवं जाँच के लिए कुछ राशि देनी पड़ती थी लेकिन अब यहाँ पर मुफ्त दवा एवं जाँच की व्यवस्था की गयी है।

बेड की संख्या तीन हजार से ज्यादा हो जायेगी :

मुख्यमंत्री ने कहा कि बेहतर सुविधाओं के चलते अब यहाँ पर अच्छी खासी संख्या में अपना इलाज करवाने आ रहे हैं जिसके कारण यहाँ पर काफी भीड़ रहती है। उन्होंने कहा कि पहले आईजीआईएमएस में बेड की संख्या 770 थी, फिर हमने इसके अतिरिक्त यहाँ पर 2 हजार 500 बेड और बढ़ाने का निर्णय लिया। इस पर तेजी से काम कराया जा रहा है जिससे अब बेड की संख्या 1 हजार 370 हो गयी है। काम लगातार जारी है, 500 बेड पर काम इस वर्ष के अंत तक पूरा हो जायेगा तथा 1200 बेड का सुपर स्पेशिलिटी अस्पताल का निर्माण अगले वर्ष तक पूरा कर दिया जायेगा। इस प्रकार यहाँ पर बेड की संख्या तीन हजार से ज्यादा हो जायेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के समय में पटना में एम्स के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई। आज वह काफी अच्छा बन गया है। यहां पर अच्छी सुविधाओं के साथ मरीजों का बेहतर इलाज हो रहा है। इसके अलावा वर्तमान केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2015 में दरभंगा में दूसरे एम्स की स्वीकृति दी गई। इसका निर्माण जल्द शुरू हो रहा है। मुझे खुशी है कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा जी दरभंगा एम्स के लिए चिह्नित जमीन देखने जा रहे हैं। उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। हमलोगों ने दरभंगा में एम्स के निर्माण के लिए 150 एकड़ भूमि चिह्नित कर ली है। वह दरभंगा एम्स के लिए अच्छी जगह है। यहां पर एम्स के निर्माण के बाद दरभंगा का और विस्तार हो जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि बहुत खुशी की बात है कि जेपी नड्डा बिहार आए हैं, इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। उनका जन्म यहीं पर हुआ है। बिहार से उनका पुराना रिश्ता है। वे बिहार आते रहेंगे तो हमलोगों को खुशी होगी। उनके पिताजी यहीं पर रहते थे। हम दिल्ली जाते हैं तो हमेशा इनसे मिलते हैं। यहां पधारे सभी अतिथिगण, डॉक्टर्स और अन्य चिकित्साकर्मियों का मैं अभिनंदन करता हूं। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री को स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डे ने हरित पौधा एवं स्मृति चिह्न भेंटकर स्वागत किया।

बिहार आने वाले दिनों में मेडिकल हब बन जाएगा : नड्डा

- बोलें- दिल्ली एम्स जैसी सुविधा आईजीआईएमएस के चक्षु संस्थान में मिलेगा

प्रात : किरण

पटना। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने आईजीआईएमएस परिसर में क्षेत्रीय चक्षु संस्थान का उद्घाटन किया। 154 बेड की क्षमता वाला यह क्षेत्रीय चक्षु संस्थान 188 करोड़ की लागत से तैयार हुआ है। यह उत्तर भारत का नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में सबसे बड़ा सरकारी संस्थान है। इस मौके पर जेपी नड्डा ने लगभग 850 करोड़ की लागत के विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। इसमें लगभग 300 करोड़ की 11 परियोजनाओं का शिलान्यास हुआ और 550 करोड़ की राशि के 22 परियोजनाओं का उद्घाटन हुआ। इसमें राज्य के विभिन्न जिलों के 164 स्थान पर स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र के निर्माण का शिलान्यास किया गया और 131 स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस मौके पर जेपी नड्डा ने कहा कि बिहार में स्वास्थ्य क्षेत्र के विकास की कहानी 2005 से शुरू होती है। आईजीआईएमएस की स्थापना 1983 से 2005 तक की विकास की गति को देखेंगे और 2005 से 2024 की विकास की गति को देखेंगे तो इस दौड़ में संस्थान ने विकास की ऊंची छलांग लगाई है। नड्डा ने कहा कि जो सुविधा दिल्ली एम्स के आप्थाल्मालॉजी विभाग में मिल रही है वह सभी सुविधाएं पूर्वी रीजन को आईजीआईएमएस के इस क्षेत्रीय चक्षु संस्थान में मिलेगी। यहां 11 मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर बने हैं और सबसे लेटेस्ट तकनीक के इक्विपमेंट को लगाया गया है। नेत्र रोग में पांच नए डिपार्मेंट जनता को समर्पित किया गया है और यहां आई बैंक जो तैयार हुआ है उसकी काफी क्षमता है। यहां अब तक 1000 से अधिक कॉर्निया ट्रांसप्लांट हो चुके हैं और उम्मीद करते हैं कि इस संस्थान की तैयार होने से कॉर्निया ट्रांसप्लांट की संख्या और बढ़ेगी। जेपी नड्डा ने कहा कि पीएमसीएच में 5462 बेड की क्षमता का दुनिया का दूसरे नंबर का सबसे बड़ा अस्पताल बनने जा रहा है। पटना और बिहार आने वाले दिनों में मेडिकल हब बन जाएगा। उन्होंने कहा कि उजाले का आनंद लेना है तो अंधकार की त्रासदी को समझना चाहिए। कहा कि मंच से इतने सारे विकास की योजनाओं का नाम गिनवाया लेकिन दूसरे पार्टी के लोग मंच पर सिर्फ समाज को बांटने वाली बातें करते हैं। वह लोग फूट डालो शान करो कि राजनीति करते हैं। आप सभी चिकित्सक सिर्फ मरीज की नब्ज को नहीं टटोलते हैं बल्कि समाज के नब्ज को टटोलने का काम करते हैं। आप यह देखिए की कौन विकास की राजनीति करता है और कौन बांटने की राजनीति करता है।

क्या खास है क्षेत्रीय चक्षु संस्थान में : क्षेत्रीय चक्षु संस्थान के चीफ और आईजीआईएमएस के आप्थाल्मालॉजी डिपार्टमेंट के विभागाध्यक्ष डीआर विभूति नारायण ने बताया कि इस संस्थान में नेत्र विज्ञान के पांच सुपर स्पेशलिटी डिपार्टमेंट है। यह डिपार्टमेंट है ऑक्युप्लास्टी एंड स्क्विंट सर्विसेज, रेटिना एंड यूविया सर्विसेज, कॉर्निया एंड रिफ्रैक्टिव सर्विसेज, ग्लूकोमा एंड न्यूरो आप्थाल्मालॉजी एंड कम्युनिटी सर्विसेज और पेडियाट्रिक आप्थाल्मालॉजी. उन्होंने बताया कि एक रनिंग हॉस्पिटल से इस बिल्डिंग में पूरा अस्पताल शिफ्ट होगा ऐसे में फुल फ्लेज्ड रूप से यह संस्थान 6 महीने में कार्य करने लगेगा। यहां नेत्र चिकित्सा के लिए 24 घंटे एमरजेंसी सर्विसेज की सुविधा है।

बिहार में 65 फीसदी आरक्षण, आरजेडी की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट करेगा विचार

प्रात : किरण

नई दिल्ली\एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि वह बिहार में शैक्षणिक संस्थानों और सार्वजनिक नौकरियों में पिछड़े वर्गों, एससी/एसटी के लिए आरक्षण की सीमा 50 से बढ़ाकर 65 फीसदी करने के राज्य सरकार के फैसले को खारिज करने वाले पटना उच्च न्यायालय के 20 जून के निर्णय के खिलाफ राष्ट्रीय जनता दल की याचिका पर विचार करेगा। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने आरजेडी की याचिका पर नोटिस जारी किया और इस पर बिहार सरकार की ओर से दायर एक अन्य याचिका के साथ सुनवाई करने का फैसला किया। उच्चतम न्यायालय ने 29 जुलाई को उच्च न्यायालय के फैसले पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। पटना उच्च न्यायालय ने आपने फैसले में कहा था राज्य को 50 प्रतिशत की सीमा के भीतर आरक्षण प्रतिशत पर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए तथा क्रीमी लेयर को लाभ से बाहर रखना चाहिए। बिहार सरकार ने अपनी याचिका में उच्च न्यायालय के इस दृष्टिकोण की वैधता पर सवाल उठाया था कि आरक्षण का दायरा बढ़ाने से रोजगार और शिक्षा के मामलों में नागरिकों के लिए समान अवसर के अधिकार का उल्लंघन हुआ है। याचिका में कहा गया था कि उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार द्वारा किए गए जातीय सर्वेक्षण के बाद पारित बिहार पदों और सेवाओं में रिक्तियों का आरक्षण अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए संशोधन अधिनियम, 2023 को गलत तरीके से रद्द कर दिया। याचिका में कहा गया है कि बिहार एकमात्र ऐसा राज्य है, जिसने यह शुरू किया और पूरी आबादी की सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक स्थितियों पर अपनी जाति सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रकाशित की। राज्य ने इस न्यायालय के बाध्यकारी निर्णयों का अनुपालन किया और फिर आरक्षण अधिनियमों में संशोधन किया है। हालांकि, उच्च न्यायालय संविधान के अनुच्छेद 16(4) की वास्तविक प्रकृति और महत्व को समझने में विफल रहा। आरक्षण बढ़ाने का फैसला इंद्रा साहनी (मंडल आयोग), जयश्री लक्ष्मणराव पाटिल (मराठा कोटा) और कई अन्य मामलों सहित कई मामलों में उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्धारित कानून के अनुसार है। याचिका में यह भी दावा किया गया है कि प्रतिनिधित्व की पर्याप्तता के बारे में राज्य की राय को अपनी राय से प्रतिस्थापित करके उच्च न्यायालय ने न्यायिक समीक्षा के वैध दायरे से बाहर जाकर काम किया है। याचिका में यह भी कहा गया है कि निर्णय में यह भी नहीं समझा गया कि यह एक सामान्य कानून है कि 50 फीसदी की सीमा एक अपरिवर्तनीय नियम नहीं है और असाधारण परिस्थितियों में इसका उल्लंघन किया जा सकता है। जाति जनगणना के आधार पर सरकार ने सही निष्कर्ष निकाला है कि पिछड़े वर्गों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं किया गया था और वास्तविक समानता के संवैधानिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सकारात्मक कार्रवाई को आगे बढ़ाने की आवश्यकता थी। मुख्य न्यायाधीश के विनोद चंद्रन और न्यायमूर्ति हरीश कुमार की (उच्च न्यायालय) की पीठ ने 2023 के आरक्षण संबंधी राज्य कानून को संविधान के अधिकार क्षेत्र से बाहर और संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 के तहत समानता खंड का उल्लंघन करने वाला घोषित किया था।

पटना उच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि राज्य ने सरकारी सेवाओं और शैक्षणिक संस्थानों में उनके संख्यात्मक प्रतिनिधित्व के बजाय विभिन्न श्रेणियों की आबादी के अनुपात के आधार पर कार्यवाही की।

जम्मू-कश्मीर चुनाव : भाजपा ने जारी किया संकल्प पत्र

प्रात : किरण

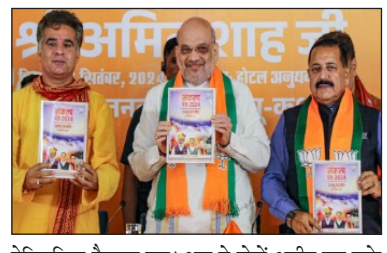

नई दिल्ली\एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों के लिए भारतीय जनता पार्टी का चुनावी घोषणापत्र जारी किया। शाह दो दिवसीय दौरे पर शुक्रवार दोपहर जम्मू पहुंचे। अमित शाह ने पार्टी का संकल्प पत्र जारी करने के बाद कहा कि आजादी के समय से ही हमारी पार्टी के लिए जम्मू-कश्मीर का ये भूभाग बहुत महत्वपूर्ण रहा है और आजादी के समय से ही हमने इस भूभाग को हमेशा भारत के साथ जोड़े रखने के लिए प्रयास किए। पंडित प्रेमनाथ डोगरा से लेकर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की शहादत तक... ये पूरा संघर्ष पहले भारतीय जनसंघ और फिर भारतीय जनता पार्टी ने आगे बढ़ाया। क्योंकि हमारी पार्टी मानती है कि जम्मू-कश्मीर हमेशा से भारत का हिस्सा है और रहेगा। 2014 तक जम्मू-कश्मीर पर हमेशा आतंकवाद और अलगाववाद की परछाई रही। ये हमेशा जम्मू-कश्मीर को अस्थिर करते रहे और सभी सरकारों ने एक प्रकार से तुष्टिकरण की पॉलिस्टिक्स से जम्मू-कश्मीर को डील किया।

2014 से 2024 तक जम्मू-कश्मीर के लिए स्वर्णिम काल :

पहले यहां अलगाववादियों के सामने सरकारें नतमस्तक हुआ करती थीं। बीते 10 साल में यहां शांति रही और विकास हुआ। 370 और 35अ खत्म करना ऐतिहासिक फैसला रहा। अब ये दोनों अतीत बन चुके हैं। उनकी अब कभी वापसी नहीं हो पाएगी। 2014 से 2024 तक जम्मू-कश्मीर के लिए स्वर्णिम काल रहे। धारा 370 और 35ए... अब पास्ट बन चुका है, वो हमारे संविधान का हिस्सा नहीं है। इसका बात का पूरे भारत और जम्मू-कश्मीर की जनता को आनंद है। क्योंकि धारा 370 ही वो कड़ी थी जो कश्मीर के अंदर युवाओं को उनके हाथ में पत्थर और हथियार पकड़ाती थी। आज मोदी जी के नेतृत्व में जम्मू-कश्मीर में विकास के क्षेत्र में बहुत सारे काम हुए हैं। भाजपा ने बहाल किया पंचायती राज :

पहले यहां डेमोक्रेसी तीन परिवारों में ही सीमित होकर रह गई थी। ना पंचायत चुनाव होते थे, ना तहसील पंचायतें बनती थीं, ना जिला पंचायतें होती थीं। भाजपा की सरकार ने ग्राम पंचायत, तहसील पंचायत, जिला पंचायत और म्यूनिसिपलिटी का चुनाव कराकर पंचायती राज को बहाल करने का काम किया है और लोकतंत्र को प्रस्थापित किया है।

श्री शाह ने कहा कि मैं राहुल गांधी जी से पूछना चाहता हूं कि आप देश और जम्मू-कश्मीर की जनता के सामने स्पष्ट करिए, आपके मौन धारण करने से कुछ नहीं होगा। क्या नेशनल कॉन्फ्रेंस के एजेंडा साथ कांग्रेस पार्टी सहमत है या नहीं? आप हां या ना में जवाब दीजिए। बीजेपी संकल्प पत्र की बड़ी बातेंः

शांतिपूर्ण सुरक्षित और विकसित जम्मू कश्मीर का निर्माण, महिलाओं के विकास पर फोकस करेंगे, मताओं प्रतिवर्ष 18 हजार रुपये देंगे, उज्जवला योजना के सभी लाभार्थियों को दो सिलेंडर मुफ्त देंगे, कॉलेज के विद्यार्थियों को 3 हजार रुपये ट्रैवलिंग आलउंस देंगे, प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए युवाओं 10 हजार रुपये का री-इंबर्समेंट मिलेगा, पीर पंजाल, जम्मू की तरफ के छात्र-छत्राओं को टैबलेट और लैपटॉप देंगे, जम्मू को पहलगाम से भी अच्छा टूरिस्ट प्लेस बनाएंगे,डल झील को विश्व स्तरीय टूरिस्ट प्लेस बनाएंगे

श्रीनगर में एक एम्यूजमेंट पार्क बनाएंगे जो अनूठा होगा, जम्मू के नदियों को रिवरफ्रंट का टूरिस्ट प्लेस बनाएंगे, जम्मू और श्रीनगर दोनों शहरों में जल्द मेट्रो भी दौड़ाएंगे, आतंकवाद की बलि चढ़े मंदिरों का भी विकास होगा, सत्ता में आने के बाद आतंकवाद पर श्वेतपत्र जारी करेंगे, आतंकवाद पर जो प्रहार किया है उसे और कड़ा करेंगे।

शुभारंभ | प्रधानमंत्री ने गुजरात के सूरत में जल संचय जनभागीदारी पहल के शुभारंभ किया............

जल संचय केवल एक पॉलिसी नहीं, यह एक प्रयास भी है : मोदी

प्रात : किरण

सूरत\एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से गुजरात के सूरत में जल संचय जनभागीदारी पहल के शुभारंभ पर शुक्रवार को कहा कि जल-संचय, ये केवल एक पॉलिसी नहीं है। ये एक प्रयास भी है, और यूं कहें तो ये एक पुण्य भी है। इसमें उदारता भी है और उत्तरदायित्व भी। श्री मोदी ने इस अवसर पर कहा कि आज गुजरात की धरती से जलशक्ति मंत्रालय द्वारा एक अहम अभियान का शुभारंभ हो रहा है। उसके पूर्व पिछले दिनों देश के हर कोने में जो वर्षा का तांडव हुआ, देश का शायद ही कोई इलाका होगा, जिसको इस मुसीबत से संकट को झेलना ना पड़ा हो। मैं कई वर्षों तक गुजरात का मुख्यमंत्री रहा, लेकिन एक साथ इतने सभी तहसीलों में इतनी तेज बारिश मैंने कभी ना सुना था, ना देखा था। लेकिन इस बार गुजरात में बहुत बड़ा संकट आया। सारी व्यवस्थाओं की ताकत नहीं थी कि प्रकृति के इस प्रकोप के सामने हम टिक पाएं। लेकिन गुजरात के लोगों का अपना एक स्वभाव है, देशवासियों का स्वभाव है, सामर्थ्य है कि संकट की घड़ी में कंधे से कंधा मिलाकर के हर कोई, हर किसी की मदद करता है। आज भी देश के कई भाग ऐसे हैं, जो भयंकर वर्षा के कारण परेशानियों से गुजर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा जल-संचय, ये केवल एक पॉलिसी नहीं है। ये एक प्रयास भी है, और यूं कहें तो ये एक पुण्य भी है। इसमें उदारता भी है, और उत्तरदायित्व भी है। आने वाली पीढ़ियाँ जब हमारा आंकलन करेंगी, तो पानी के प्रति हमारा रवैया, ये शायद उनका पहला पैरामीटर होगा। क्योंकि, ये केवल संसाधनों का प्रश्न नहीं है। ये प्रश्न जीवन का है, ये प्रश्न मानवता के भविष्य का है। इसीलिए, हमने सस्टेनेबल फ्यूचर के लिए जिन नौ संकल्पों को सामने रखा है, उनमें जल-संरक्षण पहला संकल्प है। मुझे खुशी है, आज इस दिशा में जनभागीदारी के जरिए एक और सार्थक प्रयास शुरू हो रहा है। मैं इस अवसर पर, भारत सरकार के जलशक्ति मंत्रालय को, गुजरात सरकार को और इस अभियान में भाग ले रहे देश के सभी लोगों को शुभकामनाएँ देता हूँ। उन्होंने कहा आज जब पर्यावरण और जल-संरक्षण की बात आती है, तो कई सच्चाइयों का हमेशा ध्यान रखना है। भारत में दुनिया के कुल फ्रेस वॉटर का सिर्फ चार प्रतिशत ही है। हमारे गुजरात के लोग समझेंगे सिर्फ चार प्रतिशत ही है। कितनी ही विशाल नदियां भारत में हैं, लेकिन हमारे एक बड़े भूभाग को पानी की कमी से जूझना पड़ रहा है। कई जगहों पर पानी का स्तर लगातार गिर रहा है। क्लाइमेट चेंज इस संकट को और गहरा रहा है। इस सबके बावजूद, ये भारत ही है जो अपने साथ-साथ पूरे विश्व के लिए इन चुनौतियों के समाधान खोज सकता है। इसकी वजह है भारत की पुरातन ज्ञान परंपरा। जल संरक्षण, प्रकृति संरक्षण ये हमारे लिए कोई नए शब्द नहीं है, ये हमारे लिए किताबी ज्ञान नहीं है। ये हालात के कारण हमारे हिस्से आया हुआ काम भी नहीं है।

मंत्रियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों को बहाल करने के हाईकोर्ट के आदेश पर सुप्रीम रोक

प्रात : किरण

नई दिल्ली\एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने तमिलनाडु के मंत्रियों - के. के.एस.आर. रामचंद्रन और थंगम थेन्नारासु तथा उनके परिवार के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति रखने से संबंधित भ्रष्टाचार के आरोपों को बहाल करने के मद्रास उच्च न्यायालय आदेश पर शुक्रवार को रोक लगा दी। न्यायमूर्ति ऋषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार मिश्रा की पीठ ने संबंधित पक्षों की दलीलें सुनने के बाद उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगाने संबंधी यह आदेश पारित किया। पीठ ने उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ दायर याचिका पर तमिलनाडु सरकार को नोटिस जारी किया। वरिष्ठ अधिवक्ताओं - मुकुल रोहतगी, ए.एम. सिंघवी, कपिल सिब्बल, सिद्धार्थ लूथरा और एस. मुरलीधर ने दलील दी कि उच्च न्यायालय सतर्कता और भ्रष्टाचार निरोधक निदेशालय (डीवीएसी) द्वारा दायर क्लोजर रिपोर्ट को आपराधिक पुनरीक्षण में खारिज नहीं कर सकता था। उन्होंने यह भी कहा कि स्वतः संज्ञान में लिया गया आपराधिक मामला उच्च न्यायालय के रोस्टर के अनुसार एक खंडपीठ के समक्ष प्रस्तुत किया जाना था। एक अधिवक्ता ने यह भी दलील दी कि उच्च ने आरोप तय करने का निर्देश देकर अधिकार क्षेत्र का उल्लंघन किया है। तमिलनाडु सरकार के अधिवक्ता ने कहा कि वह उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ विशेष अनुमति याचिका दायर करेंगे। उच्च न्यायालय ने अगस्त में विशेष अदालतों के पिछले आदेशों को पलट दिया था, जिसमें तमिलनाडु के राजस्व और आपदा प्रबंधन मंत्री के के एस एस आर रामचंद्रन और मानव संसाधन प्रबंधन मंत्री थंगम थेनारासु को भ्रष्टाचार के मामलों से मुक्त कर दिया गया था।

विनेश फोगाट और बजरंग पूनिया ने थामा कांग्रेस का हाथ

प्रात : किरण

नई दिल्ली\एजेंसी। पहलवान विनेश फोगाट और बजरंग पूनिया शुक्रवार को कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए हैं। पार्टी में शामिल होने से पहले दोनों ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से उनके आवास पर मुलाकात की। पार्टी में शामिल होने से पहले विनेश ने रेलवे के पद से इस्तीफा भी दे दिया है। विनेश फोगाट ने कहा कि उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश रहेगी। कांग्रेस ने हमारे आंसुओं को समझा। बुरे टाइम में पता चलता है कि आपका कौन है। ये देश के लोगों की सेवा का मौका है। नई पारी की शुरूआत मेरे लिए गर्व की बात है। वहीं बजरंग पूनिया ने कहा कि कांग्रेस और देश को मजूबत करेंगे। भाजपा हमारे साथ खड़ी नहीं हुई। कांग्रेस में आने पर आलोचना हो रही है। विनेश फोगाट ने कांग्रेस पार्टी में शामिल होने से पहले रेलवे से इस्तीफा दे दिया है। कांग्रेस पार्टी ने एक्स पर दोनों के साथ एक तस्वीर साझा की है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मुलाकात के बाद अपने एक्स हैंडल पर तस्वीर साझा करते हुए चक दे इंडिया, चक दे हरियाणा! दुनिया में भारत का नाम रोशन करने वाले हमारे प्रतिभाशाली चैंपियन विनेश फोगाट और बजरंग पूनिया से 10 राजाजी मार्ग पर मुलाकात। हमें आप दोनों पर गर्व है।

संक्षिप्त खबरें

दानापुर में 11 फीट ऊंची प्रतिमा से भगवान गणेश दे'गे श्रद्धालुओं को दर्शन

दानापुर। नगर के अंतर्गत पेठिया बाजार में गणेशोत्सव की तैयारी लगभग पूरी हो चूकी है। इस बार भगवान गणपति की 11 फीट ऊंची प्रतिमा बनाई गई है। जो भगवान शंकर, माता पार्वती के साथ अपने पूरे परिवार के साथ विराजमान नजर आएंगे। महाराष्ट्र के तर्ज पर दानापुर में होने वाली गणेशोत्सव को लेकर लोगों में काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। राइजिंग क्लब व्यापार संघ की ओर से होने वाले गणेशोत्सव आज संध्या विधिवत पूजा-अर्चना के साथ शुरू हो जाएगा। मूर्तिकार मनीष कुमार पंडित ने बताया कि इस बार भगवान गणेश की प्रतिमा के साथ ऋद्धि-सिद्धि, शुभ-लाभ के साथ भगवान शंकर-पार्वती, शंकर भगवान के जटा से गंगा मईया प्रकट होते और राधा-कृष्णा के दर्शन श्रद्धालु कर सकेंगे। संघ के संयोजक ओम प्रकाश यादव उर्फ चिन्ना लाल ने बताया कि 1990 से क्लब द्वारा पेठिया बाजार हडिया बाजार में गणपति महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। भव्य पंडाल के साथ आकर्षक विद्युत सजावट किया जा रहा है ।18 सिंतबर को गाजे-बाजे के साथ गणपति का विसर्जन जुलूस नगर में निकाला जायेगा एवं 20 सिंतबर को भव्य भंडारे का आयोजन किया गया है। जिसको लेकर प्रशासन भी सुरक्षा को लेकर अपनी तैयारी कर चूकी है।

राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान के तहत नगर मंडल में अभियान चलाया

दानापुर। नगर के अंतर्गत भाजपा के राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान के तहत नगर मंडल में अभियान चलाया गया।सांसद सह महिला मोर्चा की अध्यक्ष धर्मशीला गुप्ता ने मंडल अध्यक्ष अखिलेश कुमार उर्फ मुटुर साव को पुनः सदस्यता ग्रहण कराकर कार्यक्रम की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि बिहार को सदस्यता अभियान में अव्वल लाना है। जिसको देखते हुए सभी कार्यकताओं को भी अपने मंडल को जिला में अव्वल आना होगा।मंडल अध्यक्ष अखिलेश ने बताया कि हमारा मंडल सभी कार्यकताओं के साथ इस बार अपने लक्ष्य को प्राप्त कर जिले में अव्वल आएगा। इसके लिए जगह जगह पर कैम्प लगाकर सदस्यता बनाने का काम करेंगे। मौके पर ओबीसी मोर्चा के जिला महामंत्री बिजेन्द्र कुमार,छावनी परिषद के उपाध्यक्ष आशा देवी,युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष रिक्की वालिया,पार्षद रमेश कुमार,बिजेन्द्र यादव,शशि कुमार,अजित रॉय सहित मंडल के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आज तख्तश्री आएंगे जेपी नड्डा, खाजेकलां में भी कार्यक्रम

पटना सिटी (प्राकि)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सात सितंबर को पटना सिटी आएंगे। वे शनिवार को सुबह 9.30 बजे तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब पहुंचेंगे और दरबार साहिब में मत्था टेकेंगे। इसके बाद वे यहां से खाजेकलां घाट में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेंगे। यहां सदस्यता अभियान की शुरूआत करेंगे। इस दौरान बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, बिहार प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष सह राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ दिलीप जायसवाल, उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय, सासंद रविशंकर प्रसाद और पूर्व मंत्री सह सदस्यता अभियान के संयोजक जीवेश मिश्रा उपस्थित रहेंगे। यह जानकारी पटना महानगर भाजपा के प्रवक्ता प्रदीप काश ने दी।

फायरिंग कर भागा बदमाश, पहुंची पुलिस ने किया देसी कट्टा बरामद

पटना सिटी, अगमकुआं थाना क्षेत्र के भूतनाथ रोड में दो पक्ष के बीच कहासुनी के बीच एक गोली चली। पुलिस ने घटनास्थल पर फेंका हुए एक देसी कट्टा बरामद किया है। घटना शुक्रवार दोपहर की है। पटना जिला के बाढ़ के रहने वाले सन्नी कुमार ने पुलिस को बताया कि वह लघुशंका निवृति के लिए आगे बढ़ रहा था। इसी दौरान उसे निशाना बना कर गोली चलाई गई। गोली की आवाज सुन कर लोगों ने आरोपी को पकड़ लिया था, लेकिन वह पुलिस से पहुंचने के पहले ही किसी तरह सेवहां से फरार हो गया। पुलिस ने घटनास्थल से एक देसी कट्टा बरामद किया है। थानाध्यक्ष संतोष कुमार सिंह ने बताया कि आपसी विवाद में कहासुनी हुई है। गोली नहीं चली है। बाढ निवासी सन्नी के बयान पर इसी थाना क्षेत्र के रहने वाले रवि कुमार के खिलाफ नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। पुलिस ने घटनास्थल से कट्टा बरामद किया है। पुलिस कांड दर्ज कर मामले की छानबीन कर रही है।

स्वास्थ्य केंद्रों में हर महीने औसतन 11 हजार से अधिक पहुंच रहे हैं मरीज : नीतीश

बोलें- 2005 से पहले स्वास्थ्य व्यवस्था की हालत खराब थी, अब सुविधाएं बढ़ी

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि हमलोग शुरू से ही स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार में लगे हुये हैं। जब वर्ष 2005 में हमलोग सरकार में आए तो उस समय स्वास्थ्य व्यवस्था की हालत खराब थी, सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की कमी थी। अस्पतालों में दवा एवं अन्य सुविधाएँ भी नहीं थी। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में तो इलाज के लिए प्रतिमाह मात्र 39 मरीज ही आते थे यानी प्रतिदिन 1 या 2 मरीज आते थे। वर्ष 2006 से अस्पतालों में मरीजों को मुफ्त दवा देने की शुरूआत की गयी जिसे शुभारंभ के लिए तत्कालीन उप-राष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत पटना आये थे। साथ ही डॉक्टरों की बहाली की गयी और अस्पतालों में डॉक्टरों की उपस्थिति सुनिश्चित करवाई गयी और मुफ्त स्वास्थ्य जाँच एवं एम्बुलेंस की सुविधा दी गई। अब सुविधाएँ काफी अच्छी हो गयी है जिससे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में हर महीने औसतन 11 हजार से अधिक मरीज पहुंच रहे हैं। मुख्यमंत्री ने उक्त बातें शुक्रवार को इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान परिसर में नवनिर्मित क्षेत्रीय चक्षु संस्थान के उद्घाटन के मौके पर कही।

मेडिकल कॉलेज की संख्या 6 से बढ़कर 11 हो गयी :

मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले राज्य में केवल 6 सरकारी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल थे, इसकी कमी के कारण यहाँ के छात्र मेडिकल कॉलेज की पढ़ाई करने राज्य के बाहर जाया करते थे और डॉक्टर की कमी होने के कारण यहाँ के लोग इलाज के लिए भी राज्य के बाहर जाते थे इसलिए सरकार ने राज्य में नये मेडिकल कॉलेजों का निर्माण कराया जिससे अब मेडिकल कॉलेज की संख्या 6 से बढ़कर 11 हो गयी है। इसके अतिरिक्त 15 और नये मेडिकल कॉलेज का निर्माण किया जा रहा है। 8 मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के निर्माण में केन्द्र सरकार का सहयोग मिल रहा है। इसके अलावे 9 जिलों में मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल बनाने का प्रस्ताव है। पटना मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल को 5 हजार 462 बेड की क्षमता वाले आधुनिक विश्वस्तरीय मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल बनाया जा रहा है। पुराने सभी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में बेड की संख्या भी बढ़ायी जा रही है। इसके अतिरिक्त नालन्दा मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, पटना, दरभंगा मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, दरभंगा, श्रीकृष्ण मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, मुजफ्फरपुर, जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, भागलपुर तथा अनुग्रह नारायण मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, गया को भी 2500 बेड के मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के रूप में विकसित किया जा रहा है। कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रकाशित बुकलेट तथा हिंदी में प्रकाशित मेडिकल से संबंधित विभिन्न पुस्तकों का मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री सहित मंच पर उपस्थित अन्य अतिथियों ने लोकार्पण किया।

ये रहें मौजूद :

साथ ही केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री एवं मुख्यमंत्री ने रिमोट के माध्यम से चिकित्सा महाविद्यालय ऑनलाइन शिक्षा का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डे, जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी, राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ दिलीप कुमार जायसवाल, सांसद रविशंकर प्रसाद, विधायक संजीव चौरसिया, विधान पार्षद नवल किशोर यादव, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, स्वास्थ्य विभाग के सचिव संजय कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ बिन्दे प्रसाद, उपनिदेशक डॉ विभूति प्रसन्न सिन्हा, अधीक्षक डॉ मनीष मंडल सहित अन्य वरीय अधिकारीगण, स्वास्थ्य विभाग के पदाधिकारीगण तथा इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के चिकित्सकगण एवं छात्रगण उपस्थित थे जबकि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रम स्थल से जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारीगण जुड़े हुए थे।

महाप्रबंधक की अध्यक्षता में एसजेवीएन एवं पूर्व मध्य रेल के अधिकारियों के मध्य एक उच्चस्तरीय बैठक का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर। पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह की अध्यक्षता में आज मुख्यालय में एक उच्चस्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में पूर्व मध्य रेल मुख्यालय के उच्चाधिकारी एवं एसजेवीएन लिमिटेड के अधिकारीगण उपस्थित थे। बैठक में चौसा के पास निमार्णाधीन थर्मल पावर प्लांट को कोयले की आपूर्ति हेतु रेल कनेक्टिविटी प्रदान करने एवं जमीन अधिग्रहण से जुड़े मुद्दे पर विस्तृत चर्चा की गयी। प्रथम चरण में थर्मल पावर प्लांट को कोयले की आपूर्ति हेतु चौसा स्टेशन पर एक गुड्स शेड विकसित किया जा रहा है। विदित हो कि एसजेवीएन लिमिटेड विद्युत मंत्रालय के नियंत्रणाधीन एक नवरत्न सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। यह कंपनी बिहार के बक्सर जिला के चौसा के पास थर्मल पावर प्लांट की स्थापना कर रही है।

निर्जला व्रत रह अखंड सौभाग्य की कामना

पटना सिटी, हरतालिका तीज शुक्रवार को महिलाओं ने निर्जला उपवास रह कर मनाया। अखंड सौभाग्य की कामना करते हुए भगवान शिव, महागौरी पार्वती और प्रथम पूज्य श्री गणेश की पूजा-अर्चना की। इसको लेकर शिव मंदिरों से लेकर घर तक में सामूहिक पूजा का भी आयोजन किया गया। प्रति महिलाओं ने नए परिधान पहन कर श्रृंगार किया और जेवर भी धारण की इसके बाद फल मेवा मिष्ठान आदि से बाबा भोले शंकर मां गोरा पार्वती और प्रथम पूज्य श्री गणेश की पूजा अर्चना की इस दौरान पुरोहितों ने भी पूजा करने के साथ ही तीज की कथा कहीं और आरती उतारी। कल सुबह महिलाएं व्रत का पारण करेंगी।

अगमकुआं स्थित टीबीडीसी में 28.34 करोड़ की लागत से बनेगा चार मंजिला भवन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अगमकुआं स्थित बिहार यक्ष्मा केंद्र जिला कार्यालय में 28.34 करोड़ की लागत से चार मंजिला भवन का निर्माण किया जाएगा। इसके लिए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा और स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने आईजीआईएमएस से ही शुक्रवार को शिलान्यास किया। इस दौरान टीबीडीसी परिसर में आयोजित सादे समारोह में राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ बीके मिश्रा, स्वास्थ्य विभाग के अपर निदेशक डॉ रेणु सिंह, सहायक राज्य कार्यक्रम पदाधिकारीव एनएमसीएच के प्रशासी पदाधिकारी डॉ मुकुल कुमार सिंह ने नारियल फोड़कर और शिलापट से पर्दा हटा कर कार्य का शिलान्यास किया। इस दौरान राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ डीके मिश्रा एवं अपर निदेशक डॉ रेणु सिंह ने बताया कि नए भवन के भूतल पर जिला लक्ष्मण केंद्र, पहली मंजिल पर राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी यक्ष्मा एवं अपर निदेशक टीबीडीसी, स्टेट टेक्निकल सपोर्ट यूनिट, विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं अन्य का अपना कार्यालय संचालित होगा। दूसरी मंजिल पर राज्य स्तरीय प्रशिक्षण के लिए कर्णांकित है। इसमें चार प्रशिक्षण कक्ष, एक सभागार तथा योग कक्ष आदि होगा। तीसरी मंजिल पर इंटरमीडिएट रेफरेंस लेबोरेट्री एवं अन्य संबंधित कक्ष स्थापित होगा। भवन का न्यू एयर बोर्न इंफेक्शन कंट्रोल गाइड लाइंस के अनुरूप बिहार चिकित्सा सेवाएं एवं आधारभूत संरचना निगम लिमिटेड के द्वारा निर्माण किया जाएगा। यक्ष्मा प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण केंद्र के पदाधिकारी एवं कर्मी इस दौरान उत्साहित हैं। आयोजित समारोह में राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉक्टर बीके मिश्रा, अपर निदेशक डॉक्टर रेणु सिंह, सहायक राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉक्टर मुकुल कुमार सिंह, वरीय चिकित्सा पदाधिकारी टीबीडीसी डॉ रविशंकर, डॉ आनंद कुमार, आईसीसी आफिसर बुसरा अजीम, विश्व स्वास्थ्य संगठन के कंसल्टेंट डॉ गौरव, डॉ रणवीर चौधरी, बीएमएससीएल सजित मांझी आदि उपस्थित थे।

44 सैंपल की जांच में 17 डेंगू मरीज मिले, 10 भर्ती

पटनासिटी (प्राकि)। एनएमसीएच के माइक्रोबायोलॉजी विभाग में डेंगू के 44 सैंपल की जांच शुक्रवार को की गई। इमें 17 डेंगू संक्रमित मरीज मिले। माइक्रोबायोलॉजी विभाग विभागाध्यक्ष डॉप्रो संजय कुमार ने बताया कि आलजमगंज के 30 वर्ष की महिला व 24 वर्षीय युवक, पटना सदर के 22, 25 व 22 वर्षीय युवक, सुल्तानगंज के 23 वर्षीय युवक, फतुहा की 30 वर्ष की महिला, कुम्हरार में 14 वर्ष का किशोर, 40 वर्ष का युवक, पांच वर्ष का बच्चा, 22, 18, 21 वर्ष का युवक, 41 वर्ष की महिला, आठ वर्ष की बच्ची, नालंदा की 17 वर्षीया बालिका और राघोपुर वैशाली के 25 वर्षीय युवक संक्रमित है। अस्पताल के अधीक्षक डॉप्रो बिनोद कुमार सिंह ने बताया कि अस्पताल में डेंगू के दस मरीज भर्ती हैं। अधीक्षक ने बताया कि अस्पताल में 55 बेड डेंगू मरीजों के लिए आरक्षित किया गया है। संक्रमित मरीज ओपीडी में इलाज कराने आए थे, तभी उनकी जांच कराई गई।

मां पिता के प्रेरणा से गरीब एवं असहाय लोगों की मदद करता हूं: आलोक आजाद

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। महज 10 वर्ष की उम्र से ही समाजहित का कार्य कर रहे युवा सामाजिक कार्यकर्ता आलोक आजाद ने अपना 40वां जन्मदिन असहाय,गरीब एवं जरूरतमंद लोगों को पटना के गांधी मैदान तथा सोनपुर हरिहर नाथ मंदिर के आसपास में भोजन करा कर मनाया। साथी परिषद् के अध्यक्ष तथा सामाजिक कार्यकर्ता आलोक आजाद हमेशा की तरह इस वर्ष भी अपना जन्मदिन सोनपुर के दक्षिणेश्वर काली मंदिर में दर्शन कर जरूरतमंद लोगों को भोजन खिला कर मनाया। आलोक आजाद ने कहा कि हर वर्ष जन्मदिन के अवसर पर जरूरतमंदों को खाना खिलाता हूं और मंदिर में जा कर पूजा करता हूं, तभी आगे का काम करता हूं। उन्होंने कहा कि गरीबों को खाना खिलाने से खुशियां दोगुनी होती है और आगे भी प्रयास रहेगा कि जन्मदिन के दिन ही नहीं बल्कि बाकी दिन में भी जरूरतमंदों को जितना मदद हो सके कर सकूं। इस दौरान आलोक आजाद ने कहा कि उन्होंने बचपन से ही माँ-बाप के आदर्श पर चलना सीखा है। माँ-बाप ने हमेशा गरीब और असहाय लोगों की मदद करने के लिए प्रेरित किया है। उनके आशीर्वाद से आज मैने अपना जन्मदिन उन गरीब लोगों के साथ मनाया है। आलोक आजाद ने कहा कि जरूरतमंदों की मदद और भूखे लोगों को भोजन उपलब्ध कराने में जो सुकून मिलता है, वह और कहीं नहीं मिल सकता। उन्होंने कहा कि मेरा भी सपना है कि इन लोगों का भी जन्मदिन इसी तरह मनाया जायेगा जैसा की सभी लोग अपने परिवार के साथ मनाते हैं। आलोक आजाद ने कहा कि साथी परिषद् से जल्द ही ऐसे युवाओं को जोड़ा जायेगा जिनकी सोच गरीबों की मदद करने की हो। आलोक आजाद ने कहा कि अगर हर इंसान किसी एक भूखे को रोज भोजन उपलब्ध कराने का संकल्प ले तो हमारे देश में कोई भी भूखा नहीं सोएगा।

ट्रक ने पीछे से मारा धक्का सिक्योरिटी गार्ड की हुई मौत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

आलमगंज थाना क्षेत्र के महात्मा गांधी सेतु के नीचे गायघाट पिलर संख्या 6 के पास सिक्योरिटी गार्ड का जवान ड्यूटी कर रहा था। गुरुवार और शुक्रवार की मध्य रात्रि नए सेतु का गंगा नदी पर निर्माण कर रहे कंपनी के ट्रक मिक्सर के चालक के द्वारा लापरवाही से जानबूझ कर वाहन को उक्त सिक्योरिटी गार्ड गंगा मांझी पर चढ़ा देने का आरोप लगाया गया है। यातायात थाना (बाइपास) के थाना प्रभारी ने बताया कि मृतक गंगा मांझी के भाई सागर पासवान के द्वारा लिखित में मामला दर्ज कराया गया है। दिए गए आवेदन में कहा गया है कि वह छपरा के नया गांव थाना क्षेत्र के ग्राम शोभापुर पोस्ट डुमरी बुजुर्ग का रहने वाला सागर पासवान है। उसका छोटा भाई गंगा मांझी पिता राम प्रसाद मांझी एसआईएस कंपनी हाजीपुर में सिक्योरिटी गार्ड के पद पर पदस्थापित था। पांच सितंबर की शाम 7.36 पर वह सेतु के नीचे गायघाट पिलर नंबर 6 के पास ड्यूटी कर रहा था। देर रात करीब 1.33 पर उसे (सागर) को दूरभाष के द्वारा एक अन्य संतोष रजक के द्वारा सूचित किया गया कि 38 साल के गंगा मांझी को एसपी सिंगला कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड का ट्रक मिक्सर संख्या यूपी 85एक्स 9992 के चालक मुन्ना कुमार के द्वारा तेजी एवं लापरवाही से ट्रक को जानबूझ कर पीछे से गंगा मांझी के शरीर पर चढ़ा दिया गया। इससे उसकी मौत घटनास्थल पर ही हो गई। इसके बाद सन्नी कुमार एसआईएस गार्ड द्वारा दुर्घटना की सूचना दी गई। घटनास्थल पर पुलिस के द्वारा शव को पोस्टमार्टम करने के लिए नालंदा मेडिकल कॉलेज भेजा गया। यहां पहुंचे गंगा के बड़े भाई साग पासवान ने अपने भाई के शव की पहचान की। उसने कहा कि उसका छोटा भाई अनुसूचित जाति और गरीब परिवार से आता है। कंपनी की गाड़ी को पुलिस जब्त कर थाना ले गई है। चालक मुन्ना कुमार के अलावा एसआईएस से जुड़े तीन अन्य को नामजद कराते हुए सबों के विरुद्ध कानून की विभिन्न धारा बी एक्ट श्रम विभाग के विभिन्न द्वारा, एमवीआई एक्ट, श्रम विभाग के विभिन्न धारा के तहत मामला दर्ज किए जाने का अनुरोध किया गया है।

सप्ताह में कर्मियों की समस्या सुनेंगे कार्यपालक पदा.

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना नगर निगम के पटना सिटी और अजीमाबाद अंचल के कार्यपालक पदाधिकारी के साथ पटना नगर निगम कर्मचारी संयुक्त समन्वय समिति के प्रतिनिधियों की माहवारी बैठक हुई। पटना सिटी अंचल के कार्यपालक पदाधिकारी ने कहा कि शेष कर्मियों के ईपीएफ, पीएफ और केवाईसी पर कार्रवाई जारी है। कुछ कर्मियों के कागजी दस्तावेज मे त्रुटि की वजह से केवाईसी में समस्या आ रही है। उन्हें दस्तावेज में सुधार करवाने को कहा गया है। सेवानिवृत एवं अन्य कर्मियों की समस्या से अवगत होने के लिए सप्ताह में एक दिन निर्धारित किया जाए। कार्यपालक पदाधिकारी ने इस पर अपनी सहमति दे दी। पेंटर मुन्नू कुमार सिटी अंचल को भविष्य निधि अग्रिम भुगतान के लिए सुरेश कुमार प्रभारी सहायक की खोज की गई, मगर वह बिना सूचना के अनुपस्थित पाए गए। उन्हें स्पष्टीकरण करते हुए मुन्नू कुमार को भविष्य निधि अग्रिम भुगतान अविलंब करने को निर्देशित किया गया। रात्रि पाली के दैनिक सफाई पर्यवेक्षक से वार्ड में कार्य लेने के लिए नगर आयुक्त से निर्देश प्राप्त कर उचित कार्रवाई की जाएगी।अजीमाबाद के कार्यपालक पदाधिकारी ने बताया कि ईपीएफ एवं ईएसआई अद्यतन है। केवाईसी मात्र छह कर्मियों का कागजी दस्तावेज में त्रुटि के कारण से नहीं हो पाया है। उन्हें दस्तावेज में सुधार कर अविलंब जमा करने को निर्देशित किया गया है। रात्रि सफाई पर्यवेक्षक से सफाई पर्यवेक्षक का दिन में कार्य लिये जाने की बात पर उन्होंने भी नगर आयुक्त से निर्देश प्राप्त कर उचित कार्रवाई करने की बात कही। कार्यपालक पदाधिकारी ने समन्वय समिति के प्रतिनिधियों से कहा कि कुछ दैनिक कर्मी काम पर नहीं आते हैं। तब समन्वय समिति के प्रवक्ता जितेन्द्र कुमार ने उनसे कहा की पार्षद और सफाई निरीक्षकों की मिलीभगत से कर्मी से आधा वेतन लेकर उन्हें बैठे रहने को कहा जाता है। इसलिए इस मामले में संज्ञान लेते हुए उचित कार्रवाई की जाए। भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई में समन्वय समिति हमेशा उनके साथ खड़ा है। आज के वार्ता में समन्वय समिति की ओर से संयोजक मंगल पासवान, प्रवक्ता जितेन्द्र कुमार, कोषाध्यक्ष नीरज कुमार वर्मा, धर्मवीर कुमार, केशो कुमार, गौतम कुमार और नगर निगम प्रशासन की ओर से सिटी अंचल में कार्यपालक पदाधिकारी आशुतोष कुमार, प्रशाखा पदाधिकारी उमेश कुमार, सहायक गौरव कुमार एवं अजीमाबाद अंचल में कार्यपालक पदाधिकारी श्रेया कश्यप, प्रभारी सहायक सुनील कुमार, सुबोध कुमार एवं कार्यपालक सहायक प्रेम कुमार चौधरी मौजूद थे।

तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष 15 की बैठक को करना चाह रहे विफल

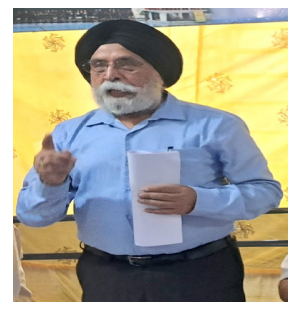

- महासचिव के खिलाफ लाया गया अविश्वास प्रस्ताव व 13 की बैठक को बताया गलत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के चुनाव को लेकर बुलाई गई सुलह बैठक का पटना साहिब पंथ सेवक जत्था ने स्वागत किया है। मगर संस्था के अध्यक्ष चरणजीत सिंह ने कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही के द्वारा 15 सितंबर की बैठक को असफल करने के प्रयासों की निंदा की है। जत्था ने तख्तश्री कमेटी के पदाधिकारी और सदस्यों के बीच चल रही कानूनी कार्यवाही में पटना उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश पर संतोष जताया है। कोर्ट का यह आदेश कमेटी के चुनाव और अन्य मुद्दों को हल करने के लिए 15 सितंबर को अदालत द्वारा बुलाई गई बैठक को लेकर है, जिसे एक महत्वपूर्ण कदम माना गया है। मीडिया को जारी बयान में जत्था के अध्यक्ष चरणजीत सिंह ने कहा कि यथा सावधानीपूर्वक अदालत द्वारा वर्तमान गरतिरोध को समाप्त करने के लिए सहयोगात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी के संविधान और इसके पवित्र स्थान की पवित्रता को बनाए रखना कितना जरूरी है, जो कि दशमेश पिता गुरु गोविंद सिंह जी के जन्म स्थान के रूप में यह महत्वपूर्ण है। अदालत ने निर्देश दिया है कि प्रबंधक कमेटी की बैठक बुलाई जाए, जिसमें चुनाव, मतदाता सूची, वित्तीय स्थिति और कमेटी के समग्र प्रबंधन से संबंधित सभी लंबित मुद्दों को सुलझाया जा सकेगा। दरअसल संगत को उम्मीद थी कि यह महत्वपूर्ण बैठक कमेटी के अंदर व्याप्त मतभेदों को सुलझाने में मददगार होगी, लेकिन कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही के द्वारा पटना के जिला जज को भेजे गए हालिया पत्र से स्पष्ट है कि वह इस बैठक को टालने और अदालत के आदेशों का उल्लंघन करने का प्रयास कर रहे हैं। जत्था के अध्यक्ष चरणजीत सिंह ने यह भी चिंता जताई कि अध्यक्ष और महासचिव के बीच चल रहा संघर्ष तख्तश्री पटना साहिब की पवित्रता को कमजोर कर रहा है और संगत में अविश्वास और विवाद पैदा कर रहा है। पटना साहिब पंथ सेवक जत्था ने कहा कि महासचिव के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के 1957 के संविधान और उपनियमों के खिलाफ है। अध्यक्ष के द्वारा जिला जज को लिखे गए पत्र और उनके गुट द्वारा महासचिव को लिखे गए पत्र से यह स्पष्ट है कि अध्यक्ष और उनके समर्थक बैठक को सफल करने और अपने अवैध एजेंडा को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। चरणजीत सिंह ने सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि यह अवरोधक प्रयास स्पष्ट रूप से 28 अगस्त, 24 के पटना उच्च न्यायालय के आदेश का उल्लंघन है। दरअसल दुनिया भर के श्रद्धालु इस महत्वपूर्ण चर्चा का इंतजार कर रहे हैं। पंथ सेवक जत्था भी सभी संबंधित पक्षों से एकता और सहयोग की भावना को अपनाने का आग्रह करता है। साथ ही उम्मीद करता है कि बैठक गुरु गोविंद सिंह जी की विरासत का सम्मान करते हुए तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब की पवित्रता को बरकरार रखते हुए समाधान की ओर ले जाएगी।

दिल्ली से अपने घर पहुंची अधेड़ महिला ने फांसी लगा की खुदकुशी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

खाजेकलां थाना क्षेत्र के लोन की चौराहा में एक वृद्ध महिला ने पंखे से जुड़कर अपने ही लीला समाप्त कर ली। वहीं डीएसपी डॉक्टर गौरव कुमार के नेतृत्व में गुरु गोविंद सिंह सदर अस्पताल के पास गेसिंग कूपन अड्डे पर छापेमारी की गई। नून के चौराहा मुहल्ला में रहने वाली 61 वर्षीय वृद्ध महिला ने पंखा के हूक से झूल कर जान दे दी है। सूचना पाकर मौके पर पहुंची खाजेकलां थाना की पुसिल ने मृतका के लाश का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए नालंदा मेडिकल कॉलेज भेजा। थानाध्यक्ष प्रभात रंजन सक्सेना ने बताया कि महिला यहां अकेली रहती थी। वह एक दिन पूर्व ही दिल्ली से लौटी थी। इसके बाद वह पादरी की हवेली स्थित बिजली ऑफिस गई थी शाम में भी वह लोगों से मिली। खुदकुशी की वजह स्पष्ट नहीं है। परिजनों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस मामले में जांच पड़ताल कर रही है। महिला का भतीजा का कहना था कि बड़ी मां बराबर यहां आकर अकेले रहा करती थी। उनके बेटा-बेटी नौकरी करने के कारण बिहार से बाहर रहते हैं। वह अक्सर अपने बेटा-बेटी के पास भी रहती है और कभी-कभी यहां घर पर भी आकर रहती हैं। मगर उन्होंने आत्मघाती कदम क्यों उठाया, यह उन लोगों की समझ से परे है। इधर श्री गुरु गोविंद सिंह अस्पताल के पास हमाम खत्री लेन में डीएसपी-2 डॉ गौरव कुमार ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी की। गेसिंग कूपन के अड्डा पर छापेमारी कर पांच को गिरफ्तार किया गया है। डीएसपी ने बताया कि छापेमारी के दौरान अमित कुमार, विकास कुमार, राम प्रवेश पोद्दार और सतीश कुमार को गिरफ्तार किया गया है। इन लोगों के पास से दो हजार 70 रुपए, एक कैलकुलेटर, चार नोटबुक, बाइक, मोबाइल समेत अन्य सामान बरामद किया गया है। छापेमारी दल में अपर थानाध्यक्ष शुभेंद्र कुमार, सअनि अनिल प्रसाद सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल थे। दूसरी ओर शनिवार को गणेश पूजा अनुष्ठान होगा. सिद्धि विनायक भगवान श्री गणेश की स्थापित होने वाली प्रतिमा को लेकर कुछ एक जगहों पर तैयारी भी की गयी है. जमुनी राय के कुआं सार्वजनिक संगत में गणपति स्थापित की जा रही है. चौक सनातन धर्म सभा भवन में राजा विघ्नहर्ता सेवा समिति श्री गणेश महोत्सव का आयोजन किया गया है।

शनिवार को प्राण प्रतिष्ठा के साथ गणेश पुराण कथा होगा. जो दस सितंबर तक चलेगा, 11 सितंबर को पूजन हवन व विसजर्न शोभायात्र निकाली जायेगी. रविवार को ऋषि पंचमी का त्योहार मनाया जायेगा। तख्त साहिब में सजा विशेष दीवान पटना सिटी.तख्त श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में सिख पंथ के चौथे गुरु रामदास जी के ज्योतिजोत पर्व को लेकर विशेष दीवान सजा. बीते दो दिनों से चल रहे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के खंड पाठ की समाप्ति के बाद सजे विशेष दीवान में कथा वाचक ज्ञानी गगनदीप सिंह ने कथा की. रागी जत्थो में भाई बिक्रम सिंह,भाई नविंदर सिंह, हरभजन सिंह,ज्ञान सिंह, कविंदर सिंह और भाई जोगिदर सिंह ने शबद कीर्तन की. विशेष दीवान का समापन जत्थेदार ज्ञानी बलदेव सिंह और अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी ज्ञानी दिलीप सिंह ने विश्व शांति व भाईचारे के लिए अरदास कर किया. आयोजन में प्रबंधक कमेटी के पदधारक व संगत शामिल हुई। जिक्र ए शहदान ए कर्बला का आयोजन पटना सिटी. मीर गुलाबी बाग स्थित मुबारक अली साहिब के इमामबाड़ा में शुक्रवार को जिक्र ए शहदाने कर्बला व शब्बेदारी का आयोजन संयोजक सैयद नासिर अली और तनवीरूल हसन तन्नू की देखरेख में हुई।

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से की मुलाकात

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जनता दल यूनाइटेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से 1 अणे मार्ग स्थित मुख्यमंत्री आवास पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने की शिष्टाचार मुलाकात

पटना। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा शुक्रवार को अपने दो दिवसीय बिहार के दौरे पर पटना पहुंचने पर मुख्यमंत्री आवास पहुंचे, जहां उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मुलाकात की। इस दौरान भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल, उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और मंत्री विजय कुमार चौधरी भी मौजूद रहे। जेपी नड्डा पटना हवाई अड्डा पर उतरने के बाद भाजपा नेताओं से मिले और इसके बाद सीधे मुख्यमंत्री आवास पहुंचे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भाजपा अध्यक्ष को शॉल देकर सम्मानित किया। जेपी नड्डा के केंद्रीय मंत्री बनने के बाद यह उनकी पहली बिहार यात्रा है। अपने दो दिनों के प्रवास के दौरान वे कई अस्पतालों का उद्घाटन करेंगे। केंद्रीय मंत्री के बिहार आगमन को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। जेपी नड्डा शुक्रवार को आईजीआईएमएस परिसर में स्थित नवनिर्मित क्षेत्रीय चक्षु संस्थान का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वे भागलपुर जाएंगे, जहां दो सौ बेड के सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक का उद्घाटन करेंगे। वहां से वे गया जाएंगे, जहां मगध मेडिकल कॉलेज में सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल का उद्घाटन करेंगे। दो दिवसीय बिहार दौरे के दूसरे दिन सात सितंबर शनिवार को जेपी नड्डा पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल जाएंगे। वह पीएमसीएच में बन रहे नए ब्लॉक को देखेंगे।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का पटना पहुंचने पर भव्य स्वागत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा का बिहार आगमन पर प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिलीप जायसवाल ने किया स्वागत, मौके पर उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी रहें मौजूद।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे पी नड्डा बिहार की अपनी दो दिवसीय यात्रा के क्रम में शुक्रवार को पटना पहुंचे। पटना पहुँचने पर भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। भाजपा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष जे. पी. नड्डा को बिहार की धरती पर पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा, स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय, मंत्री केदार गुप्ता, नितिन नवीन, नीरज कुमार बबलू, साँसद रविशंकर प्रसाद, विधायक संजीव चौरसिया, प्रदेश मीडिया प्रभारी मनोज शर्मा सहित प्रदेश कमिटी के कई अधिकारी भी हवाई अड्डा पहुंचे और राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत किया। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे पी नड्डा अपने दो दिवसीय बिहार प्रवास के पहले ही दिन स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रदेश को कई उपहार दिए। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. जायसवाल ने कहा कि केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री सह भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे. पी. नड्डा ने आज बिहार को कई बड़ी सौगात दी। उन्होंने कहा कि आईजीआईएमएस के प्रांगण में 188 करोड़ की लागत से बने क्षेत्रीय चक्षु संस्थान का उदघाटन कर राज्य की जनता की सेवा में समर्पित किया तथा स्वास्थ्य विभाग के 850 करोड़ की अनेक परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि इसके अलावा भागलपुर के जएलएनएमसीएच और गया के मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल में सुपरस्पेशलिटी भवन का उदघाटन किया। उन्होंने बताया कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री द्वारा दिये गए सौगात से न केवल बिहार बल्कि पड़ोसी राज्यों सहित नेपाल के लोगों को भी लाभ होगा। पटना हवाई अड्डा पहुंचने पर श्री नड्डा का पार्टी के कार्यकताओं ने जोरदार स्वागत किया। पटना हवाई अड्डा पर राष्ट्रीय अध्यक्ष के पहुंचने के पहले ही बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता जुटे हुए थे। अध्यक्ष को खुद के बीच पाकर कार्यकताओं का उत्साह बढ़ गया और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष के स्वागत में जमकर नारे लगाए। कार्यकर्ता पार्टी का झंडा, बड़े-बड़े बैनर लेकर हवाई अड्डा पहुंचे थे। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा इसके बाद मुख्यमंत्री आवास गए जहां उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मुलाकात की।

वक्फ में दखलअंदाजी किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं : गिरिराज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

वक्फ बिल 2024 के विरोध में बरेली के मौलाना तौकीर रजा के मुसलमानों के सड़क पर उतरकर दिल्ली का घेराव करने के बयान को केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने निंदा की है। केंद्रीय ने कहा कि यह हमारा दुर्भाग्य रहा है। यदि आजादी के समय सभी मुसलमानों को पाकिस्तान भेज दिया गया होता तो तौकीर रजा पैदा ही नहीं होते। उन्होंने कहा, इन लोगों ने जानबूझकर तुष्टिकरण के लिए भारत में नफरत फैलाने का काम किया है। तौकीर रजा ने बहुसंख्यकों को क्या समझ रखा है? वह यह समझते हैं कि हिंदू चूड़ी पहन कर बैठा है। वह आरएसएस को गाली देते हैं, यह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। बता दें कि वक्फ संशोधन विधेयक 2024 को लेकर उत्तर प्रदेश में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, जमीयत उलेमा-ए-हिन्द सहित कई संगठनों ने इसका विरोध किया था। बरेली के मौलाना तौकीर रजा ने कहा था कि हमारी बातें नहीं मानी गईं तो अब मुसलमान सड़कों पर उतरेंगे और दिल्ली का घेराव करेंगे। साथ ही इससे पहले उन्होंने कहा था कि वक्फ की जमीन पर किसने कब्जा किया है, सरकार को ये बताना चाहिए। उन्होंने कहा, हिंदुस्तान के सबसे अमीर आदमी ने वक्फ की संपत्ति पर कब्जा किया है। वक्फ की संपत्ति पर कई सरकारी बिल्डिंग बनी हुई हैं। अगर सरकार को हमसे हमदर्दी है तो सबसे पहले उन्हें इन संपत्तियों को रिलीज करना चाहिए। ये जो बिल लाने की कोशिश की जा रही है, हम उसे जमीन के हिसाब से नहीं बल्कि शरीयत के हिसाब से देख रहे हैं। वक्फ में दखलअंदाजी को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसके लिए हम किसी हद तक जा सकते हैं। उन्होंने दिल्ली में होने वाली मीटिंग के बारे में बताया, हमारी अगली मीटिंग दिल्ली में होगी, लेकिन सरकार चाहे तो उन्हें गिरफ्तार कर सकती है। सरकार को ये समझ लेना चाहिए कि हम अपने लोगों को कंट्रोल में रखते हैं। इसके बावजूद हम लोग हर तरह के जुल्म को बर्दाश्त कर रहे हैं।

जनता अब राजद के झांसे में नहीं आने वाली : हिमराज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जद यू प्रदेश प्रवक्ता हिमराज राम ने मीडिया में बयान जारी कर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि दलितों, पिछड़ों और अति पिछड़ों को हमेशा ठगने वाली आरजेडी को जब चुनाव नजदीक आता है तब उनके कल्याण की बात याद आती है। उन्होंने कहा कि महज वोट बैंक की राजनीति के चलते आज तेजस्वी यादव कुशवाहा और यादवों को एकजुट होने की बात कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि लालू प्रसाद यादव के शासनकाल में बिहार में दलितों, पिछड़ों और अति पिछड़ा समुदाय के लोगों ने अपनी उपेक्षा का दंश झेला है और ये समुदाय उस दंश को कभी भी भूल नहीं सकता है। उन्होंने कहा कि भारत रत्न कपूरी ठाकुर ने कभी भी बिहार में जाति की राजनीति नहीं की। उन्होंने कहा कि रामलखन सिंह यादव और दारोगा प्रसाद राय ने कभी भी जाति की राजनीति को बढ़ावा नहीं दिया बल्कि इनलोगों ने हमेशा से जमात की बात की। तेजस्वी यादव पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि जाति की राजनीति से समाज का आपसी प्रेम और भाईचारा कमजोर होता है जो कि आरजेडी नेता को समझ में नहीं आएगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कुशवाहा समाज के लिए जितना काम किया है उतना किसी ने आज तक नहीं किया। पार्टी प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि राज्य का कुशवाहा समाज आरजेडी के राजनीतिक चरित्र को बखूबी जानता है और वो उनके झांसे में आने वाला नहीं है।

समाज का हर वर्ग नीतीश कुमार के साथ : सुमित

राजद का कुशवाहा-यादव समीकरण विफल साबित होगा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री सुमित कुमार सिंह ने कहा कि राजद का कुशवाहा-यादव समीकरण केवल राजनीतिक दिखावा के लिए है और यह पूरी तरह से विफल साबित होगा। समाज का हर वर्ग मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ मजबूती से खड़ा है, बिहार की जनता राजद के झांसे में कभी नहीं आएगी। मंत्री शुक्रवार को जनता दलयू प्रदेश कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम के बाद मीडिया से मुखातिब हुए। इस दौरान सुमित कुमार सिंह ने कहा कि नीतीश सरकार ने संगठित अपराध पर पूर्णविराम लगाने का काम किया। वर्तमान में जो भी आपराधिक घटनाएं बिहार में घटित हो रही है, उसके जड़ में केवल आपसी विवाद है। साथ ही उन्होंने कहा कि आपराधिक घटनाओं पर उपदेश देने से पहले नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव को अपने माता-पिता के शासनकाल की तुलना नीतीश सरकार के शासनकाल से करनी चाहिए, सब दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। इससे पहले मंत्री ने प्रदेश के विभिन्न जिलों से पहुंचे आमजनों की समस्याओं को सुनकर उनके त्वरित समाधान हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस मौके पर पार्टी के वरीय नेता प्रो नवीन आर्या चंद्रवंशी एवं प्रदेश महासचिव अरुण कुशवाहा मौजूद रहे।

कई लोगों ने राजद की सदस्यता ग्रहण की : एजाज

पटना। प्रदेश राजद के प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद , नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव के समक्ष, पूर्व मंत्री आलोक कुमार मेहता, प्रदेश प्रधान महासचिव रणविजय साहू, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव एवं प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद की उपस्थिति में विभिन्न दलों के नेताओं ने अपने सैकड़ो समर्थकों के अमर शहीद जगदेव प्रसाद के शहादत दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय जनता दल की सदस्यता ग्रहण की। जिनमें बैजनाथ मेहता आईआरएस, सह पूर्व प्रत्याशी सुपौल लोक सभा, बबलू कुशवाहा पूर्व जिला पार्षद औरंगाबाद, कृष्णा कुशवाहा पूर्व जिला अध्यक्ष ,मधुबनी रालोमो, राजीव कुशवाहा पूर्व जिला अध्यक्ष ,रालोमो दरभंगा, नागेंद्र कुशवाहा ,जिला पार्षद सह पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, रालोमो श्रमिक प्रकोष्ठ, अमन कुशवाहा, प्रदेश उपाध्यक्ष युवा जनता दल यू, विजय महतो पूर्व अध्यक्ष नगर परिषद, सासाराम भाजपा सहित सैकड़ों की संख्या में लोगों ने सदस्यता ग्रहण की। इस अवसर पर सदस्यता रसीद देकर और राजद का प्रतीक चिन्ह देकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर लालू प्रसाद ने कहा कि सामाजिक न्याय पर विश्वास करने वाले सभी लोग राष्ट्रीय जनता दल के साथ रहेंगे। क्योंकि राष्ट्रीय जनता दल ने हमेशा गरीबों शोषितों वंचितों के अधिकार और सम्मान को आगे बढ़ने का काम किया और गले लगा कर गरीबों को अधिकार दिलाया है।

दो गुटों में जमकर मारपीट, एक महिला की मौत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। पटना जिले के धनरुआ थानाक्षेत्र के छोटकी मटिया पर गांव में दो गुटों के बीच मारपीट के दौरान एक महिला की मौत का मामला सामने आया है। मौत के बाद गांव में तनाव का महौल है। जानकारी के मुताबिक में नाली में पानी गिरने की बात को लेकर चंदन प्रसाद और छोटन प्रसाद के बीच विवाद शुरू हो गया। दोनों के बीच बात इतनी बढ़ गई कि मारपीट और पथराव शुरू हो गया। गांव के लोगों ने बताया कि दोनों पड़ोसी हैं। पथराव की घटना में देव कुवर देवी को गहरी चोट लगी, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। जबकि उनका बेटा छोटन प्रसाद पत्थर लगने से घायल हो गया। ग्रामीणों ने इसकी सूचना धनरुआ थाने को दी। सूचना मिलते ही धनरुआ थाना प्रभारी दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे और घटनास्थल से दो महिलाओं को हिरासत में लिया। घटना के बाद पुलिस ने मृतका देव कुवर देवी के शव को पोस्टमार्टम के लिए अनुमंडल अस्पताल भेज दिया। जबकि घायल छोटन प्रसाद को इलाज के लिए नजदीक के नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया है। घटना के बाद गांव में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। तनाव की स्थिति को देखते हुए पुलिस गांव में कैंप कर रही है। ग्रामीणों ने बताया कि गांव के चंदन प्रसाद और छोटन प्रसाद के बीच नाली में पानी गिरने को लेकर कई दिनों से विवाद चल आ रहा है। इसी बीच शुक्रवार को दोनों के बीच कहासुनी हुई और विवाद इतना बढ़ गया कि देखते ही देखते दोनों के बीच पथराव शुरू हो गया। घटना के बाद छोटन प्रसाद ने आरोप लगाया कि चंदन प्रसाद द्वारा अपने गुंडो को बुलाकर गोली चलाई गई है। जबकि पुलिस ने गोली चलाई जाने की बात की पुष्टि नहीं की है।

बांकीपुर मुख्य डाकघर ने शिक्षकों को विशेष धन्यवाद पत्र सौंपा

पटना। शिक्षक दिवस के अवसर पर बांकीपुर मुख्य डाकघर के डाकियों ने एक विशेष और सम्मानजनक पहल करते हुए शहर के शिक्षकों को उनके शिक्षा क्षेत्र में किए गए अतुलनीय योगदान के लिए धन्यवाद पत्र सौंपे। इस अनूठी पहल के तहत, डाक विभाग ने शिक्षकों की भूमिका और उनके महत्व को रेखांकित करते हुए यह संदेश दिया कि वे समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। यह पहल डाक विभाग द्वारा केवल एक सामान्य डाक सेवा तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसे एक सामाजिक कर्तव्य के रूप में देखा गया। डाकियों ने अपने नियमित कार्यों से आगे बढ़कर समाज में सकारात्मकता और कृतज्ञता का संदेश फैलाया। उन्होंने शिक्षकों को पत्र सौंपने के साथ-साथ उनके प्रति सम्मान और आदरभाव भी प्रकट किया, जिससे यह प्रतीत होता है कि शिक्षकों का कार्य केवल शिक्षा देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज के स्तंभ हैं, जो नई पीढ़ी को सशक्त बनाते हैं। इस पहल की विशेषता यह रही कि डाकियों ने स्वयं शिक्षकों तक जाकर उन्हें धन्यवाद पत्र दिए, जिसमें शिक्षकों के समर्पण और कड़ी मेहनत की सराहना की गई। इस सम्मान पत्र के माध्यम से, बांकीपुर मुख्य डाकघर ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षकों का योगदान अमूल्य है, और उनके बिना समाज की प्रगति संभव नहीं है। यह एक अनूठी और प्रेरणादायक पहल थी, जिसमें शिक्षकों के प्रति न केवल सम्मान प्रकट किया गया बल्कि यह भी दशार्या गया कि डाक विभाग भी समाज निर्माण में अपनी भूमिका निभा रहा है। डाक विभाग का संदेशःडाक विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, शिक्षक दिवस के अवसर पर यह पहल डाक विभाग की ओर से शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का एक छोटा सा प्रयास है। हम सभी जानते हैं कि शिक्षक ही समाज के वास्तविक निमार्ता होते हैं, जिनकी शिक्षा और मार्गदर्शन से देश की नींव मजबूत होती है। इस पहल के माध्यम से, हमने अपने डाक कर्मचारियों को यह अवसर दिया कि वे व्यक्तिगत रूप से जाकर शिक्षकों को धन्यवाद कह सकें।

सारण पुलिस और लोक अभियोजक का डीजीपी ने किया सम्मान

पटना। डीजीपी आलोक राज ने सारण के एसपी कुमार आशीष और उनकी टीम को सम्मानित किया है। उन्हें यह सम्मान नए आपराधिक कानून के अन्तर्गत त्वरित कार्रवाई करते हुए तिहरे हत्याकांड के अभियुक्तों को सजा दिलाने के लिए दिया गया है। तिहरे हत्याकांड के अभियुक्तों को नए कानून बीएनएस के तहत आजीवन कारावास और 25-25 हजार अर्थदंड की सजा सुनाई गई है। नए आपराधिक कानून के अन्तर्गत यह राज्य में गंभीर कांडो में पहली सजा है। एसपी सहित इनको भी किया गया सम्मानित : इस हत्याकांड के अनुसंधान और ट्रॉयल (विचारण) से जुड़े सभी व्यक्तियों के द्वारा सराहनीय कार्य किया गया है, जिस कारण इस तरह के जघन्य घटनाओं में त्वरित अनुसंधान एवं विचारण के परिणामस्वरूप 50 दिनों के अन्दर ही अभियुक्तों को सजा दिलायी जा सकी। इस कांड के त्वरित विचारण में सहयोग देने वाले पुलिस, फॉरेंसिक एवं अभियोजन टीम से जुड़े पदाधिकारियों को पुलिस महानिदेशक, बिहार के द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। उन पदाधिकारियों में सारण एसपी डॉ. कुमार आशीष, सारण के व्यवहार न्यायालय में पदस्थापित लोक अभियोजक सुरेन्द्रनाथ सिंह, सारण में पदस्थापित अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सदर-2 राजकुमार, पुलिस कार्यालय में पदस्थापित प्रभारी अभियोजन कोषांग राकेश कुमार सिंह, सारण जिले के रसुलपुर थाना में पदस्थापित अनुसंधानकर्ता पुलिस अवर निरीक्षक रविन्द्र कुमार और सारण में पदस्थापित फॉरेंसिक विशेषज्ञ रत्ना राभा शामिल हैं।

सूबे में बेहतर होगी पुलिसिंग : डीजीपी आलोक राज ने टीम को सम्मानित करते हुए कहा कि नए अपराधिक कानून के लागू होने के पूर्व ही दो बार प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया है। हमारे जितने भी अधिकारी हैं वह निरंतर इसपर अभियान चला रहे हैं। राज्य में अनुसंधान कताओं की संख्या में बढ़ोतरी की गई है। राज्य में 8000 अनुसंधान कर्ता हैं। इनकी संख्या बढ़ाई जाएगी ताकि केस का निष्पादन सही से हो सके। डीजीपी आलोक राज ने कहा कि बेहतर पुलिसिंग कैसे हो इस बात पर बल दिया जायेगा।

लालटेन लगा हरा गमछा राजद के कुशासन का कलंक है : अरविन्द

पटना। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अरविन्द कुमार सिंह ने कहा है कि तेजस्वी यादव अपनी आभार यात्रा में लालटेन छाप हरा गमछा अपने समर्थकों को शरीर पर रखने से माना कर रहे हैं। क्योंकि वें उस लालटेन छाप हरे गमछे को राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू यादव के जंगलराज वाले शासनकाल के भ्रष्टाचार का नरसंहारों, अपहरण उद्योग और अपराधियों का प्रतीक समझ रहे हैं। इसीलिए वें अपने आभार यात्रा से लालटेन छाप हरे गमछे पर पाबंदी लगाकर जनता का ध्यान राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष के जंगलराज वाले शासनकाल से हटाने का प्रयास कर रहे हैं। जनता को टोपी पहनाकर दिगभ्रमित करने के चक्कर में हैं लेकिन बिहार की जनता अब टोपी पहनने वाली नहीं हैं। बल्कि राजद को टोपी पहनाने वाली हैं और राजद को परमानेंट विदाई का मार्ग प्रशस्त करने वालीं हैं। श्री अरविन्द ने कहा कि बिहार की जनता सब जानती है की कैसे राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपना पूरा सार्वजनिक जीवन केवल अपने परिवार के लोगों को राजनीति में स्थापित करने एवं अपनी राजनीतिक आर्थिक स्वार्थ को साधने में लगा दिया।

हर लेखक, पत्रकार और वक्ता को शब्द की साधना करनी चाहिए

- साहित्य सम्मेलन में आयोजित हुई कथा-कार्यशाला
- शिल्प, भाषा, कथा-विधान पर हुई चर्चा

पटना। हर एक लेखक, पत्रकार और वक्ता-व्याख्याता को अवश्य ही शब्द-साधना करनी चाहिए। शब्द-साधना से तात्पर्य यह है कि वह, प्रयोग में आने वाले प्रत्येक शब्द का, उसके लिंग सहित अर्थ जाने और अपना शब्द-सामर्थ्य बढ़ाए। एक कुशल लेखक की उच्च प्राथमिकता उसकी भाषा ही होती है। तभी घनीभूत भाव को अर्थ मिलते हैं। यह बातें शुक्रवार को, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में विगत 1 सितम्बर से आयोजित हिन्दी पखवारा-सह-पुस्तक चौदस मेला के छठे दिन आयोजित हुई कथा-कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए, सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने कही। उन्होंने कहा कि कथा में रोचकता और उद्देश्य की गम्भीरता आवश्यक है। कहानी का एक उद्देश्य पाठकों के मन का रंजन तो है, पर यही एक मात्र उद्देश्य नहीं, अपितु जिससे लोक-मंगल हो, समाज में गुणात्मक परिवर्तन हो, पाठकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े, यह है। अस्तु एक कवि-कथाकार को समाज के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता में रखकर रचना करनी चाहिए।

कार्यशाला में एक आचार्य की भूमिका में उपस्थित भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी और वरिष्ठ साहित्यकार डा उपेंद्रनाथ पाण्डेय ने कथा-सृजन के विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा करते हुए, शिल्प, शैली, कथानक, कथोपकथन, भाषा, कथारंभ से लेकर, उसके विकास, पात्रों के चरित्र-चित्रण, उत्कर्ष और अंत तक की लेखन-विधि से प्रतिभागियों को परिचित कराया। सम्मेलन की उपाध्यक्ष डा मधु वर्मा, डा भावना शेखर, ई अशोक कुमार, बाँके बिहारी साव, डा शालिनी पाण्डेय, प्रेमलता सिंह, डा नागेश्वर प्रसाद यादव, डा आर प्रवेश, पंकज प्रियम, ई अवध बिहारी सिंह, नन्दन कुमार मीत, मयंक मानस, अल्पना कुमारी, डौली कुमारी, महफूज आलम, रवि रंजन, डा चंद्रशेखर आजाद, डा एम वायी अराफात, विनय चंद्र, श्री बाबू आदि साहित्यकारों ने प्रतिभागिता दी।

पुस्तक 'साक्ष्य' का विमोचन

पटना। फणीश्वर नाथ रेणु 100 साल बाद पुस्तक साक्ष्य का विमोचन करते हुए मुख्यमंत्री। इस अवसर पर बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह, उपसभापति राम वचन राय, बिहार विधान परिषद के सदस्य संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी एवं ललन सर्राफ उपस्थित थे।

पूर्व मध्य रेल
निविदा सूचना
सं. जीएस–डी.एन.आर.–एस.एण्ड टी–2024–06
दानापुर, दि. 05.09.2024
भारत संघ के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से वरीय मंडल संकेत एवं दूर संचार अभियंता/गति शक्ति पूर्व मध्य रेलवे, दानापुर मंडल, निम्नलिखित कार्य हेतु रेलवे के वेबसाइट पर निविदाएं आमंत्रित करते हैं :–
1. कार्य का नाम एवं स्थान : पूर्व मध्य रेल के दानापुर मंडल के अंतर्गत पटना के हार्डिंग पार्क क्षेत्र में 05 टर्मिनल प्लेटफार्म पर दूर संचार सुविधाओं के प्रावधान हेतु कार्य।, 2. अनुमानित लागत : रूपये 21131139.65, 3. बयाना राशि: रूपये 255700.00, 4. निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि एवं समय : दिनांक 30.09.2024 को 15:00 बजे तक। 5. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक 30.09.2024 को 15:30 बजे। 6. वेबसाइट विवरण: www.ireps.gov.in, 7. कार्यालय का पता जहाँ से निविदा संबंधी विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है : वरीय मंडल संकेत एवं दूर संचार अभियंता /गति शक्ति पूर्व मध्य रेलवे, दानापुर।
नोट : विवाद की स्थिति में अंग्रेजी नोटिस मान्य होगा। यदि जरूरत हुई तो शुद्धि पत्र उपरोक्त वेब साईट पर निविदा खुलने की तिथि से 14 दिन पहले अपलोड कर दिया जाएगा।
वरीय मंडल संकेत एवं दूर संचार अभियंता/गति शक्ति पूर्व मध्य रेल, दानापुर
पीआर/01075/डीएनआरजीएस/एसएण्डटी/टी/24–25/36

पूर्व मध्य रेल
खुली ई-निविदा सूचना
(निर्माण विभाग)
सूचना सं.: पूमरे–मुप्रअ–नि–उ–निविदा–13–24–25
भारत के राष्ट्रपति के तरफ से निम्न कार्य हेतु ई–निविदा आमंत्रित की जाती है।
1. कार्य का नाम: हाजीपुर–सगौली नई बीजी रेल लाईन परियोजन के अन्तर्गत मधुबनी यार्ड (छोड़कर) से सगौली (वाई कनेक्शन सहित) के निर्माण में मशीन कश्ड स्टोन ट्रैक गिट्टी (पाकुड़/साहेबगंज रेंज) की आपूर्ति एवं ट्रैक लिंकिंग कार्य, स्टैकिंग करना और पी.वे सामग्री के परिवहन और अन्य विविध कार्य। 2. कार्य का लगभग मूल्य: रू. 88,23,62,350.23 3. निविदा हेतु अग्रधन राशि जमा: रू. 45,61,800.00 4. निविदा बंद होने की तिथि एवं समय: 25.09.2024 चौदह तीस बजे। बेबसाइट का विवरण, नोटिस बोर्ड जहाँ पर निविदा का पूर्ण विवरण देखा जा सकता है तथा कार्यालय का पता जहाँ पर निविदा प्रपत्र खरीदा जा सकता है इत्यादि।
उपरोक्त ई–निविदा के ई–निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण जानकारी वेबसाइटhttp://www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होगें एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण/उत्तर/ पूमरे /महेन्द्रुघाट, पटना के कार्यालय में देखा जा सकता है।
द्रष्टव्य: निविदा सूचना में पाए गए किसी भी विसंगति विवरण के मामले में अंग्रेजी संस्करण ही मान्य होगा। प्रत्याशित निविदाकारों को यह सलाह दी जाती है कि इस ई–निविदा के लिए जारी कोई भी परिवर्तन/शुद्धिपत्र की ओर ध्यान देने के लिए वे निविदा बंद होने की अंतिम तिथि से कम से कम पन्द्रह दिन पहले वेबसाईट http://www.ireps.gov.in का अवलोकन करें।
कृते मुख्य प्रशासनिक अधिकारी /निर्माण पूर्व मध्य रेलवे, महेन्द्रघाट, पटना।
पीआर/01066/सीओएनएन/ईएनजीजी/टी/24–25/44

कार्यक्रम का उद्घाटन आईसीसीआर की रीजनल डायरेक्टर स्वधा रिजवी द्वारा किया गया

लोक गायिका नीतू कुमार नवगीत की होराइजन कार्यक्रम में शानदार प्रस्तुति

- गायन में शामिल गंगा-स्तुति, सोहर, कजरी, सूफी, झूमर और भिखारी ठाकुर की रचनाएं

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्थानीय प्रेमचंद रंगशाला में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और बिहार सरकार के कला, संस्कृति और युवा विभाग के सौजन्य से आयोजित होराइजन सीरीज कार्यक्रम में प्रसिद्ध लोक गायिका नीतू कुमार नवगीत ने शानदार प्रस्तुति दी। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की पटना रिजनल डायरेक्टर और भारतीय विदेश सेवा की अधिकारी स्वधा रिजवी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के रिजनल डायरेक्टर स्वधा रिजवी, चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान पटना के डॉ. राणा सिंह, इंदिरा आईवीएफ के बिहार हेड डॉ. दयानिधि, प्रसिद्ध साहित्यकार एवं शिक्षाविद् भावना शेखर और अंतरराष्ट्रीय हिंदी परिषद के संस्थापक सह अध्यक्ष बीरेंद्र कुमार यादव की गरिमामयी उपस्थिति रही। नीतू कुमार नवगीत ने लगभग दो घंटे तक अपने गायन से समां बांध दिया। उनके गायन में गंगा-स्तुति, सोहर, कजरी, सूफी, झूमर जैसे विविध गीतों के साथ भिखारी ठाकुर की रचनाओं का मधुर प्रस्तुतीकरण शामिल था। उन्होंने बिहार की सांस्कृतिक गरिमा का महिमा का बखान करते हुए मांगीला हम वरदान हे गंगा मइया, माँगिला हम वरदान, संगीत गुरु देव एवं प्रख्यात लोक कलाकार भरत सिंह द्वारा रचित है बहुत पारंपरिक लोक गीत जो झूमर की शैली में है, कउने देसे गइले बलमुआ कथिया लइहैं न, पारंपरिक विवाह गीत, सिया जी बहिनिया हमार हो. राम लगिहैं पहुँनवा, अगे माई हरदी हरदिया दूभ पातर ना.., भिखारी ठाकुर की रचना. जतसारी का गीत डगरिया जोहत ना, सूफी गीत छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलायके,कजरा मोहब्बत वाला अँखियों में ऐसा डाला, कोयल बिनु बगिया ना सोभे राजा, पनिया के जहाज से,मेरे रस्के कमर स्वच्छता अभियान गीत, कैसे खेले जइबु सावन में बदरिया जैसे गीत गाकर श्रोताओं को भाव विभोर किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रेरणा प्रताप ने किया, और साज़िंदों ने उत्कृष्ट वादन से प्रस्तुति को संजीवनी प्रदान की। बिहार के अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध नाल वादक अर्जुन चौधरी, कैसियो वादक संजय कुमार मिश्रा, बाँसुरी वादक सरफुद्दीन तथा श्याम किशोर पांडे ने पद पर लोक गायिका का मानवर्धन किया। कोरस के कलाकार दिव्या श्री, अर्पिता और चंदन ने भी शानदार प्रस्तुति दी। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और कला, संस्कृति और युवा विभाग का आभार व्यक्त करते हुए नीतू कुमार नवगीत ने प्रेमचंद रंगशाला में पधारे सभी आगंतुकों को भी धन्यवाद अर्पित किया।

सरकार हर मोर्चों पर विफल साबित हुई है : अरुण यादव

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता अरुण कुमार यादव ने कहा कि विकास और सुशासन की ढिंढोरा पीटने वाले एनडीए के लोग बताएं 17 वर्षों से बिहार में एनडीए की सरकार है। पिछले 10 वर्षों से केंद्र में एनडीए की सरकार है। फिर देश में सबसे अधिक गरीबी बिहार में, सबसे अधिक बेरोजगारी बिहार में, देश में सबसे ज्यादा आपराधिक घटनाएं बिहार में, तीन करोड़ के आसपास पलायन बिहार से, महंगाई के मामले में देश भर में बिहार सबसे टॉप पर हैं आखिर इसके लिए जिम्मेदार कौन है ? राजद प्रवक्ता ने कहा कि नीति आयोग की रिपोर्ट ने बिहार की गरीबी, महंगाई, भुखमरी और शिक्षा व्यवस्था की पोल खोलकर दी है। नीतीश सरकार का हर मोर्चों पर विफल साबित हुई है। दो दशक के शासनकाल में नीतीश सरकार ने बिहार को गर्त में पहुंचा दिया है। एनडीए के लोगों का चाल, चरित्र और चेहरा उजागर हो गया है। बिहार की जनता एनडीए के झांसे में अब नहीं आने वाली है।

भवन निर्माण विभाग
बिहार सरकार
कार्यपालक अभियंता, पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय
अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं०–34 वर्ष 2024–25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, पाटलीपुत्र भवन प्रमंडल, पटना।
2. परिमाण–विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय : दिनांक–17.09.2024 को 12.00 बजे अपराह्न तक।
2. निविदा प्राप्ति कि तिथि एवं समय : दिनांक–18.09.2024 को 3:00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक–18.09.2024 को 3.30 बजे अपराह्न से।
4. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : (क) अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, दक्षिण बिहार अंचल, भ०नि०वि०, पटना। (ख) कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना। (ग) संबंधित भवन अवर प्रमंडल का कार्यालय, पटना।
5. निविदा प्राप्ति का स्थान : क्रमांक (5) पर वर्णित स्थान पर।
6. कार्य का विवरणी

क्रम स०	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य (ओ०ग्रास)	कार्य समप्ति की अवधि
1	2	3	4	5	6
1	Renovation of 96 Officer's flat No-B3/38 at Nehru Path, Patna for the year 2024-25.	1280300.00	26000.00	2500.00	1 month

कार्यपालक अभियंता
पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना
PR. No. 007660 (BCD) 2024-25
निविदा की विस्तृत जानकारी www.state.bihar.gov.in/prdbihar पर देंखे।
नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार।

संक्षिप्त खबरें

जिले में अबतक 11435 किसानों को मिला डीजल अनुदान में 1.86 करोड

मुजफ्फरपुर।अल्पवृष्टि के कारण किसानों को सिंचाई सुविधा के लिए मुजफ्फरपुर जिला में 11435 किसानों को 1 करोड़ 86 लाख 54 हजार 32.38 रूपया डीजल अनुदान के रूप में भुगतान किया गया है।जिला में कुल 24 हजार 876 आवेदन प्राप्त हुए हैं। आवेदन प्राप्त करने में मुजफ्फरपुर जिला का राज्य स्तर पर दूसरा स्थान है।डीजल अनुदान प्राप्त करने के लिए किसानों को डीबीटी पोर्टल पर आनलाइन आवेदन करना हैं जिसमें किसान को अपनी जमीन का रसीद,एलपीसी अपलोड करना होता है। मुजफ्फरपुर जिला में अधिकाधिक किसानों को डीजल अनुदान से लाभान्वित करने हेतु जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन ने जिला कृषि पदाधिकारी को किसान सलाहका और कृषि समन्वयक के माध्यम से गांव एवं पंचायत में किसानों को जागरूक एवं प्रेरित करने का निर्देश दिया है। इस कार्य का प्रखंड स्तर से सतत एवं प्रभावी मॉनिटरिंग करने का निर्देश सभी प्रखंड कृषि पदाधिकारी को दिया गया है। जिलाधिकारी ने जिला कृषि पदाधिकारी को सभी प्रखंड कृषि पदाधिकारी से समन्वय स्थापित करते हुए कार्य में तेजी लाने तथा ससमय भुगतान का सख्त निर्देश दिया है।ज्ञातव्य हो कि एक किसान को 8 एकड़ सिंचाई के लिए डीजल अनुदान देय है।एक एकड़ पटवन के लिए 10 लीटर डीजल लगता है। एक लीटर डीजल पर 75 रू सब्सिडी है अर्थात प्रति एकड़ 750 अनुदान है।

कल्पतरू ने किया प्रमाण पत्र वितरण समारोह

मुजफ्फरपुर।कल्पतरू प्रोजेक्ट्स इंटरनेशनल लिमिटेड के तत्वावधान में राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान,मुजफ्फरपुर पश्चिमी , ठीकहां (मोतीपुर) में आयोजित दो माह का प्रशिक्षण शिविर के सफल प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में प्राचार्य मनीष कुमार ने कहा कि युवाओं में इस तरह के प्रशिक्षण का बड़ा महत्व है। कल्पतरू को उन्होंने हर संभव मदद का आश्वासन दिया।कल्पतरू के बिहार प्रमुख राजेश कुमार चौधरी ने बताया कि सभी सफल प्रशिक्षणार्थियों को कल्पतरू की ओर से रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएंगे। श्री चौधरी ने प्राचार्य को ह्व जिंदगी मिली है मुस्कुराइए ह्व पुस्तक भेट की। समारोह का संचालन रामचंद्र शाही संग्रहालय के सलाहकार समिति सदस्य शंभु मोहन प्रसाद ने किया। इस अवसर पर मो. इश्तेयाक , अभिजीत कुमार , अमन कुमार, कुंदन कुमार , विक्रम कुमार ठाकुर, अविनाश कुमार , शांतनु कुमार , प्रभाकर कुमार सिंह , दीपक कुमार , रोहित कुमार , नीरज कुमार सहित कई लोग मौजूद थे।

पूर्व उपप्रमुख की माता के निधन पर शोक

विभूतिपुर/समस्तीपुर पूर्व उपप्रमुख सह वर्तमान पंचायत समिति सदस्य कल्याणपुर उत्तर वार्ड 05 निवासी रामनाथ राय की माता रेशमा देवी का निधन गुरुवार की रात्रि हो गई।वे 90 वर्ष की थी। उनके निधन की खबर सुनते ही सुनील सिंह, रंजीत पोद्दार, चन्द्र भूषण सिंह,पूर्व मुखिया रणवीर कुमार विनोद, सतीश झा आदि वहां पहुंचकर मृतक के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित किया एवं शोकाकुल परिवार को सांत्वना दिया। बता दें कि मृतक के दो पुत्र नरेश राय एवं रामनाथ राय तथा तीन पुत्री सुशीला देवी ,विमल देवी, कोशल्या देवी हैं। नाती पोते से भरा-पूरा परिवार छोड़कर वे स्वर्ग सिधार गई।उनका अंतिम संस्कार बेगूसराय के सिमरिया घाट में किया गया। मुखाग्नि छोटे पुत्र रामनाथ राय ने दी है।

मुखिया संघ की बैठक में लिया गया कई निर्णय

विभूतिपुर/समस्तीपुर प्रखंड परिसर स्थित पंचायत सरकार भवन के प्रांगण में मुखिया संघ की बैठक संघ के अध्यक्ष रंजीत कुमार महतो की अध्यक्षता में संपन्न हुए। बैठक में कई निर्णय लिया गया।जिसमें बताया गया कि षष्ठम वित्त राज्य आयोग योजना क्रियान्वयन करने में भेन्डर पर भुगतान का आदेश से शत-प्रतिशत योजनाओं के संचालन में भेन्डर द्वारा मेटेरियल देने में उदासीनता के कारण कार्य बाधित होता है। जिसे पूर्व की भांति भुगतान करने की आदेश दिया जाए। बिचौलिया के द्वारा शौचालय अनुदान की राशि पर रोक लगाने, मुखिया द्वारा जमा किए गए फार्म पर भुगतान करने, स्वच्छता कर्मी की लंबित 15 माह की मानदेय भुगतान कराने, नल जल योजना में बहाल अनुरक्षक का बकाया भुगतान कराने व सुचारू रूप से संचालित कराने का निर्णय लिया। बैठक में मुखिया मनोज यादव, राजकुमार महतो,संजय निराला , दिलीप कुमार,सुशील कुमार चौधरी, मुखिया प्रतिनिधि दिगंबर चौधरी, रणधीर कुमार राय, गणेश कुमार,अशोक कुमार, देवेन्द्र प्रसाद सिंह, जगदीश कुमार जग्गा आदि उपस्थित हुए।

सरकारी विद्यालयों में 83 करोड़ की लागत से 2789 योजनाओं को डीएम ने दी स्वीकृति

प्रातः किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों को भौतिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के निमित्त 83 करोड़ की 2789 योजनाओं के क्रियान्वयन की मंजूरी जिला पदाधिकारी श्री सुब्रत कुमार सेन द्वारा दी गई है ताकि सरकारी विद्यालयों में बच्चों के लिए न केवल शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाया जा सके बल्कि उसके अनुरूप विद्यालय की भौतिक सुविधाओं में भी उन्नयन हो। इसके लिए जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन ने समाहरणालय में बैठक कर कार्यकारी एजेंसी के रूप में कार्य करनेवाले भवन निर्माण विभाग, विद्युत विभाग एवं स्थानीय क्षेत्र अभियंत्रण संगठन के कार्यपालक अभियंता को निर्धारित मानक एवं गुणवत्ता के अनुरूप सभी कार्य शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया। उन्होंने संबंधित विद्यालयों के लिए स्वीकृत योजनाओं का प्राक्कलन तैयार कर जल्द निविदा आमंत्रित करने तथा कार्य में तेजी लाते हुए ससमय कार्य पूरा करने को कहा। विदित हो कि प्राथमिक, मध्य, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में आवश्यकता के अनुरूप नया शौचालय का निर्माण, शौचालयों की मरम्मती, नये किचेन शेड का निर्माण, किचेन शेड की मरम्मती, विद्यालयों में विद्युतीकरण, पेयजल की सुविधा, अतिरिक्त वर्ग कक्ष का निर्माण होना है। इसके लिए विद्यालय में असैनिक कार्य की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कार्य का चयन तथा प्राथमिकता का निर्धारण किया गया है। बैठक में जिलाधिकारी ने उप विकास आयुक्त एवं शिक्षा विभाग के नोडल पदाधिकारी सह डीआरडीए डायरेक्टर को संबंधित अधिकारियों के साथ साप्ताहिक समीक्षा बैठक करते हुए नियमित निगरानी करने एवं जल्द कार्य पूरा कराने को कहा। इसके लिए जिलाधिकारी की अध्यक्षता में एक समिति का भी गठन किया गया है जिसमें जिला शिक्षा पदाधिकारी सदस्य सचिव, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी प्रारंभिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान सदस्य तथा बिहार शिक्षा परियोजना के कार्यपालक अभियंता सदस्य के रूप में नामित हैं।समाहरणालय परिसर में 10 करोड़ की लागत से ऑडिटोरियम के निर्माण की भी जिलाधिकारी ने मंजूरी दी है। 500 व्यक्तियों के बैठने की क्षमता का ऑडिटोरियम आवश्यक सुविधाओं से लैस होगा जिसमें सेंट्रलाइज्ड एसी , फर्नीचर, गार्ड रूम, गेट तथा परिसर के सौंदर्यीकरण का ध्यान रखा गया है।इसके लिए जिलाधिकारी ने भवन निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता को प्राक्कलन के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण कार्य शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया।बैठक में उप विकास आयुक्त श्रेष्ठ अनुपम डीआरडीए डायरेक्टर संजय कुमार जिला शिक्षा पदाधिकारी अजय कुमार सिंह तथा भवन निर्माण विभाग, बिजली विभाग एवं स्थानीय क्षेत्र अभियंत्रण संगठन के कार्यपालक अभियंता उपस्थित थे।

नदियों की पंचायत कार्यक्रम 11 सितम्बर को होग आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। बूढ़ी गंडक नदी के सिकंदरपुर तट पर स्थित बापू पुस्तकालय पर नदियों की पंचायत कार्यक्रम आयोजित किया गया है। यह जानकारी बिहार शोध संवाद के मीडिया सलाहकार सुनील सरला ने दी है। उन्होंने कहा है कि बागमती, गण्डक, बूढ़ी गंडक ,लखनदेई, अधवारा समूह की नदियों, करेह, नून आदि नदियां अपनी जालनुमा उपस्थिति से जन जीवन को सदियों से सुखमय बनाती रही हैं। लेकिन विकास के नाम पर बन रहे तटबन्धों,बराजों, फैक्ट्रियों, मिलोंऔर थर्मलपावर स्टेशनों से बह रहे जहरीले, काले, पीले जहरीले कचरे के कारण हमारी जीवनदायिनी नदियों का दम घुट रहा है। नदियों पर जीनेवाले नाविक, मल्लाह, किसान, सब्जी उगानेवाले, हैं भैंस पाकर सुख से जीने वाले करोड़ों स्त्री पुरुषों आ जीविका और सांस्कृतिक जीवन बड़े गम्भीर संकट में है। अब तो गंगा एवम उससे जुडी तमाम नदियों को बडी बडी देशी विदेशी कम्पनियों के हाथ मे सौंपने की शु रु आत हो चुकी है। सों स को बचाने के नाम पर मल्लाहों को नदियों से खदेडने की चाल चली जा रही है। नदियों के किनारे के सौंदर्यीकरण के बहाने किसानों की बेशकीमती जमीनों पर भी लुटेरी कम्पनियों की बुरी नजर है। इन्ही सवालों को लेकर यह नदी पंचायत बुलाई गई है। इन सवालों पर वर्षों से लड़ रहे संगठनों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया गया हैं। यह नदी पंचायत नदी मुक्ति आभियान की शुरूआत मानी जा रही है।

लूटे गये वीडियो कैमरे के साथ शातिर गिरोह के 5 लुटेरे गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।पुलिस ने वीडियो कैमरा लूट मामले में गिरोह के 5 बदमाशों को लूट के कैमरा सेट सहित अन्य सामानों के साथ गिरफ्तार किया है। इसकी जानकारी देते हुए नगर एसपी अवधेश सरोज दीक्षित ने बताया कि बीते 7अगस्त को वादी आकाश कुमार पिता जयराम यादव टलवॉ गडहिया माडीपुर माल थाना मधुबन जिला पूर्वी चम्पारण द्वारा साहेबगंज थाना में समर्पित आवेदन में बताया गया था कि आकाश कुमार गुप्ता नाम का एक व्यक्ति द्वारा फोन कर शादी का सालगिरह पर कैमरा का बुकिंग कराया गया था। उसके दूसरे दिन 9अगस्त को वादी आकाश कुमार अपने साथियों के साथ कैमरा का सेट लेकर चैनपुर के लिए निकला इसी क्रम में अपराधी छोटू कुमार वादी से बार-बार फोन कर पुछ रहा था कहाँ पहुँचा इसी दौरान छोटू कुमार अपने अन्य सहयोगी अपराधकर्मियों के साथ मिलकर सुनसान जगह पर बुलाकर वादी के साथ मारपीट कर कैमरा सेट, मोटरसाईकिल, मोबाईल की छिनतई कर लिया। इस संबंध में साहेबगंज थाना कांड सं0-421/24 दर्ज किया गया। कांड की गंभीरता को देखते हुए वरीय पुलिस अधीक्षक, मुजफ्फरपुर के निर्देशन व अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सरैया के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। उक्त टीम में प्रभारी जिला आसूचना इकाई की टीम एवं थानाध्यक्ष साहेबगंज की टीम को शामिल किया गया। टीम द्वारा घटना में संलिप्त अपराधकर्मी अमन कुमार सिंह ग्राम नगरगाँवा, रजनीश कुमार ग्राम सिघेरवा, . छोटू कुमार ग्राम गणेश सिरिसिया, आकाश उर्फ सत्यम कुमार ग्राम विशुनपुर सभी थाना चकिया, एवं रोहित कुमार ग्राम मिरचईया थाना कल्याणपुर, सभी जिला पूर्वी चम्पारण को छिनतई की गई कैमरा सेट, मोबाईल, मोटरसाईकिल के साथ पिपरा थाना स्थित बखरी ढ़ावा एवं कल्याणपुर, चकिया थाना क्षेत्र से छापामारी कर गिरफ्तार किया गया है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री नवनिर्मित सुपर स्पेशलिटी अस्पताल आज करेंगे लोकार्पण

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रताप नड्डा के आगमन के तैयारी की समीक्षा करते हुए दरभंगा के सांसद गोपाल जी ठाकुर ,राज्यसभा सांसद धर्मशीला गुप्ता ,नगर विधायक संजय सरावगी जिला अध्यक्ष जीवछ सहनी ने संयुक्त रूप से प्रेस को सम्बोधित किया । संबोधित करते हुए कहा करोड़ों मिथिलावासियों के लिए ऐतिहासिक और खुशी का दिन है। डीएमसीएच में सुपर स्पेशियलिटी का शुभारम्भ होगा। उन्होंने कहा कि 7 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र की एनडीए सरकार द्वारा मिथिला के केंद्र दरभंगा में स्वास्थ्य सुविधा के क्षेत्र में ऐतिहासिक सौगात दिया जाएगा। उन्होंने ने कहा कि सात सितंबर को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा मिथिला एवं उत्तर बिहार की बहुप्रतीक्षित दरभंगा एम्स के प्रस्तावित निर्माण स्थल का निरीक्षण भी करेंगे वहीं प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत नवनिर्मित सुपर स्पेशलिटी अस्पताल का लोकार्पण भी करेंगे। सांसद गोपल जी ठाकुर ने कहा कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री के दरभंगा दौरे को लेकर सभी तैयारी पूरी कर ली गई है। पूरा दरभंगा केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री के भव्य स्वागत के लिए तैयार है। इस अवसर पर बिहार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डेय, उप मुख्यमंत्री सहित कई मंत्री, सांसद, विधायक, विधान पार्षद सहित अन्य लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे। सांसद ने कहा कि केंद्रीय मंत्री जे पी नड्डा अपने दरभंगा प्रवास के दौरान पीएमएसएसवाई योजना अंतर्गत डीएमसीएच परिसर में 150 करोड़ की लागत से नवनिर्मित सुपर स्पेशलिटी अस्पताल का लोकार्पण भी करेंगे। इस सुपर स्पेशलिटी अस्पताल के प्रारंभ हो जाने से क्षेत्र के लाखों मरीजों को स्थानीय स्तर पर कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी, आर्थो सहित अन्य सुपर स्पेशलिटी विभाग से जुड़े बीमारियों का इलाज की सुविधा मिल जाएगा।

सीपीआई ने महंगाई को लेकर किया पुतला दहन

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर/समस्तीपुर सीपीआई अंचल परिषद विभूतिपुर ने कमरतोड़ महंगाई के खिलाफ केंद्र की भाजपा सरकार पर हमला करते हुए गुरुवार की देर संध्या खोकसाहा बाजार चौक पर पीएम मोदी का पुतला दहन कर विरोध जताया। उससे पूर्व मणि भूषण की अध्यक्षता में जीबी बैठक हुई। बैठक को संबोधित करते हुए राज्य परिषद सदस्य गजेंद्र चौधरी ने 23 सितंबर को समस्तीपुर समाहर्ता के समक्ष प्रदर्शन में अंचल से भारी संख्या में भाग लेने का आह्वान किया। साथ ही सर्व समिति से निर्णय लिया कि सदस्यता अभियान चला कर 40000 पार्टी कोर्स में जमा करना है। बैठक में अंचल सचिव विनोद कुमार विनय, दहार पासवान, विशेश्वर महतो, रामविलास महतो, रामनंदन महतो, रामप्रीत महतो, सरवन महतो, रामस्वरूप महतो, शंकर दास, अनिल पासवान, रामदेव पासवान, सुनील महतो, राम प्रताप दास, उमेश पासवान, प्रदीप पासवान आदि ने भाग लिया।

अगले 5 दिनों तक मौसम रहेगा शुष्क ,10 एवं 11 को हल्की बारिश की सम्भावना

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। अगले 5 दिनों तक उत्तर बिहार के जिलों में मौसम शुष्क रहने का अनुमान है।इस बीच 10 एवं 11सितम्बर को सभी जिलों में हल्की बारिश हो सकती है।मौसम सम्बंधी यह जानकारी ग्रामीण कृषि मौसम सेवा , डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग ने 7 से11 सितम्बर तक के लिए जारी मध्यावधि मौसम पूवार्नुमान में दी है। मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.5 एवं 25.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 94 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 73 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.9 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 3.4 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.5 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 30.5 एवं दोपहर में 36.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 16.4 मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई। पूवार्नुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 33-36 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 24-28 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। औसतन 5-10 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।किसानों को 15 सितम्बर तक अरहर की बुआई उचॉस जमीन में करने की सलाह दी गई है।।इसके लिए पूसा 9 एवं शरद प्रभेद अनुषंसित है। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फुर, 20 किलोग्राम पोटाष तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। जून-जुलाई में बोयी गई अरहर की फसल में कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहने को कहा गया है।

सीएचसी में, चिकित्सकों का ड्यूटी रोस्टर जारी

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर/समस्तीपुर सीएचसी विभूतिपुर के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अभय शंकर ठाकुर ने चिकित्सकों को ड्यूटी रोस्टर जारी कर दिया है। जारी ड्यूटी रोस्टर के अनुसार सोमवार को सुबह 8:00 बजे से अपराह्न 2:00 बजे तक डॉ रूपम और डॉक्टर ए एस ठाकुर, 2:00 बजे से 8:00 बजे रात्रि तक डॉ पीके शाह, 8:00 बजे रात्रि से 8:00 बजे अगले सुबह तक डॉ राजेश कुमार ड्यूटी करेंगे। मंगलवार को सुबह 8:00 से अपराह्न 2:00 तक डॉ आर्या एवं डॉ ए एस ठाकुर, अपराह्न 2:00 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक डॉ केशव आनंद, रात्रि 8:00 बजे से अगले सुबह 8:00 बजे तक डॉ केशव आनंद एवं डॉ तुशांत, बुधवार को सुबह 8:00 बजे से अपराह्न 2:00 तक डॉ रूपम एवं डॉ ए एस ठाकुर, अपराह्न 2:00 से रात्रि 8:00 बजे तक डॉ तुशांत, रात्रि 8:00 से अगले सुबह 8:00 तक डॉ केशव आनंद, गुरुवार को सुबह 8:00 बजे से अपराह्न 2:00 तक डॉ तुशांत, अपराह्न 2:00 बजे से 8:00 बजे रात्रि तक डॉ अमरनाथ शर्मा, रात्रि 8:00 बजे से अगले सुबह 8:00 तक डॉ राजेश, शुक्रवार को सुबह 8 बजे से अपराह्न 2 बजे डॉ अमरनाथ शर्मा एवं डॉक्टर ए एस ठाकुर, अपराह्न 2:00 से रात्रि 8:00 बजे तक डॉ राजेश, रात्रि 8:00 बजे से अगले सुबह 8:00 तक डॉ पीके शाह, शनिवार को सुबह 8:00 बजे से अपराह्न 2:00 बजे तक डॉ केशव आनंद, अपराह्न 2:00 बजे से 8:00 रात्रि तक डॉ आर्या ,रात्रि 8:00 बजे से अगले सुबह 8:00 बजे तक डॉ तुशांत, रविवार को सुबह 8:00 से अपराह्न 2:00 तक डॉ आर्या, अपराह्न 2:00 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक डॉ राजेश एवं डॉ पीके शाह, रात्रि 8:00 बजे से अगले सुबह 8:00 बजे तक डॉ राजेश एवं डॉ पी के शाह को ड्यूटी पर लगाया गया है। यह ड्यूटी रोस्टर 21 अगस्त से ही प्रभावी माना गया है।

ट्रैक्टर चोर को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर पुलिस ने ट्रेक्टर चोरी मामले में अंतरराज्यीय चोर गिरोह के चार बदमाशों को गिरफ्तार किया है ,पूर्व में माकपा नेता शशिभूषण साह के ट्रेक्टर चोरी मामले का खुलासा कर थाने में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में डीएसपी विप्लव कुमार ने बताया कि जनवरी माह में माकपा नेता शशिभूषण साह का ट्रेक्टर चोरी हो गया था। जयनगर पुलिस ने कांड के खुलासे के लिए स्पेशल टास्कफोर्स का गठन किया था। पुलिस गिरोह के सदस्य एवं ट्रैक्टर का काम करने वाले सहित उसके पार्ट्स की दुकान पर नजर रखकर इस गिरोह के उद्भेदन में का कार्य कर रहे थे तभी जा कर गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस को जानकारी मिला की उक्त कांड में डोरवाड़ निवासी बुद्धी मुखिया शामिल है, जिसे गिरफ्तार कर गहन पूछताछ के उपरांत ट्रेक्टर चोर गिरोह का अंतरराज्यीय कनेक्शन का खुलासा हो पाया। डीएसपी ने बताया कि गिरफ्तार बुद्धी के निशानदेही पर देवधा के मो.नईम अंसारी को भी गिरफ्तार किया गया है। जिसके यहां से चोरी का सोनाटा ट्रेक्टर बरामद हुआ है। डीएसपी ने बताया कि चोर गिरोह ट्रेक्टर चोरी कर उसके पार्ट को काट काट कर कबाड़खाने में बेच ता था। कुछ अच्छे. पार्ट्स दुकानो में भी बेचता था। इस मामले की गंभीरता से जांच की या जा रहा था जिले के विभिन्न जगहो से ट्रैक्टर चोरी संबंधित मामलो का मॉनिटरिंग किया जा रहा है। छानबीन के क्रम में माकपा नेता ट्रैक्टर चोरी मामले में ट्रेक्टर का. कटा हुआ पार्टस बरामद हुआ है। वही एक चोरी का ट्रेक्टर बरामद हुआ है यह लोग विभिन्न जगहो से ट्रैक्टर को चोरी कर उसको काट कर पार्ट बेचने का काम करते है।

अस नगर में पूर्व मंत्री के प्रयास से लगा ट्रांसफार्मर

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।राज्य के पूर्व मंत्री व भाजपा के वरिष्ठ नेता अजीत कुमार ने आज कांटी क्षेत्र के अस नगर गांव में विद्युत विभाग द्वारा लगाए गए 200 सौ के भी ए का ट्रांसफार्मर का फिता काटकर उद्घाटन किया । ट्रांसफार्मर उद्घाटन के उपरांत वर्षों से विद्युत समस्या से जूझ रहे विद्युत उपभोक्ताओं को समस्या से निजात मिल गया है। ट्रांसफार्मर लगने से आम उपभोक्ताओं के साथ-साथ बोरिंग से सिंचाई कार्य करने वाले किसानों को भी काफी राहत मिला है । एग्रीकल्चर कनेक्शन लेने के बावजूद सही ढ़ंग से वोल्टेज व समय पर लाइन उपलब्ध नहीं होन से इस इलाके के विद्युत उपभोक्ता के साथ किसान खासे परेशान थे। इस अवसर पर उपस्थित विद्युत उपभोक्ताओं एवं स्थानीय लोगों को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने कहा की पूर्व में भी मैं कांटी क्षेत्र के हर एक लोगों को सुगम विद्युत सुविधा उपलब्ध कराया था , मै आगे भी जहां कहीं भी विद्युत का समस्या होगा हम हर हालत में समस्या का निदान कराएंगे। उन्होंने कहा कि आप विद्युत विपत्र समय पर जमा करें , विद्युत कंपनी को सहयोग करें हर इलाके में समय से विद्युत सुविधा मिले इसके लिए प्रयास करुंगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व मुखिया मोहम्मद अब्दुल्ला ने किया। इस मौके पर सामाजिक कार्यकर्ता देवेंद्र कुमार त्रिवेदी, रामनरेश सिंह , पप्पू तिवारी , अमन कुमार , मोहम्मद कासिम, हाफिज ओजैर , जितेंद्र सिंह , गुड्डू कुमार यादव, जितेंद्र सिंह नवल सिंह , धर्मेंद्र तिवारी, अविनाश कुमार तिवारी , सूरज कुमार, कौशल किशोर सिंह आदि ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया।

शारदा कम्प्यूटर में हर्षोल्लास के साथ शिक्षक दिवस समारोह के रूप में मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर में डॉक्टर सर्वपल्ली राधा कृष्णन के जन्म दिवस के उपलक्ष्य पर शारदा कंप्यूटर जयनगर में टीचर डे धूम धाम से मनाया गया। बच्चो ने बहुत ही खुशी से इस दिन को मनाया। इस अवसर पर शारदा कंप्यूटर जयनगर के शिक्षक संतोष सर ने कहा कि अध्यापक ही होता है जो बच्चें के मनोभाव को पहचानता है। मां बाप से कही ज्यादा अध्यापक बच्चों को समझते है। क्योंकि दिन के आधे हिस्से में से वही उनके साथ अधिक रहते है। एक अध्यापक देश का निमार्ता होता है। अध्यापक एक आम बच्चें को कल का शिक्षक डाक्टर वकील इंजीनियर आदि बनाता है। उनके दिशा निदेशों पर ही चल कर बच्चें अपनी मंजिल को पा सकते है बिना गुरु के कोई भी अपनी मंजिल तक नही पहुंच सकता है। वैसे तो शिक्षक दिवस सभी देशो में अलग अलग तिथि को मनाया जाता है, लेकिन भारत में पांच सितंबर डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन के अवसर पर मनाया जाता है। जो एक शिक्षक होते हुए भारत के प्रथम उप राष्ट्रपति एवं द्वितीय राष्ट्रपति भी थे। भारत में बहुत सारे महान लोग है पर डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिन पर ही क्यों मनाया जाता है, क्योंकि वे बच्चो से बहुत प्यार करते थे।छात्रों के भविष्य को उज्जवल बनाने आगे चल के अपने लक्ष्य को प्राप्त करना ही संस्थान का उद्देश्य है। मौजूद छात्र छात्राओ ने गुरु शिष्य के परंपरा को निभाने और एक अच्छे शिक्षक की तरह छात्रों ने प्रण किया कि वो अपने आस पास रहने वाले अशिक्षित भटके हुए छात्रो को सही राह दिखाने एवं एक अच्छे इंसान बनने की प्रेरणा दे। बच्चो के लिए नाश्ता एवम् खाना का भी प्रबंध किया गया था जिसमे पानी पुरी डोसा इडली सांभर मिठाई एवम् केक का प्रबंध किया गया था। इस मौके पर शारदा कंप्यूटर जयनगर के छात्र अभिषेक रोहित नितीश विकास अजय सुभान शिवशंकर राहुल सोबल रंजन प्रवेश छात्रा राखी आशिकी अंशु विभा नंदनी कोमल हर्षिता कामनी नंदनी इत्यादि छात्र एवम छात्राएं उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री व केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से किया शिलान्यास एवं उद्घाटन

- समारोह में सांसद गोपल जी ठाकुर, विधायक संजय सरावगी, विनय चौधरी, मिश्री लाल यादव, रामचंद्र प्रसाद, अमन हजारी उपस्थित थे

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार,केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री के कर-कमलों से 188 करोड़ रुपये की लागत से नव निर्मित क्षेत्रीय चक्षु संस्थान-सह-चक्षु अस्पताल एवं स्वास्थ्य विभाग, बिहार सरकार के 850 करोड़ रुपये की लागत से विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किये।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दरभंगा जिले के 07 करोड़ 69 लाख रुपये की लागत से तारडीह प्रखण्ड अन्तर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं 75 लाख रुपये की लागत से हनुमाननगर प्रखण्ड के रामपुर डीह हेल्थ एण्ड वेलनेस सेन्टर का शिलान्यास एवं उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर दरभंगा, समाहरणालय अवस्थित बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर सभागार में राजीव रौशन जिलाधिकारी दरभंगा ने पारंपरिक रूप से पाग चादर और बुके देकर सांसद गोपाल जी ठाकुर को सम्मानित किया। अधिकारियों के द्वारा उपस्थित सभी विधायक को पाग चादर और बुके देकर सम्मानित किया गया । आज के इस कार्यक्रम में नगर विधायक संजय सरावगी, बेनीपुर के विधायक प्रो विनय कुमार चौधरी, अलीनगर के विधायक मिश्री लाल यादव, हायाघाट के विधायक रामचंद्र साह, कुशेश्वरस्थान के विधायक अमन भूषण हजारी, अपर समाहर्त्ता अनिल कुमार, सिविल सर्जन डॉ.अरुण कुमार, उप निदेशक,जन-सम्पर्क सत्येन्द्र प्रसाद एवं स्वास्थ्य विभाग के पदाधिकारी एवं कर्मीगण उपस्थित थे।

एसएसबी जवान के फोरव्हीलर ने बुजुर्ग को मारी टक्कर

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी हरलाखी में एक बुजुर्ग को एसएसबी जवान ने अपने निजी वाहन से ठोकर मार कर घायल कर दिया। जिसके बाद बुजुर्ग नीचे गिर गए एसएसबी का जवान मौके का फायदा उठाकर चार पहिया वाहन लेकर भागने लगा तभी ग्रामीणो ने पीछा करते हुए उसे गंगौर चौक के करीब पकड़ लिया। और पुलिस को सूचना दिया गया। घटना की सूचना मिलते ही हरलाखी पुलिस गंगौर गांव चौक पहुंची और वाहन को जब्त कर थाने ले गया। जख्मी बुजुर्ग की पहचान फुलहर पंचायत के मनोहरपुर गांव निवासी लक्ष्मी नारायण यादव के रूप में हुआ है। फिलहाल उनका इलाज निजी क्लीनिक में चल रहा है। इस संबंध में जानकारी देते हुए डॉक्टर ने बताया कि चार पहिया वाहन पर पुलिस का बोर्ड लगा हुआ था देखा गया,एसएसबी के जवान ने अपने नाम बताने से इंकार कर दिया बताया जा रहा है कि जवान जयनगर कैंप में कार्यरत है।वहीं थानाध्यक्ष जितेंद्र कुमार सहनी ने बताया कि वाहन को जब्त कर जख्मी का इलाज चल रहा है उचित कार्रवाई किया जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

बिजली का कार्य करने के दौरान एक रेलकर्मी हुआ घायल

जमुई [झाझा] रेलवे कॉलौनी में बिजली का कार्य करने के दौरान बांस की बनी सीढ़ी से नीचे गिरने से एक रेलकर्मी घायल हो गया। जिसे साथ में काम कर रहे अन्य रेलकर्मी के द्वारा तुरंत इलाज के लिए रेलवे पॉलि क्लीनिक लाया गया जहां रेलवे चिकित्सक के द्वारा घायल रेलकर्मी का इलाज किया गया। घायल रेलकर्मी की स्थिति नाजुक रहने पर डॉक्टर ने उसे बेहतर इलाज के लिए जमुई रेफर कर दिया। घायल रेलकर्मी की पहचान रेलवे पावर हाउस में लाइनमेन में कार्यरत समर टुडु के रूप में हुई है। बताया जाता है कि रेलवे कॉलौनी में किसी रेलकर्मी के घर समर टुडु सहित तीन रेलकर्मी बिजली मरम्मती का काम कर रहा था। दो मिस्त्री रेलवे आवास के उपर चढ़ा हुआ था और समर लकड़ी की सीढ़ी से चढ़ने के दौरान नीचे गिर गया जिससे वह घायल हो गया। घटना की जानकारी मिलने के बाद पावर हाउस के रेलकर्मी की भीड़ रेलवे अस्पताल में लग गई।

डीडीसी ने छापा पंचायत का किया निरीक्षण

जमुई [झाझा] प्रखंड क्षेत्र के छापा पंचायत अंर्तगत धपरी गांव में जमुई डीडीसी सुमित कुमार के द्वारा निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान निर्मित पोखर सहित पंचायत में पड़ने वाले विद्यालय का निरीक्षण किया। इसके अलावे डीडीसी पंचायत में चल रहे कई विकास कार्यो की भी जानकारी साथ में चल रहे बीडीओ रविजी, पंचायत के मुखिया पप्पू यादव से लिया। डीडीसी ने पंचायत में आवास योजना, राशनकार्ड से वंचित लाभुकों के बारे में भी जानकारी लिया। इसके अलावे डीडीसी पंचायत में पड़ने वाले सरकारी विद्यालय पहुंचा और विद्यालय के एचएम से शिक्षा, विद्यार्थियों के नामांकन सहित अन्य कई चीजों की जानकारी ली। डीडीसी ने बीडीओ, मुखिया से कहा कि अगर किसी भी ग्रामीण को कोई परेशानी हो तो तुरंत उसका समाधान करे।

अखिल भारतीय मानवाधिकार विचार मंच पार्टी के व्यावसायिक युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष बने आकाश कुमार

मुंगेर (बिहार)। अखिल भारतीय मानवाधिकार विचार मंच पार्टी की ओर से व्यावसायिक युवा प्रकोष्ठ के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर आकाश कुमार प्रोपराइटर मां दुर्गा इंटरप्राइजेज ई रिक्शा एंड ई बाइक शोरूम मथुरा साहिबगंज को मनोनीत किया गया है। इसकी जानकारी अखिल भारतीय मानवाधिकार विचार मंच पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र पंडित ने दिया है।

सांसद को नहीं पहचानते हैं गिद्धौर प्रखंड के बीडीओ

सांसद अरूण भारती ने फोन पर बीडीओ को खूब खरी-खोटी सुनाई

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौरः- जमुई सांसद अरुण भारती (एलजेपी आर)तीन दिवसीय दौरे पर जमुई पहुंचे हुए हैं, जहां वह क्षेत्र में धूम धूम कर जनता की समस्या को सुन रहे है इसी दौरान गुरुवार को जमुई सांसद गिद्धौर प्रखंड के गंगरा गांव पहुंचे जहां झारखंड के उत्पाद विभाग के दौड़ में गए गंगरा के एक युवक की मौत हो गई थी। जहां पीड़ित परिवार से मिलने के बाद उन्होंने गिद्धौर प्रखंड के बीडीओ को फोन लगाया। बीडीओ ने सांसद को पहचाने से ही इंकार कर दिया। जिसके बाद सांसद अरुण भारती का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया।जिसका वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। फोन पर बीडीओ और सांसद की बातचीत.. हेलो.. बीडीओ का जवाब आया,कौन अरुण भारती बोल रहे है। नहीं पहचान रहे है। बीडीओ.. नहीं पहचान रहे है। अरुण भारती.. सांसद बोल रहे है आपके,बीडीओ साहब जरा जानकारी अपनी दुरुस्त रखिए,गुस्से में सांसद ने फिर कहा जानकारी अपनी दुरुस्त रखिए.. बीडीओ.. हां सर , हां सर सांसद.. हां तो अपनी जानकारी दुरुस्त रखिए बीडीओ..हमको लगा कि कोई गांव से बोल रहा है। सांसद..गांव का,जब आपको बताया गया तो समझ नहीं आया बीडीओ.. नहीं सर सुनाई नहीं पड़ा,सॉरी सर सांसद..ऐसा है आपको पता होगा ,आपके ही,एरिया गंगरा के अजय सिंह के बेटे है गए थे झारखंड एक्साइज विभाग के दौड़ में जिसकी वहा मृत्यु हो गई है। बीडीओ... हां सर, हां सर मालूम है। सांसद..प्रशासन में इतना भी मानवता नहीं है कि एक बार आकार पीड़ित परिवार से मिल ले। बीडीओ... सर मिल लेते है। सांसद..आपको मिलना चाहिए और उनको आश्वासन देना चाहिए की प्रशासन की तरफ से जो भी मदद हो आपको दी जाएगी। बीडीओ..जी सर सांसद..आपको हम निर्देशित कर रहे है,आप आ करके पीड़ित परिवार से मिलेंगे। बीडीओ.. जी सर दरअसल, गिद्धौर प्रखंड के गंगरा गांव में बीते 29 अगस्त को झारखंड में हुए उत्पाद विभाग के दौड़ में भाग लेने गए अजय सिंह के बड़े बेटे गोविंद कुमार 24 साल की मौत गई थी।इस घटना के बाद गंगरा गांव में मातम पसरा हुआ है। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के जीजा तथा जमुई के सांसद अरुण भारती गुरुवार को पीड़ित परिवार से मिलने पहुंचे थे।पीड़ित परिवार से मिलकर सांसद ने कहा कि हर संभव मदद का भरोसा दिया है।

प्रतिमा निर्माण के आधारशिला रखने को लेकर दो पक्षों ने जमकर मचाया बवाल

पुलिस के पहल पर शांत हुआ मामला

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। शहीद रामफल मंडल के प्रतिमा निमार्णा के आधारशिला रखते ही दो गांव मे जमकर बवाल पुलिस के हस्तक्षेप से मामला टला गया। मामला बरियारपुर थाना क्षेत्र के बहादुरपुर व मिर्जा चक के मोड़ पर मिर्जा चक के ग्रामीणों द्वारा शहीद रामफल मंडल के प्रतिमा निमार्णा का आधारशिला रखते ही बहादुरपुर के ग्रामीणों ने जमकर किया हंगामा। घटना स्थल पर स्थित बिगड़ते देख बरियारपुर पुलिस को. सुचित किया गया। मौके ऐ बरदात बरियारपुर पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष राजेश कुमार ने सदलबल घटनास्थल पर पहुंचे। जहां दोनो गाँव के लोगों द्वारा देख लेने की धमकी देकर कहा हम निमार्णा करेंगे तो क्या होंगा।इस सम्बन्ध में स्थिति के नजाकत को देखते हुए थाना अध्यक्ष ने दोनो पक्षो को थाना बुलाया गया जहां अपने अपने पक्ष को लोगों ने रखा।बहादुरपुर ग्रामीणों ने बडी वाहनों के आवाजाही मे व्यवधान होने की बात कहा तो वही मिर्जाचक के ग्रामीणों ने अतिक्रमण मुक्त कराने की बात किया क्योंकि मंदिर के बगल मे गन्दगी फैलाना दंण्डनिय अपराध बताया। काफी जदौ जैहाद के बाद दोनों पक्षों द्वारा अपना स्विकृति प्रदान करते हुए दोनो गांव के लोगों को निमार्णा कार्य पर रोक लगाते हुए कहा पहले मिट्टी भर कर बड़ी वाहनों के जाने आने पर कोई तरह का निमार्णा कार्यों पर रोक लगा दिया गया है। इस सम्बन्ध मे अंचलाधिकारी रविना गुप्ता से पुछने पर बतायी दोनों गांव के लोगों द्वारा निमार्णा नही करेंगे तथा सरकारी भूमी पर निर्माण नही करसकते है।अगर कोई गांव के लोगों ने किसी तरह के गैरकानूनी हरकत करते पाये जायेंगे उस पर शक्ति से निपटा जायेगा।

दुर्गापूजा को लेकर वैष्णवी दुर्गामंदिर के प्रागंण में पूजा समिति की हुई बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] गुरूवार की संध्या बेला में मुख्य बाजार स्थित श्री श्री 108 वैष्णवी दुगार्मंदिर के प्रागंण में शारदीय नवरात्र एवं दुर्गा पूजा समारोह मनाते हेतु दुगार्पूजा समिति की बैठक मंदिर समिति के महासचिव प्रभाष बंका के नेतृत्व में कि गई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि इस वर्ष भी शारदीय नवरात्र व दुगार्पूजा समारोह बड़े ही धूमधाम के साथ पिछले साल की तुलना में और भी भव्य रूप से मनाया जाए। बैठक में सर्वप्रथम पिछले बैठक की संपुष्टि पूजा समिति के संयोजक प्रभाष बंका द्वारा किया गया। तत्पश्चात शारदीय नवरात्र 2024 के सफल आयोजन हेतु नई कार्यकारणी का गठन किया। जिसमें किसी भी तरह का कोई फेरबदल न करते हुए पिछले वर्ष की कार्यकारिणी टीम को ही रखा गया। बैठक में लोगों के बीच पूजा पंडाल को खूबसूरत एवं आकर्षक रूप से बनाने, पूजा के दौरान मंदिर में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा प्रदान करना, सुरक्षा सहित अन्य बिंदुओं पर चर्चा कि गई। बैठक में दुगार्पूजा की तैयारी से संबंधित अन्य बिंदुओ पर चर्चा कि गई। बैठक में लक्ष्मण बंका, भवनेश भाई त्रिवेदी, सौरभ गोयल, लक्ष्मी बरनवाल, नंदु गुप्ता, अनिल बरनवाल, शैलेश कुमार साव, दिलीप भाई पटेल, नंदकिशोर पासवान, मुन्ना प्रसाद यादव, राजो कुमार, सचिन गुप्ता, प्रशांत सुल्तानियां दिवाकर माथुरी, सुजीत गुप्ता, राजेश कुमार सहित कई लोग शामिल हुए।

थम्महन गांव और एसएसबी के बीच क्रिकेट मैच का किया गया आयोजन

एसएसबी टीम ने शानदार खेल का किया प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] सोनो । 16 वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल के कमांडेंट मनीष कुमार के दिशा निर्देश पर सी समवाय चरका पत्थर एसएसबी कैंप चरका पत्थर ग्राउंड में कंपनी कमांडर अभिनव तोमर के निगरानी में थम्महन गांव और एसएसबी के बीच क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। एसएसबी टीम के टीम कैप्टन राजवीर सिंह गुर्जर ने टास जीत कर बैटिंग करने का निर्णय लिया, एसएसबी टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुवे 10 वोवर में 136 रन का लक्ष्य थम्महन गांव के टीम को दिया ' थम्महन गांव की टीम ने लक्ष्य का पीछा करते हुवे 10 ओवर में 119 रन ही बना पाई , परिणाम फलस्वरूप एसएसबी चरका पत्थर की टीम ने यह मैच 17 रन से जीत गई , एसएसबी के भवर योगेश ने अकेले 49 रन बना कर दर्शकों की वाह वाही लूटी । इस अवसर पर लालीलेवार पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि रोहित यादव तथा स्थानीय ग्रामीण मौजूद रहे । कंपनी कमांडर अभिनव तोमर ने कहा कि हमारी एसएसबी की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की है मैं सभी खिलाड़ियों को तथा समस्त जवानों को जीत की बधाई देता हूं ,और हारने वाली टीम से कहना चाहता हूं की आप लोग निराश मत होइए, कड़ी मेहनत करें और जीत का जज्बा हमेशा सभी खिलाड़ियों के अंदर होनी चाहिए तभी खेल में जीत संभव है , हम सेवा सुरक्षा बंधुत्व के उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कृत संकल्पित है। इसी मंत्र को ध्यान में रखते हुए हम नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में ड्यूटी का निर्वाह करते है, एसएसबी इस क्षेत्र में स्थानीय लोगों के मन में सुरक्षा की भावना पैदा करते हुए नक्सलियों को सफाया लगातार कर रही है । और रास्ता भटक गए नौजवानों को मुख्य धारा में जोड़ने का कार्य भी तेजी से कर रही है । श्री तोमर ने बताया कि सामाजिक चेतना अभियान के तहत इस तरह के कार्यक्रम लगातार चलाए जाएंगे, जिस से हम सब के बीच भाई चारा बना रहे । बताते चले की नवनियुक्त सहायक कमांडेंट अभिनव तोमर युवा है इस लिए इनका खेल से अच्छा लगाव है,वह खुद ग्राउंड में जवानों के साथ क्रिकेट और बालीबाल खेलते रहते है ।

मनी नदी को अतिक्रमण मुक्त कराने की दिशा में सार्थक पहल

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (बिहार)। हवेली खड़गपुर का ऐतिहासिक मणी नदी को अतिक्रमण मुक्त कराने की दिशा में सार्थक पहल तेज कर दी गई है डीएम के पत्रांक 1668, दिनांक 2,08 24 के आलोक में मणी नदी को अतिक्रमित जमीन की मापी अंचल अमीन के द्वारा किया गया था इसके बाद अंचल अधिकारी ने 24 लोगों को नोटिस जारी कर 4 सितंबर को जमीन से संबंधित दस्तावेज के साथ या फिर अधिवक्ता के साथ अंचल कार्यालय में उपस्थित होने को कहा था इसके बाद बुधवार को सभी लोग अपने-अपने दस्तावेज के साथ अंचल कार्यालय में उपस्थित हुए अंचल अधिकारी संतोष कुमार सिंह ने बताया कि मनोज कुमार रघु ने डीएम को आवेदन देकर कहा था कि अतिक्रमण की वजह से मनी नदी अपने मूल स्वरूप से बदलकर नाले में परिवर्तित हो गई है नदी की जमीन को अतिक्रमण कर भवन निर्माण कर रहे हैं इस पर डीएम ने आदेश जारी कर तारापुर अनुमंडल के लोग शिकायत निवारण पदाधिकारी शालिग्राम शाह को स्थल का निरीक्षण कर जांच रिपोर्ट समर्पित करने का निर्देश दिया था इस पर पिछले माह तारापुर के एसपीजीआरओ ने खडगपुर स्थित एसडीओ आवास के पीछे हिस्से और मनी नदी में बने पुल के समीप से नदी की भूमि का अवलोकन किया अंचलाधिकारी को मनी नदी की सरकारी भूमि की मापी कर जल्द से जल्द रिपोर्ट समर्पित करने को कहा उन्होंने कहा इसके बाद जमीन की मापी अंचल अमीन द्वारा कराई गई थी मामले को लेकर 24 लोगों को नोटिस जारी कर दस्तावेज के साथ अंचल कार्यालय में उपस्थित होने को कहा गया था लोगों ने अंचल कार्यालय में दस्तावेज जमा किया है जमा किए गए दस्तावेज का अवलोकन किया जा रहा है इसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी ।

जीपीएफएफटी फोरम को सुदृढ़ीकरण व जीपीडीपी के सफल क्रियान्वयन को ले बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

सोनो जमुई : ग्राम पंचायत पलैयनिंग एण्ड फैसलीटेशन टीम को सुदृढ़ीकरण कर ग्राम पंचायत विकास योजना जीपीडीपी के सफल क्रियान्वयन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक सोनो प्रखंड के ग्राम पंचायत राज लखन कियारी मे पंचायत के मुखिया श्रीमती सोनी देवी के द्वारा आयोजित की गई । पंचायत स्तर पर आयोजित इस बैठक का मुख्य उद्देश्य जीपीएफएफटी फोरम की भुमिका को सुदृढ़ बनाना एवं जीपीडीपी के सफल क्रियान्वयन के लिए बेहतर तरीके से तैयार करना था । बैठक में उपस्थित बड़ी संख्या में लोगों ने पंचायत स्तर पर योजनाओं का संयोजन और समन्वय के महत्व पर चर्चा करते हुए इसे प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए अपना अपना सुझाव दिए । बैठक में फोरम की संरचना को मजबूत बनाने , सदस्यों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने तथा पंचायत विकास योजनाओं के साथ जीपीएफएफटी के बेहतर समन्वय के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए । बैठक में यह निर्णय लिया गया कि जीपीएफएफटी फोरम की बैठकों का नियमित आयोजन किया जायेगा जिससे योजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों का समाधान किया जा सके । बैठक में उपस्थित पंचायत सचिव ने पंचायत विकास योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए सभी संबंधित विभागों से फोरम को सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया । पीरामल फाउंडेशन के प्रतिनिधि द्वारा बताया गया है कि जिले में निति आयोग के द्वारा संपुर्णता अभियान चलाया जा रहा है जिससे कि सभी इंडीकेटर को सैचुरैशन पर पहुचाना हम सबों की जिम्मेदारी है । मौके पर उपस्थित लोगों ने बैठक की सराहना करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार का बैठक कर पंचायत में विकास योजनाओं को सफल बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की गई । ज्ञात हो कि बैठक का सफल आयोजन से पंचायत राज लखन कियारी मे विकास योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है । बैठक का समापन मुखिया श्रीमती सौनी देवी के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया । बैठक में मुखिया प्रतिनिधि दिगंबर पांडेय , पंचायत प्रतिनिधि , आजिविका कार्यकताओं , आंगनबाड़ी सेविकाओं , आशा कार्यकताओं , स्वयं सेवी संगठन के प्रतिनिधियों , मधुरम फाउंडेशन एवं लोक सेवा संस्थान के सदस्यों के अलावा पंचायत प्रतिनिधियों एवं गणमान्य लोग मौजूद थे ।

प्रीपेड स्मार्ट विद्युत मीटर लगाए जाने के विरोध में किया गया प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। शुक्रवार को बिजली उपभोक्ता संघर्ष मोर्चा संग्रामपुर के प्रीपेड स्मार्ट बिजली मीटर के विरोध में प्रदर्शन किया गया। जुलूस संग्रामपुर डाक बंगला से निकालकर बाजार के सभी प्रमुख मार्गो से गुजरते हुए महावीर चौक पहुंचा। जुलूस का नेतृत्व नगर पंचायत संग्रामपुर के मुख्य पार्षद प्रतिनिधि सह राजद नेता नंदकिशोर यादव,एस०यू०सी०आई०(सी०) के सुधीर यादव ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के प्रखंड अध्यक्ष उत्तम दास ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक यूथ आगेर्नाइजेशन के संतोष कुमार दास संयुक्त रूप से कर रहे थे। जुलूस में शामिल लोगों ने प्रीपेड बिजली मीटर पर अभिलंब रोक लगाने, बिजली अधिनियम 2023 को निरस्त करो, किसानों को बिजली की गारंटी दो आदि के नारे लगा रहे थे। महावीर चौक पर आकर जुलूस में शामिल लोगों ने ऊर्जा मंत्री का पुतला फूंका। जुलूस को सभा में तब्दील होने पर मौके पर मौजूद ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के बिहार राज्य सचिव सह एस०यू०सी०आई०(कम्युनिस्ट) के जिला सचिव कृष्ण देव शाह सभा में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए केंद्र एवं राज्य सरकार की जन विरोधी नीतियों की कड़ी आलोचना की, उन्होंने बिजली अधिनियम 2023 को अविलंब वापस लेते हुए स्मार्ट प्रीपेड मीटर को तुरंत निरस्त करने की बात कही। श्री शाह ने बताया कि देश के किसान मजदूर एवं आम जनता की कमर पहले से ही टूट चुकी है वहीं बिजली को निजी हाथों में देकर प्रीपेड मीटर लगाने की छूट कंपनियों को देकर किसान, मजदूर, आम अवाम को शोषण करने की साजिश की जा रही है।

अलीगंज प्रखंड के मानपुर गाँव पहुंचे जमुई सांसद अरुण भारती, ग्रामीणों ने किया भव्य स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई० अलीगंजः-, प्रखंड के मानपुर गाँव स्थित लोजपा संसदीय बोर्ड के जिलाध्यक्ष वाई पी सुमन के निवास पर माननीय जमुई सांसद अरुण भारती का भव्य स्वागत किया गया। सांसद अरुण भारती गुरुवार को मानपुर गावं के एक पीड़ित शोकाकुल परिवार से मिलने पहुंचे थे, उसी क्रम मे लोजपा संसदीय बोर्ड के जिलाध्यक्ष वाई पी सुमन के आवास पर माननीय जमुई सांसद अरुण भारती का अलीगंज पंचायत मुखिया गायत्री देवी के द्वारा भव्य स्वागत करते हुए अंगवस्त्र एवं पुष्प देकर सम्मानित किया। यह कार्यक्रम सामाजिक समर्पण और सम्मान की भावना को प्रदर्शित करता है। जिसमें सांसद अरुण भारती के कार्यों की सराहना की गई। लोजपा के संसदीय बोर्ड के जिलाध्यक्ष वाईपी सुमन ने माननीय सांसद अरुण भारती का स्वागत करते हुए उन्हें अपने क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया। उन्होंने क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं की कमी, सड़क, बिजली, पानी, और शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों पर ध्यान आकृष्ट किया। वहीं अलीगंज मानपुर की जार्जर रोड की जीर्णोद्धार के लिए पहल करने की बात रखी। सांसद से इन समस्याओं के समाधान के लिए ठोस कदम उठाने की अपील की गई।, जिससे क्षेत्र का समग्र विकास हो सके और ग्रामीणों को बेहतर जीवन जीने का अवसर मिले। इस मौके पर लोजपा के जिलाध्यक्ष जीवन सिंह, लोजपा संसदीय बोर्ड के जिला अध्यक्ष वाई पी सुमन,सिकंदरा विधान सभा के पूर्व प्रत्याशी सुभाष पासवान,रविशंकर पासवान, तारापुर विधान सभा के पूर्व प्रत्याशी चंदन सिंह,बरिष्ठ नेता राहुल भवेश, युवा नेता हरेराम रावत,गौत्तम पासवान,सकलदेव यादव,अनिल सिंह, दीपक सिंह,सिकंदरा विधानसभा के प्रभारी मनोज प्रसाद, जदयू के प्रखंड अध्यक्ष शीतल मेहता,तकनीकी प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष रामाशीष कुशवाहा, जदयू शिक्षा प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष,नीतीश कुशवाहा, बिरेन्द्र महतो, मुकेश यादव के अलावा सैकड़ो लोग मौजूद थे।

विवाहित महिला ने की फांसी लगाकर आत्महत्या, माइके वालों ने लगाया हत्या का आरोप

प्रात : किरण संवाददाता

सोनो जमुई : जमुई जिले के बटिया थाना क्षेत्र अंतर्गत भुराहा गाँव में बीते बुधवार को एक विवाहित महिला ने गृह कलह से तंग आकर फांसी लगाकर आत्म हत्या कर ली है । मृतिका भुराहा गाँव निवासी अजय शर्मा की पत्नी कविता देवी बताया गया है। घटना की सुचना पाकर मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने जांच प्रक्रिया पुरी कर शव को कब्जे में लेकर पोस्ट मार्टम के लिए जमुई भेज दिया । इस मामले पर मृतक महिला के पिता अरुणमाबांक गाँव निवासी सीताराम शर्मा के द्वारा ससुराल वालों पर दहेज की मांग पुरी नहीं करने पर अपने पुत्री की हत्या का आरोप लगाया है। बताया गया है कि घरेलू विवाद को लेकर ससुराल वालों के द्वारा महिला को डांट फटकार लगाई गई थी , जिस पर महिला ने घर का दरवाजा बंद कर लिया और फांसी लगाकर आत्म हत्या कर ली । माइके वालों द्वारा पांच लाख रुपये दहेज की मांग पुरी नहीं करने पर ससुराल पक्ष के सभी लोगों पर हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस ने हत्या और आत्म हत्या की जांच पड़ताल में जुट हुई है। सत्यता की जांच पुरी होने पर कानुनी कार्यवाई की जायेगी । इधर ससुराल पक्ष के सभी लोग घटना के बाद से फरार हो गया है । मृतका के पिता ने बताया कि अपनी पुत्री कविता की शादी यथा शक्ति दान दहेज देकर हिंदू रिति रिवाज के अनुसार पिछले वर्ष 2021 में गंदर पंचायत के भुराहा गाँव निवासी अजय शर्मा के साथ किया था , शादी के बाद ससुराल वालों द्वारा पांच लाख रुपए दहेज की मांग करते हुए पुत्री के साथ मारपीट करने लगा ओर अंततः उनकी मांग को पुरी नही करने पर उन लोगों ने हमारी पुत्री को मार डाला ।

चोरी की घटना पर पुलिस नहीं लग पा रहा है लगाम

नामजद आरोपित घूम रहे हैं पुलिस के सामने खुलेआम

- प्राथमिकी दर्ज के बाद भी पुलिस नहीं कर रही है अभियुक्त को गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (बिहार)। खड़गपुर थाना क्षेत्र के शेख टोला निवासी मोहम्मद मंसूर आलम के ऑनलाइन दुकान में चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम दिया है। इसकी एक प्राथमिकी हवेली खड़गपुर थाना में पीड़ित पक्ष के द्वारा दर्ज कराया गया है। प्राथमिकी आवेदन में कहा गया है कि मैं मोहम्मद मंसूर आलम ऑनलाइन का दुकान चलता हूं घटना के दिन मैं अपने दुकान को 8:00 बजे रात्रि में बंद कर घर चला गया था दूसरे दिन जब दुकान खोलने आया तो पाया कि दुकान में चोरी हो गया है मैंने देखा की दुकान खुला है और अंदर लाइट जल रहा है दुकान के अंदर गया तो पाया कि रुपए वाला गल्ला खुला हुआ है और उसमें से सारी रुपया पैसा गायब है जब मैं दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरा देखा और उसे चेक किया तो दुकान में चोरी होने का वीडियो सामने आया। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोर की पहचान हुई। जिसे प्राथमिकी अभियुक्त बनाने के लिए आवेदन में उसका नाम दिया गया है। इस आलोक में खड़गपुर थाना अध्यक्ष ने बीएस एन 2024 के आलोक में थाना कांण्ड संख्या 275/2024 अंडर सेक्शन 341(4)303(2) के तहत मुकदमा दर्ज कर कर लिया है । लेकिन आरोपित को स्थानीय पुलिस द्वारा अब तक गिरफ्तार नहीं किया गया है इससे पीड़ित पक्ष भयभीत नजर आ रहा है। हवेली खड़गपुर थाना कांड संख्या275/2024 जो की 11 अगस्त 2024 को रजिस्टर्ड किया गया है इसके इन्वेस्टिगेशन ऑफीसर संजय पासवान को बनाया गया है। इस संबंध में इन्वेस्टिगेशन ऑफीसर संजय पासवान से जब प्रश्न पूछा कि क्या आप ने नामजद प्राथमिकी अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। इस सवाल के जवाब में इन्वेस्टिगेशन ऑफिसर ने कहा कि ना प्रार्थना की अभियुक्त पुलिस के भय से फरार चल रहा है। इधर ग्रामीणों ने बताया कि नामजद अभियुक्त अपने घर में ही रहता है। जिसे पुलिस पकड़ना नहीं चाहती है। इससे चोर का मनोबल बढ़ गया है आए दिन चोरी की घटना को लेकर लोग परेशान है लेकिन पुलिस हाथ पर हाथ रख चैन की नींद सो रहा है। बताया जाता है कि नामजद अभियुक्त को एक नेता का वरदहस्त प्राप्त है इसको लेकर खड़गपुर थाना पुलिस नाम जद आरोपित को गिरफ्तार करने से परहेज कर रही है।

नियोजनालय मुंगेर के प्रांगण में आगामी 13 सितंबर को जॉब कैंप का आयोजन होगा

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (बिहार)। श्रम संसाधन विभाग जिला नियोजनालय मुंगेर के प्रांगण में आगामी 13 सितंबर 2024 को जब कैंप का आयोजन किया जाना सुनिश्चित किया गया है। इस दिन दिन के 11:00 से 4:00 बजे शाम तक अभ्यर्थी जॉब कैंप में नियोजन से जॉब के विषय में जानकारी प्राप्त कर अपना आवेदन अथवा पर्ची जमा करा कर साक्षात्कार में भाग ले सकते हैं।

जॉब कैंप में भाग लेने वाले आवेदक कार्यालय में आकर एनसीएस पोर्टल पर निबंध आवश्यक कर लेंगे। इस आश्य की जानकारी प्रभारी जिला नियोजन पदाधिकारी मुंगेर के राणा अमितेष ने प्रेस को दिया है। उन्होंने बताया कि शिव शक्ति आर्टिकल लिमिटेड ने सेल एग्जीक्यूटिव ऑफिसर के लिए 20 पद पर बहाली करने जा रहा है इसके लिए अभ्यर्थी का उम्र सीमा 20 बर्ष से 39 वर्ष तक निर्धारित किया गया है इन अभ्यर्थियों का मानदेय 8300 से 14 000 देय होगा। इसमें पीएफ बोनस सहित मेडिकल क्लेम बाइक लोन आदि सब शामिल है। प्रभारी जिला नियोजन पदाधिकारी ने बताया कि चयनित अभ्यर्थी को बिहार स्टेट में कहीं भी काम करना होगा। जॉब कैंप का स्थान जिला योजनाल कार्यालय मुंगेर में रखा गया है।

सम्पादकीय

श्रीगणेश का जन्म और महाभारत लेखन चतुर्थी की देन

भगवान श्रीगणेश का जन्म भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को बुधवार के दिन हुआ था।तभी से हर साल भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तिथि को गणेश चतुर्थी या फिर गणेश जयंती मनाते हैं। महाराष्ट्र समेत पूरे भारत में गणेश चतुर्थी से 10 दिनों का गणेश उत्सव प्रारंभ होता है, इसका समापन अनंत चतुर्दशी यानी भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तिथि को होता है। गणेश चतुर्थी के दिन लोग अपने घरों पर गणपति स्थापना करके पूजन करते हैं।भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तिथि 6 सितंबर को दोपहर में 03:01 बजे से लेकर 7 सितंबर को शाम 05:37 बजे तक रहेगी।7 सितंबर को गणेश चतुर्थी में सूर्योदय सुबह 06:02 बजे होगा। ऐसे में उदयातिथि के आधार पर गणेश चतुर्थी 7 सितंबर को मनाई जा रही है।इस दिन व्रत रखा जाएगा और गणपति की स्थापना की जाएगी।मूर्ति स्थापना और गणेश पूजा के लिए ढाई घंटे से अधिक का समय मुहर्त के अनुसार उपलब्ध है। 7 सितंबर को गणेश चतुर्थी की पूजा का मुहूर्त 11:03 बजे से दोपहर 01:34 बजे तक है।इस साल गणेश चतुर्थी की पूजा रवि और ब्रह्म योग में होगी। चतुर्थी के दिन रवि योग सुबह 06:02 बजे से दोपहर 12:34 बजे तक है, वहीं ब्रह्म योग सुबह से लेकर रात 11:17 बजे तक है।यह भाद्रपद की विनायक चतुर्थी है। इस दिन चंद्रमा का दर्शन नहीं करना चाहिए। यदि ऐसा करते हैं तो झूठा कलंक लग सकता है।इस दिन चन्द्रमा देखने के कारण ही भगवान श्रीकृष्ण पर मणि चोरी करने का झूठा आरोप लगा था।भगवान गणेश शुभ और समृद्धि के देवता है। सब देवों में सबसे पहले गणेश जी की पूजा की जाती है। भक्तों के कष्टों का निवारण करने वाले गणपति महाराज भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को धरती पर आते हैं और दस दिन के लिए निवास करते हैं।जिस दिन गणपति आते हैं, उस दिन गणेश चतुर्थी का त्यौहार धूमधाम से मनाया जाता है। लोग घरों, पंडालों और मंदिरों में धूमधाम से गणपति बप्पा की मूर्ति स्थापित करते हैं और दस दिन तक विधि विधान से गणपति की पूजा की जाती है।इसके बाद अनंत चौदस के दिन गणपति को धूमधाम से विसर्जित किया जाता है।गणेश चतुर्थी पर ब्रह्म योग, रवि योग और ऐंद्र योग भी बन रहा है। कहा जाता है कि ये सभी योग पूजा की दृष्टि से बेहद शुभ हैं। इस योग में की गई पूजा और खरीदारी दुगना फल देती है।पौराणिक कहानियों के अनुसार महर्षि वेद व्यास के कहने पर भाद्रपद मास की चतुर्थी को गणेशजी ने महाभारत का लेखन कार्य शुरू किया था। तब महर्षि वेद व्यास ने गणेश जी को महाभारत की कहानी सुनाते रहे और गणेश जी अपनी कलम से महाभारत को लिपिबद्ध करते रहे। माना जाता है कि महाभारत लेखन में 10 दिनों का समय लगा था। 10 दिनों तक गणेश जी एक ही मुद्रा में बैठे रहे , जिससे उनका शरीर जड़वत होने के साथ शरीर पर धूल-मिट्टी की चढ़ गई थी। इस कारण गणेश जी 10 दिनों बाद नदी पर स्नान करने गए थे, उस दिन को अंनत चतुदर्शी नाम से जाना जाता है।किसी भी मांगलिक कार्य में गणेश जी को प्रथम देवता या प्रथम निमंत्रण देवता के रूप में भी पूजा जाता है, इसलिए गणेश चतुर्थी का दिन गणेश जी की स्तुति में विशेष माना जाता है। पौराणिक मान्यता है कि जिन लोगों के काम अधूरे रह जाते हैं या काम-धंधे में तरक्की नहीं मिल पाती, उन्हें गणेश चतुर्थी पर भगवान गणेश की प्रतिमा को घर पर जरूर लाना चाहिए।जिसे शुभ माना गया है।

राष्ट्रीय एकता का पर्व है गणेशोत्सव

गणेश शब्द का अर्थ होता है जो समस्त जीव के ईश अर्थात स्वामी हो। गणेश जी को विनायक भी कहते हैं। विनायक शब्द का अर्थ है विशिष्ट नायक। वैदिक मत में सभी कार्य के आरम्भ जिस देवता का पूजन से होता है वही विनायक है। गणेश चतुर्थी के पर्व का आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्त्व है। मान्यता है कि भगवान गणेश विघ्नो के नाश करने और मंगलमय वातावरण बनाने वाले हैं। गणेश चतुर्थी का त्योहार महाराष्ट्र, गोवा, तेलंगाना, केरल और तमिलनाडु सहित पूरे भारत में काफी जोश के साथ मनाया जाता है। किन्तु महाराष्ट्र में विशेष रूप से गणेशोत्सव को 10 दिनों तक बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। इस त्योहार को गणेशोत्सव या विनायक चतुर्थी भी कहा जाता है। पुराणों के अनुसार इसी दिन भगवान गणेश का जन्म हुआ था। गणेश चतुर्थी पर भगवान गणेशजी की पूजा की जाती है। कई प्रमुख जगहों पर भगवान गणेश की बड़ी-बड़ी प्रतिमायें स्थापित की जाती है। इन प्रतिमाओं का नो दिन तक पूजन किया जाता है। बड़ी संख्या में लोग गणेश प्रतिमाओं का दर्शन करने पहुंचते है। नो दिन बाद गणेश प्रतिमाओं को समुद्र, नदी, तालाब में विसर्जित किया जाता है। गणेश चतुर्थी मनाने के दौरान लोग भगवान गणेश की पूजा करते है। गणेश हिन्दू धर्म में सबसे ज्यादा पूजे जाने वाले देवता है। यह उत्सव खासतौर से महाराष्ट्र में मनाया जाता है। हालाँकि अब ये भारत के लगभग सभी राज्यों में मनाया जाने लगा है। गणेश चतुर्थी पर लोग पूरी भक्ति और श्रद्धा से ज्ञान और समृद्धि के भगवान की पूजा करते है। भगवान गणेश को बुद्धि का देवता माना जाता है। हिंदू धर्म में किसी भी नए काम को प्रारंभ करने से पहले भगवान गणेश की पूजा की जाती है। माना जाता है कि भगवान गणेश की पूजा करने के बाद प्रारंभ होने वाला कार्य हर हाल में पूरा होगा। भगवान शिव व माता पार्वती के पुत्र गणेश को विघ्नहर्ता भी कहा जाता है। गणेश चतुर्थी का त्योहार आने से दो-तीन महीने पहले ही कारीगर भगवान गणेश की मिट्टी की मूर्तियां बनाना शुरू कर देते हैं। गणेशोत्सव के दौरान बाजारों में भगवान गणेश की अलग-अलग मुद्रा में बेहद ही सुंदर मूर्तियां मिल जाती है। गणेश चतुर्थी वाले दिन लोग इन मूर्तियों को अपने घर लाते हैं। कई जगहों पर 10 दिनों तक पंडाल सजे हुए दिखाई देते हैं जहां गणेश जी की मूर्ति स्थापित होती हैं। प्रत्येक पंडाल में एक पुजारी होता है जो इस दौरान चार विधियों के साथ पूजा करते हैं। सबसे पहले मूर्ति स्थापना करने से पहले प्राणप्रतिष्ठा की जाती है। उन्हें कई तरह की मिठाईयां प्रसाद में चढ़ाई जाती हैं। गणेश जी को मोदक काफी पंसद थे। जिन्हें चावल के आटे, गुड़ और नारियल से बनाया जाता है। इस पूजा में गणपति को लड्डुओं का भोग लगाया जाता है। इस त्योहार के साथ कई कहानियां भी जुड़ी हुई हैं जिनमें से उनके माता-पिता माता पार्वती और भगवान शिव के साथ जुड़ी कहानी सबसे ज्यादा प्रचलित है। शिवपुराण में रुद्रसंहिता के चतुर्थ खण्ड में वर्णन है कि माता पार्वती ने स्नान करने से पूर्व अपने मैल से एक बालक को उत्पन्न करके उसे अपना द्वारपाल बना दिया था। भगवान शिव ने जब भवन में प्रवेश करना चाहा तब बालक ने उन्हें रोक दिया। इस पर भगवान शंकर ने क्रोधित होकर अपने त्रिशूल से उस बालक का सिर काट दिया। इससे पार्वती नाराज हो उठीं। भयभीत देवताओं ने देवर्षि नारद की सलाह पर जगदम्बा की स्तुति करके उन्हें शांत किया। भगवान शिवजी के निर्देश पर विष्णुजी उत्तर दिशा में सबसे पहले मिले जीव (हाथी) का सिर काटकर ले आए। मृत्युंजय रुद्र ने गज के उस मस्तक को बालक के धड़ पर रखकर उसे पुनर्जीवित कर दिया। माता पार्वती ने हर्षातिरेक से उस गजमुख बालक को अपने हृदय से लगा लिया।

गणेश चतुर्थी 07 सितंबर पर विशेष: गुणों के अधिपति हैं भगवान गणेश

उनकी उत्पत्ति, स्वरूप, गुण, धर्म एवं कर्म की अनेक गाथाएं भारतीय ग्रंथों में मिलती हैं। उन्हें शिव एवं पार्वती का पुत्र मानते हुए जहां कुछ विद्वान उन्हें द्रविड़ों का देवता मानते हैं, वहीं आर्यों के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद एवं यजुर्वेद में भी उनकी वंदना की गई है। गणेश जी को गुणों का स्वामी माना जाता है, इसलिए उन्हें बुद्धि का दाता कहा जाता है। उनकी पत्नियों के नाम भी बुद्धि और सिद्धि कहे गए हैं। महाभारत को लिपिबद्ध करने के बारे में एक कथा है कि वेद व्यास ने इसे बोला तथा भगवान गणेश ने लिपिबद्ध किया। तब महाभारत के श्लोकों को समझने में बुद्धि ने ही अपने पति गणेश जी की सहायता की थी। गणेश जी के दो पुत्र भी माने जाते हैं, शुभ और लाभ।

पवन कुमार वर्मा
लेखक

सर्वप्रथम पूजा के अधिकारी भगवान गणेश की उपासना, आराधना एवं पूजा भारत के कोने-कोने में होती है। शैव मत के धर्मावलम्बी उन्हें भगवान शिव का पुत्र मानते हैं तो वैष्णव एवं शाक्त मतों के धर्मावलम्बी उनकी उपासना एवं आराधना लक्ष्मी के साथ करते हैं। गणेश का शाब्दिक अर्थ होता है गुणों अर्थात समुदायों के अधिपति (अर्थात गणपति)। पर व्यावहारिक रूप में भगवान गणेश को गुणों का अधिपति माना जाता है। वे बुद्धि, विवेक, ज्ञान, कौशल, बल एवं साहस के भी देवता माने जाते हैं। गणेशजी का स्वरूप उनके गुणों का ही प्रतिनिधित्व करता है। जैसे वह मूषक (चूहा) पर सवारी करते हैं। चूहे छुपकर अनाज खाकर मानव के खाद्य पदार्थों को क्षति पहुंचाते हैं और इस तरह राष्ट्र की समृद्धि को नुकसान पहुंचाते हैं। गणेश जी की मूषक सवारी का अर्थ यह हुआ कि राष्ट्र की समद्धि को क्षति पहुंचाने वालों पर हमारा पूरा नियंत्रण होना चाहिए। गणेश के कान बड़े होते हैं।इसका अर्थ यह हुआ कि हममें सबकी बातें सुनने का गुण होना चाहिए। गणेश जी को लम्बोदर कहा जाता है, इसका अर्थ यह है कि वे सबकी बात सुनते हैं और इन बातों को उदरस्थ कर जाते हैं, पर जो भी करते हैं अपने बुद्धि और विवेक से करते हैं। गणेश जी मस्तक पर चंद्रमा धारण करते हैं, इसका अर्थ यह है कि हमें किसी बात पर विचार करते समय ठंडे मस्तक से विचार करना चाहिए। गणराज्य शब्द की उत्पत्ति भी गणेश के बहुत निकट है। पौराणिक संदर्भों के अनुसार उन्हें भगवान शिव के भक्तों का स्वामी माना गया है। गण (प्रजा) के स्वामी के रूप में उनका स्वरूप या आकृति आदर्श है। गणपति या गणेश का विशाल मस्तक उनके बुद्धिमान होने का प्रतीक है। वैसे भी हाथी को सबसे अधिक बुद्धिमान प्राणी माना गया है। गणेश जी का हाथी के समान मस्तक इस बात का प्रतीक है कि प्रजा के नायक को बुद्धिमान होना चाहिए। उनके विशाल कान इस तथ्य के प्रतीक हैं कि गणनायक को प्रत्येक बात की सूचना प्राप्त करने की कुशलता होना चाहिये। गणेश का स्वरूप चतुर्भुज है। वे एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे हाथ में मोदक, तीसरे हाथ में पुस्तक तथा चौथे हाथ में कमल का फूल धारण करते हैं। अब ये चार हाथ और उनमें धारण की गई वस्तुएं भी किसी गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। त्रिशूल का अर्थ है कि वे रक्षक हैं मोदक का अर्थ है खाद्य साम्रगी, पुस्तक का अर्थ है ज्ञान तथा कमल पुष्प का अर्थ है कोमलता। इसका सीधा अर्थ यह है कि प्रजानायक या गुणनायक को रक्षक, खाद्य पदार्थों का दाता, ज्ञान देने वाला तथा कोमल हृदय का होना चाहिए। उत्तर से लेकर दक्षिण तक तथा पूर्व से लेकर पश्चिम तक जिन गणेश जी की उपासना, आराधना एवं वंदना की जाती है तथा प्रत्येक शुभ एवं मंगल कार्य में सर्वप्रथम जिनकी पूजा की जाती है, उनकी उत्पत्ति, स्वरूप, गुण, धर्म एवं कर्म की अनेक गाथाएं भारतीय ग्रंथों में मिलती हैं। उन्हें शिव एवं पार्वती का पुत्र मानते हुए जहां कुछ विद्वान उन्हें द्रविड़ों का देवता मानते हैं, वहीं आर्यों के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद एवं यजुर्वेद में भी उनकी वंदना की गई है। गणेश जी को गुणों का स्वामी माना जाता है, इसलिए उन्हें बुद्धि का दाता कहा जाता है। उनकी पत्नियों के नाम भी बुद्धि और सिद्धि कहे गए हैं। महाभारत को लिपिबद्ध करने के बारे में एक कथा है कि वेद व्यास ने इसे बोला तथा भगवान गणेश ने लिपिबद्ध किया। तब महाभारत के श्लोकों को समझने में बुद्धि ने ही अपने पति गणेश जी की सहायता की थी। गणेश जी के दो पुत्र भी माने जाते हैं, शुभ और लाभ। गणेश सिर्फ हिन्दुओं के ही देवता नहीं हैं। जैन धर्म में भी उनकी वंदना की गई है। बौद्ध तांत्रिकों के भी वे आराध्य देव हैं। भारत के बाहर नेपाल, तिब्बत, जावा, बाली, चीन तथा जपान में भी उनकी पूजा होती रही है। गणेश जी के नाम भी अनेक हैं। पुराणों में उनके अनेक नाम मिलते हैं। गणेश सहस्त्र नाम से यह सिद्ध होता है कि उनके एक हजार नाम हैं। उनके प्रसिद्ध नामों में गणपति, वक्रतुण्ड, महाकाय, एकदन्त, गणदेवता, गणेश्वर, विनायक आदि मुख्य हैं। उनके एकदंत और गजानन होने के संबंध में पुराणों में अनेक कथाएं हैं। एक दंत होने की कथा इस प्रकार है कि एक बार परशुराम शिवजी से मिलने गए। दरवाजे पर गणेश रक्षक के रूप में बैठे थे। गणेश ने परशुराम को प्रवेश करने से रोका इस पर दोनों में विवाद हुआ और बात लड़ाई तक पहुंच गई। इस लड़ाई में परशुराम ने फरसे से प्रहार किया, जिसमें गणेश का एक दांत टूट गया। इस कारण उन्हें एकदंत कहा जाता है। गजानन के बारे में स्कन्ध पुराण की एक कथा के अनुसार एक समय पार्वती ने शनि को बुलाया कि वह गणेश को देखने आए। शनि आए तो किन्तु वे सिर नीचे करके बैठे रहे। पार्वती ने पूछा कि मेरे पुत्र को आप क्यों नहीं देख रहे हैं। शनि ने कहा कि यदि मैं इस बच्चे को देखूंगा तो इसका सिर नष्ट हो जाएगा। यह कहकर शनि ने गणेश को देखा और गणेश का सिर जलकर भस्म हो गया। इस पर ब्रह्मा ने कहा कि सबसे पहले जो प्राणी मिले उसका सिर काटकर गणेश के सिर के स्थान पर लगा दिया जाए। पार्वती को सबसे पहले हाथी मिला, जिसका सिर उन्होंने काट कर गणेश के सिर पर रख दिया। इस कारण ये गजानन कहलाए। एक दूसरी कथा के अनुसार पार्वती एक बार स्नान करने के लिए गई और अपने घर के दरवाजे पर गणेश को रक्षक के रूप में बैठा गई। इसी बीच शिवजी आए और उन्होंने घर में प्रवेश करना चाहा। गणेश ने उन्हें प्रवेश करने से रोका। इस पर क्रोध में आकर शिवजी ने गणेश जी का सिर काट दिया। जब पार्वती को पता लगा। तब शिवजी ने हाथी का सिर काटकर गणेश के सिर के स्थान पर जोड़ दिया। उनकी सर्वप्रथम पूजा होने के संबंध में भी कथाएं मिलती हैं। इस बारे में प्रचलित एक कथा यह है कि एक बार देवताओं में यह विवाद हुआ कि सर्वप्रथम किस देवता की पूजा हो। विवाद बढ़ा तो निर्णय भगवान शिव को सौंप दिया गया। भगवान शिव ने कहा कि जो देवता सबसे पहले तीनों लोकों की परिक्रमा कर लेगा, उसकी पूजा सबसे पहले होगी। सब देवता अपने-अपने वाहनों से तीनों लोकों की परिक्रमा के लिए रवाना हो गए। पर गणेशजी ने भगवान शिव की ही परिक्रमा कर डाली। भगवान शिव ने जब उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि तीनों लोक आप में ही हैं। आप की परिक्रमा का ही अर्थ है तीनों लोकों की परिक्रमा। इस उत्तर से भगवान शिव इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने गणेश जी की पूजा सर्वप्रथम करने का निर्णय दे दिया। यह कथा कुछ और स्वरूपों में भी प्रचलित है। पर निष्कर्ष यही है कि सर्वप्रथम पूजा गणेशजी की ही होती है। हर मंगल कार्य का शुभारंभ गणेश जी की पूजा से ही होता है। यात्रा का आरंभ गणेश जी का नाम लेकर किया जाता है। खाता-बहियों की शुरूआत भी श्री गणेशाय नमः से होती है और आज तो किसी काम को प्रारंभ करने को ही श्री गणेश करना कहा जाता है। ऋग्वेद के मंत्र गणनां त्वा गणपति ऊं हवामहे तथा यजुर्वेद के मंत्र नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यदा वो नमो नमः से जिन गणेश और गणपति की वंदना और आराधना शुरू हुई थी वह आज भी जारी है। बीसवीं शताब्दी में तो भगवान गणेश ने राष्ट्रीय चेतना की भावना का श्री गणेश किया था। गणेशोत्सवों ने इस देश में राष्ट्रीय चेतना की जो ज्वाला प्रज्ज्वलित की थी, वह हमारे स्वतंत्रता आंदोलन की आधारशिला बन गई थी। ऋग्वेद से लेकर आज तक भगवान गणेश अनेक गुणों को लेकर अवतरित हुए और उनकी अनंत कथाएं भी प्रचलित रहीं।

आखिर कैसे और कब बनेगा बेनीपुरी के सपनों का देश ?

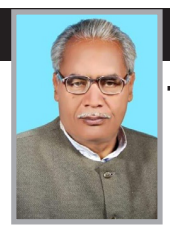

ब्रह्मानन्द ठाकुर
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार

आज सितम्बर महीने की 7 तारीख है। कलम के जादुगर पत्रकार ,साहित्यकार ,राजनेता रामवृक्ष बेनीपुरी का स्मृति दिवस। आज ही के दिन आज से 56 साल पहले इस स्वप्नदर्शी साहित्यकार और समाजवादी राजनेता बेनीपुरी का निधन हुआ था। स्वप्नदर्शी इसलिए भी कि बेनीपुरी जी जीवन पर्यंत एक ऐसी समाज व्यवस्था की स्थापना के लिए संघर्षरत रहे , जहां अंतिम पायदान पर रहे रहे लोगों को भी इंसानियत की जिंदगी जीने और सिर उठा कर चलने का अवसर मिल सके। देश में 1952 में पहला आम चुनाव हो रहा था। बेनीपुरी जी अपने गृह क्षेत्र कटरा उत्तरी विधान सभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार थे।

अपने चुनाव प्रचार के दौरान जनता से मिल रहे व्यापक समर्थन और उस दौरान अपने अनुभवों की चर्चा करते हुए बेनीपुरी जी अपने संस्मरण डायरी के पन्ने में लिखते हैं , बेनीपुरी जिंदाबाद --- ये नारे चारों ओर सुनाई पड़ते रहे, इन कई दिनों से। जब कभी मेरी मोटर को सड़क से गुजरते देखते , बच्चे चिल्ला उठते ---- बेनीपुरी जिंदाबाद !

(यदि बच्चे और मुछ -उठान नौजवानों के हाथ में वोट होते, मैं कभी का जीत गया होता)किंतु, जब -जब यह जिंदाबाद सुनता हूं , सिहर उठता हूं। यह जिंदाबाद बेनीपुरी नामक व्यक्ति का नहीं है, इतना तो समझता ही हूं। यह जिंदाबाद हैं उन सपनों का, जिन्हें आजकल मैं बिखेरता फिर रहा हूं। मैंने मित्रों से कहा है ; मैं वोट नहीं मांगता ---मै सपने बो रहा हूं।

सपने ,नये जीवन के सपने , सुंदर , स्वस्थ और सम्पन्न जीवन के सपने।

आखिर कैसा था वह सपना ? बेनीपुरी जी कैसा देश बनाना चाह रहे थे ? आइए जानते हैं बेनीपुरी जी के सपने को उन्हीं के शब्दों में। वे लिखते हैं , ह्न जब लोगों से कहता हूं , हमें एक ऐसा देश बनाना है जिसमें बच्चों के बदन पर पूरे गोश्त हों ,उनके गालों पर लाली हो , उनकी आंखों में कीचड़ और बालों में जुएं न हों, वे रंग बिरंगे वस्त्रों से आच्छादित हों , वे किलकारियां मारते हों, उछलते हैं ,कूदते हों। हमें एक ऐसा देश बनाना है ,जहां जवानों की आंखें धंसी न हो, गाल पिचके न हों, छाती सिकुड़ी न हों --- जो सक्षम हों --- चौड़ी छाती वाले , बलिष्ठ भुजाओं वाले,जो झूमते चलें तो धरती धसके और ठठाकर हंसे तो आसमान गुंजित हो उठे।

हमें एक ऐसा देश बनाना है जहां बुढापा अभिशाप न हो,सूखी टांग ,झुकी कमर ,हाथ में लाठी लिए,कंकाल ऐसे लोग जहां न दिखाई पड़ें। जहां की बच्चियां तितलियां हों , और युवतियां मधुमक्खियां। जहां की वृद्धाएं आशीर्वाद बिखेरती हों।

हां ,हमें ऐसा देश बनाना है जहां गांव में गंदगी न हो। जहां खेत में अन्न की बालियां और फलियां लहराएं।जहां किसान आसमान के गुलाम न हों ,नदियां बाढ़ से कहर न ढाएं। जहां सभी सुखी , सानन्द और सम्पन्न हों। जाहिर है ,बेनीपुरी समाजवादी समाज व्यवस्था की स्थापना के पक्षधर थे। एक ऐसी व्यवस्था जहां श्रम को प्रतिष्ठा मिले और श्रमिकों को सम्मान के साथ जीने का अवसर।मनुष्य के द्वारा मनुष्य का शोषण न हो। लेकिन इस देश को तथाकथित समाजवादियों ने ही उनके सपनों में पलीता लगा दिया। बेनीपुरी के सपनों का देश बनाने और शोषणमुक्त समाज के निर्माण के लिए सर्वहारा शोषित वर्ग को राजसत्ता पर काबिज होना पहली शर्त है। आजादी के बाद जिनपर यह जिम्मेदारी थी ,वे ही लोग आपस में फाड़ -फाड होकर आज पूंजीवाद के चाकर बने हुए हैं। ऐसे में बेनीपुरी के सपने को साकार करना एक बड़ी चुनौती है लेकिन असम्भव नहीं।

गणेश चतुर्थी विशेष: विघ्नहर्ता, शुभकर्ता गणेशजी बहुआयामी देवता हैं

ललित गर्ग

गणेश भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। प्राचीन काल से हिन्दू समाज कोई भी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न करने के लिए उसका प्रारम्भ गणपति की पूजा से ही करता आ रहा है। प्रतिकूल, अशुभ, अज्ञान एवं दुःख से परेशान मनुष्य के लिये गणेश ही तारणहार है। वे सात्विक देवता हैं और विघ्नहर्ता हैं। वे न केवल भारतीय संस्कृति एवं जीवनशैली के कण-कण में व्याप्त है बल्कि विदेशों में भी घर-कारों-कार्यालयों एवं उत्पाद केन्द्रों में विद्यमान हैं। हर तरफ गणेश ही गणेश छाए हुए है। भाद्रपद शुक्ल की चतुर्थी को सिद्धि विनायक भगवान गणेश का जन्म हुआ। गणेशोत्सव हिन्दुओं का एक उत्सव है। दरअसल गणेश सुख-समृद्धि, रिद्धि-सिद्धि, वैभव, आनन्द, ज्ञान एवं शुभता के अधिष्ठाता देव हैं। प्रथम देव होने के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है, लोकनायक का चरित्र हैं। इसलिये वे सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वदैशिक लोकप्रियता वाले देव है। गणेश के रूप में विष्णु शिव-पार्वती के पुत्र के रूप में जन्म थे। उनके जन्म पर सभी देव उन्हें आशीर्वाद देने आए थे। विष्णु ने उन्हें ज्ञान का, ब्रह्मा ने यश और पूजन का, धर्मदेव पे धर्म तथा दया का आशीर्वाद दिया। शिव ने उदारता, बुद्धि, शक्ति एवं आत्म संयम का आशीर्वाद दिया। लक्ष्मी ने कहा कि जहां गणेश रहेंगे, वहां मैं रहूंगी ह्न सरस्वती ने वाणी, स्मृति एवं वक्तृत्व-शक्ति प्रदान की। सावित्री ने बुद्धि दी। त्रिदेवों ने गणेश को अग्रपूज्य, प्रथम देव एवं रिद्धि-सिद्धि प्रदाता का वर प्रदान किया। गणेशजी की आकृति विचित्र है, किन्तु इस आकृति के आध्यात्मिक संकेतों के रहस्य को यदि समझने का प्रयास किया जाये तो सनातन लाभ प्राप्त हो सकता है। क्योंकि गणेश अर्थात शिव पुत्र अर्थात शिवत्व प्राप्त करना होगा अन्यथा क्षेम एवं लाभ की कामना सफल नहीं होगी। गजानन गणेश की व्याख्या करें तो ज्ञात होगा कि ह्यगह्न दो व्यंजनों से बना है। ह्यगह्न प्रतीक है गति और गंतव्य का तो ह्यजह्न जन्म अथवा उद्गम का प्रतीक है। अर्थात गज शब्द उत्पत्ति और अंत का संकेत देता है-जहाँ से आये हो वहीं जाओगे। जो जन्म है वही मृत्यु भी है। ब्रह्म और जगत के यथार्थ को बनाने वाला ही गजानन गणेश है। गणेश भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, वे सात्विक देवता हैं। वे न केवल भारतीय संस्कृति एवं जीवनशैली के कण-कण में व्याप्त है बल्कि विदेशों में भी घर-कारों-कार्यालयों एवं उत्पाद केन्द्रों में विद्यमान हैं। हर तरफ गणेश ही गणेश छाए हुए है। मनुष्य के दैनिक कार्यों में सफलता, सुख-समृद्धि की कामना, बुद्धि एवं ज्ञान के विकास एवं किसी भी मंगल कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने हेतु गणेशजी को ही सर्वप्रथम पूजा जाता है, याद किया जाता है।

गणेश चतुर्थी पर विशेष: प्रथम वंदनीय लोक देवता गणेश

दिनेश चंद्र वर्मा

वैदिक युग से आज तक हर मांगलिक एवं शुभ कार्य में प्रथम वंदनीय माने जाने वाले भगवान गणेश सही अर्थो में लोक देवता है। वनवासी आदिवासियों से लेकर महानगरों तक में उनकी श्रद्धा, भक्ति, आस्था एवं अटूट विश्वास के साथ पूजा-अर्चना एवं वंदना की जाती है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक उनकी आराधना होती है। वैसे भी उन्हें सर्वमान्य देवता कहा गया है। शैव सम्प्रदाय उन्हें शिव पार्वती का पुत्र मानकर पूजते हैं तो वैष्णव उनकी पूजन इसलिए करते है कि महाभारत को लिपिबद्ध भगवान गणेश ने किया था। आर्यो ने उनकी स्तुति अपने वेदों में की तो द्रविड-संस्कृति में भी गणेश पूज्यनीय रहे। यहां तक कि आदिवासियों तक में उनकी पूजा का प्रचलन है। ह्यह्नजा की रही भावना जैसीह्न के अनुसार गणेश के स्वरूप भी भिन्न-भिन्न रहे हैं। यदि प्राचीन प्रतिमाओं को देखा जाय तो कहीं दिगम्बर गणेश की प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं तो कहीं उनकी आभूषणों से सज्जित प्रतिमाएं भी मिली हैं। कहीं उनकी सूंड सामने की ओर है तो कहीं दायी और कहीं बांयी ओर। उनकी नृत्यरत प्रतिमाएं मिलती है तो वीर स्वरूप में भी प्रतिमाएं मिली हैं। कहीं उनकी शांत मुद्रा है तो कहीं वरदानी मुद्रा। वे भाषाओं की सीमाओं से भी नहीं बंध पाये हैं। वेदों और पुराणों में उनकी संस्कृत में वंदना है तो हिन्दी के भक्त कवियों ने भी उनकी वंदना की है। गोस्वामी तुलसीदास की अनेक रचनायें, जिनमें राम चरितमानस भी है, गणेशजी की वंदना से ही शुरू हुई है। भारत की हर भाषा एवं बोली में गणेश का महिमागान हुआ है। आदिवासियों के लोकगीतों में भी गणेश का स्तुतिगान है। भारतीय महिलाओं के लोकगीत विशेषकर शादी-विवाह, नामकरण एवं मुंडन के अवसर पर गाए जाने वाले गीत भी गणेश जी की स्तुति से भरे पड़े हैं। भारतीय धर्मग्रन्थों में गणेश को ओंकार आकृति का माना गया है। अर्थात वे जनक, पालक एवं संहारक तीनों है। धर्म ग्रन्थ उन्हें रक्षक भी कहते हैं। उन्हें प्रत्यक्ष ब्रह्मद मानते हुए वाड्मय, चिन्मय, सच्चिदानंद कहा गया है। उनकी वंदना में कहा गया है कि वे सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हैं। वे जागृत, स्वप्न एवं सुषप्त अवस्था से तथा स्थूल, सूक्ष्म एवं वर्तमान (तीनों देहों) से भी परे हैं। भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों से परे रहने वाले गणेश जी को मूलाधार चक्र में स्थित कहा गया है। गणेश जी की वंदना में हमारे धर्मग्रन्थ कहते हैं कि वे इच्छा, क्रिया और ज्ञान तीनों प्रकार की शक्ति है। वे ब्रह्मद्दा है, वे विष्णु है, वे रूद्र हैं, वे इन्द्र हैं, वे अग्नि हैं, वे वायु हैं, वे सूर्य हैं और वे ही चन्द्र हैं। धर्मग्रन्थों में उनका स्वरूप एकदन्त, वक्रतुण्ड (टेढ़ी सूंड) वाला बताया गया है पर वे चतुर्भुज स्वरूप में वर्णिक किए गए हैं। उनके एक हाथ में पाश, दूसरे में अंकुश है तीसरा हाथ अभय एवं वरदान की मुद्रा में है जबकि उनके चौथे हाथ में ध्वजा है। उनका वर्णरक्त है, वे रक्तवर्ण के वस्त्र तथा बड़े कानों वाले बताए गए हैं। टेढ़ी सूंड और बड़े कान उनके महाज्ञानी होने का प्रतीक है। यह इस बात का प्रतीक है कि ज्ञान तभी आता है जब सुनने के लिए कान बड़े हों तथा मौन धारण किया जाय।गणेश को जहां ज्ञान एवं बुद्धि का देवता कहा गया है वहीं रक्तवर्ण के प्रति उनका अनुराग उनके योद्धा होने का प्रतीक है। उन्हें सुख, समृद्धि एवं सम्पन्नता दायक तथा ऋण हर्ता भी कहा गया है। इसलिए धनदाता लक्ष्मी के साथ उनकी भी पूजा होती है। वे पांचों प्रकार के पातकों (पापों) से मुक्ति देने वाले कहे गए हैं। इसलिए कहा गया है कि जो प्रातः एवं सांय दोनों समय गणपति का स्मरण करता है, वह निष्पाप हो जाता है। गणपति के भोजन के बिना उनकी चर्चा अधूरी है। भारतीय धर्मग्रन्थों के अनुसार मोदक या लड्डू उनका प्रिय भोजन माना जाता है पर उन्हें दूबा (दूर्बा या हरी घास) भी चढ़ाई जाती है। आदिवासी उन्हें गन्ना या कबीट (एक प्रकार का खट्टा-मीठा जंगली फल) भी चढ़ाते हैं। इस तरह नगरों, कस्बों एवं गांवों में जहां उन्हें विभिन्न प्रकार के लड्डुओं का भोग लगाया जाता है वहीं वनवासी दूबा, गन्ना या कबीट चढ़ाकर भक्ति भाव प्रदर्शित करते हैं। वास्तविकता में यहीं पर गणेश का लोक देवता का स्वरूप प्रकट होता है। वे समृद्धों के सुस्वादु मोदकों से भी उतने ही प्रसन्न होते है, जितने कि आदिवासियों, वनवासियों और ग्राम जनों के दूबा, गन्ना और कबीट से।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com
राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
पटना, शनिवार, 07 सितम्बर, 2024

संक्षिप्त खबरें

जिला पदाधिकारी के द्वारा लोक शिकायत के 09 मामलों की सुनवाई करते हुए किया गया समाधान

छपरा कार्यालय। जिलाधिकारी अमन समीर के द्वारा आज कार्यालय कक्ष में बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 के तहत द्वितीय अपील में शिकायतों की सुनवाई की गई और शिकायत का निवारण किया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा आज लोक शिकायत के कुल 09 मामलों की सुनवाई की गई जिसमें 01 मामले में अंतिम रूप से आदेश पारित किया गया तथा शेष 08 मामले में पूर्ण प्रतिवेदन के साथ अगली तिथि पर लोक प्राधिकार को उपस्थित होने का निर्देश दिया गया। जिला पदाधिकारी अमन समीर ने कहा कि लोक शिकायतों का ससमय तथा गुणवत्तापूर्ण निवारण अत्यावश्यक है। लोक प्राधिकारों को तत्परता प्रदर्शित करनी होगी। उन्होंने कहा कि बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 का सफल क्रियान्वयन प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी पदाधिकारी इसके लिए सजग, संवेदनशील तथा सक्रिय रहें।

भूमि विवाद में सुनवाई

छपरा कार्यालय। जिलाधिकारी अमन समीर द्वारा अपर समाहर्त्ता के साथ शुक्रवार को कुल 20 आवेदकों से प्राप्त भूमि विवाद से संबंधित शिकायतों की सुनवाई की गई। सुनवाई की प्रक्रिया में 15 आवेदक उपस्थित थे। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े संबंधित अंचलाधिकारियों एवम् थानाध्यक्षों को विवाद से संबंधित सभी मामलों को निष्पादित करने हेतु आवश्यक निदेश दिया गया।

भोजपुरी रामायण के लेखक का अभिनंदन समारोह

भेल्दी। भोजपुरी भाषा में सरस रामायण लिखने वाले व्यास शिरोमणि सुखनंदन यादव का भागवत कथा सुधा स्थल उमरपुर में कथावाचक डॉ गोविंद शरण मिश्र एवं भागवत गण के द्वारा अभिनंदन समारोह आयोजित कर सम्मानित किया गया। पूर्व प्राचार्य अम्बिका राय, पूर्व मुखिया रमेश यादव, मुखिया संजीव राय डॉक्टर मनीष कुमार मणि राजेंद्र राय, वीरेंद्र उपाध्याय पूर्व मुखिया राम जन्म राय, डॉक्टर सुधांशु लाल बाबू , टीपू राय, राम अयोध्या राय युगल प्रसाद वीरेंद्र राय बैजनाथ राय कमलेश राय रामेश्वर राय वीरेंद्र सिंह आदि ने मिलकर सम्मानित किया पूर्व प्राचार्य अम्बिका राय ने कहाकि सभी भाषाओं में रामायण का लेखन हो चुका है,परंतु सुखनंदन यादव जी ने भोजपुरी में रामायण लिखकर के भोजपुरी भाषी लोगों के लिए बहुत सरल बना दिया।इसे जन जन तक पहुंचने की जरूरत है।पूर्व मुखिया रमेश यादव ने कहा कि सुखनंदन यादव का भोजपुरी के विकास में काफी योगदान है।

रक्सौल में धूमधाम से मनाया जायेगा श्री गणेश पुजनोत्सव

रक्सौल। श्री मंगल मूर्ति गणेश पूजा समिति रक्सौल बैंक रोड स्टेशन रोड नजदीक संतोष होटल यानी 6 सितंबर 2024 प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से सभी भक्त जनों को आमंत्रित किया गया है, पहले दिन 7 सितंबर 2024 शनिवार के दिन सुबह 6:00 बजे कलश स्थापना, दूसरे दिन यानी 8 सितंबर रविवार से 16 सितंबर तक वृंदावन से आए हुए मंडली द्वारा रासलीला का कार्यक्रम, 8 सितंबर से लेकर 14 सितंबर तक जागरण एवं झांकी, 17 सितंबर को 56 भोग एवं महा आरती का आयोजन किया जाएगा, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सांसद डॉ. संजय जायसवाल एवं विधायक प्रमोद कुमार सिन्हा मौजूद रहेंगे। 08 सितंबर को रक्सौल प्रखंड प्रमुख श्याम पटेल, 9 सितंबर को सभापति धुरपति देवी, 10 सितंबर को उपसभापति पुष्पा देवी मौजूद रहेंगी।

स्वास्थ्य संस्थानों में दवाओं की आपूर्ति और उपलब्धता हर हाल में होगी सुनिश्चित

- पोर्टल के माध्यम से दवा की उपलब्धता की हो रही है ऑनलाइन ट्रैकिंग
- ग्रामीण स्तर पर स्वास्थ्य केंद्रों में दवा उपलब्ध कराने के लिए विभाग संकल्पित

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। समुदाय के अंतिम पंक्ति के लोगों तक स्वास्थ्य सेवाओं को पहुंचाने के लिए स्वास्थ्य विभाग तत्पर है। सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में इलाज के साथ-साथ मरीजों को ससमय दवा भी उपलब्ध हो इसके लिए विभाग पूरी तरह से सजग है। सदर अस्पताल से लेकर जिले के ग्रामीण स्तर तक के अस्पतालों में दवाओं की निर्बाध रूप से आपूर्ति और उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा रहा है, ताकि मरीजों को बाहर की दवा नहीं खरीदना पड़े। इसको लेकर विभागीय स्तर पर तमाम प्रयास किया जा रहा है। सूबे के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने यह आदेश दिया है कि जिले के सभी स्वास्थ्य संस्थानों में लिस्ट में शामिल सभी दवाओं की उपलब्धता और आपूर्ति सुनिश्चित की जाये, ताकि मरीजों को किसी तरह की कोई परेशानी नहीं हो। विभाग ने सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में दवाओं की निर्बाध आपूर्ति और उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाए हैं, ताकि मरीजों को दवाओं के लिए बाहर की दुकानों पर निर्भर न रहना पड़े। इससे मरीजों को किसी भी तरह की दवा की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा और उन्हें समय पर इलाज मिल सकेगा।

दवाओं की ऑनलाइन ट्रैकिंग प्रणाली:

स्वास्थ्य विभाग ने दवाओं की उपलब्धता की निगरानी के लिए एक आधुनिक पोर्टल तैयार किया है डीवीडीएमएस और ईएमएमएस पोर्टल के माध्यम से जिला से प्रखंड स्तर पर दवाओं के स्टॉक की स्थिति को वास्तविक समय में ट्रैक किया जाता है। यह प्रणाली दवाओं की मांग और आपूर्ति की नियमित निगरानी सुनिश्चित करती है, जिससे किसी भी दवा की कमी को त्वरित रूप से पहचानकर उसे पूरा किया जा सके।

सभी स्वास्थ्य संस्थानों में दवाओं की उपलब्धता:

सिविल सर्जन डॉ. सागर दुलाल ने बताया कि बताया कि सीएचसी-पीएचसी के आउटडोर व इनडोर में 309 प्रकार की दवाएं जबकि अनुमंडलीय अस्पताल में 312 तरह की दवाएं राज्य स्वास्थ्य समिति की ओर से उपलब्ध कराई जाती है। स्वास्थ्य विभाग ने यह सुनिश्चित किया है कि जिले के सभी सरकारी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में दवाओं की सही मात्रा और गुणवत्ता उपलब्ध हो। इसके लिए दवाओं की नियमित आपूर्ति, स्टॉक की निगरानी और आपातकालीन स्थितियों में त्वरित व्यवस्था की गई है। विभाग ने दवाओं के प्रबंधन और वितरण की प्रक्रिया को और भी सशक्त बनाने के लिए कई सुधारात्मक उपाय किए हैं। इस पहल का उद्देश्य समुदाय के अंतिम पंक्ति के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है। विभाग का मानना है कि यदि मरीजों को समय पर दवा उपलब्ध होगी, तो इससे न केवल उनकी स्वास्थ्य स्थिति में सुधार होगा, बल्कि स्वास्थ्य सेवा पर उनका विश्वास भी बढ़ेगा। स्वास्थ्य विभाग की इस नई पहल से यह स्पष्ट होता है कि सरकार स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और पहुंच को सुधारने के लिए कितनी गंभीर है। इस प्रयास से मरीजों को बेहतर और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकेंगी और सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों पर उनका विश्वास मजबूत होगा।

अब स्वास्थ्य संस्थानों में ओपीडी काउंटर पर बनेगा आयुष्मान कार्ड

- स्कैन एंड शेयर के डाटा ऑपरेटरों को दी गयी जिम्मेदारी
- घर बैठे मोबाइल एप से बना सकते हैं आयुष्मान कार्ड

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। अब जिले के सदर अस्पताल समेत सभी अनुमंडलीय अस्पताल, रेफरल अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में ओपीडी के काउंटर पर पात्र लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाया जायेगा। इसकी जिम्मेदारी स्कैन एंड शेयर के ऑपरेटरों को जिम्मेदारी दी गयी है। इसको लेकर सिविल सर्जन डॉ. सागर दुलाल सिन्हा ने पत्र जारी किया है। जिसमें स्कैन एंड शेयर के ऑपरेटरों को आदेश दिया गया है कि स्वास्थ्य संस्थानों में ओपीडी के उपरांत समय 2 बजे से 5 बजे तक प्रतिदिन (अवकाश छोड़कर) पात्र लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाना सुनिश्चित करें। यह पहल स्वास्थ्य सेवाओं के बेहतर वितरण और पात्र व्यक्तियों को स्वास्थ्य बीमा सुविधाएं प्रदान करने के लिए की गई है। इस कदम से लाभार्थियों को आसानी से सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ मिलेगा और उन्हें स्वास्थ्य सेवाओं में कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

मोबाइल से घर बैठे बना सकते है आयुष्मान कार्डः

आयुष्मान भारत के जिला आईटी मैनेजर अभिनय कुमार ने बताया कि आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना के पात्र लाभार्थी आयुष्मान एप्प के माध्यम से घर बैठे भी आयुष्मान कार्ड बना सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित प्रक्रिया को फॉलो करना पड़ेगा।

प्ले स्टोर से आयुष्मान एप्प डाउनलोड करें।
बेफिक्री लिस्ट में अपना नाम ढूंढें।
आधार ऑड कर अन्य डिटेल्स भरें।
अपना आयुष्मान कार्ड डाउनलोड करें।

5 लाख रुपए तक का सलाना निःशुल्क इलाजः

आयुष्मान भारत के डीपीसी नीरज कुमार ने बताया कि आयुष्मान कार्ड धारक साल में पांच लाख खर्च तक इलाज निःशुल्क करा सकता है। हालांकि किसी भी व्यक्ति के पास राशन कार्ड है, तो उसके परिवार के सभी सदस्यों को आयुष्मान भारत के तहत इलाज का लाभ मिलेगा। प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना की सूची में अगर किसी का नाम नहीं होगा, तो उस राशन कार्ड धारी का सीएम आरोग्य योजना के तहत कार्ड बनाया जाएगा। इस कार्ड के माध्यम से 5 लाख तक का निःशुल्क इलाज करवा सकते हैं। इलाज करवाने के लिए चिन्हित अस्पतालों में आपको जाना होगा। जहां आयुष्मान कार्ड दिखाने के बाद आपका इलाज हो जाएगा. इलाज के दौरान किसी प्रकार का शुल्क आपसे नहीं लिया जाएगा।

सारण के 9 राष्ट्रीय हैंडबॉल खिलाड़ी पटना में राज्य खेल सम्मान समारोह में हुए सम्मानित

- वर्ष 2023 - 24 की उपलब्धि के लिए मिला सम्मान

प्रात : किरण, संवाददाता

बिहार राज्य खेल विभाग द्वारा आयोजित खेल सम्मान समारोह में गुरुवार को पटना के ज्ञान भवन में सारण जिला से हैंडबॉल के 9 खिलाड़ियों को बिहार सरकार के खेलमंत्री सुरेन्द्र मेहता ने सम्मानित किया। जिसमे 6 महिला एवम 3 पुरुष खिलाड़ी थे जिन्होंने वर्ष 2023 - 24 में आयोजित हैंडबॉल के राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण , रजत एवम कांस्य पदक प्राप्त कर सारण एवम बिहार का नाम रौशन किया था। सम्मान समारोह में उपस्थित बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के डीजी रवींद्रन शंकरण ने खिलाड़ियों को बेहतर परिणाम एवम पदक के साथ हमेशा रहने के लिए उत्साहित किया। सारण जिला हैंडबॉल संघ के सचिव सह प्रशिक्षक संजय कुमार सिंह ने बताया कि हैंडबॉल में सारण के खिलाड़ी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पदक प्राप्त कर सारण को गौरवान्वित करते है । गत वर्ष पांच हैंडबॉल खिलाड़ी को राज्य खेल सम्मान मिला था इस वर्ष संख्या दुगुना है।

पुरस्कार पाने वाले खिलाड़ियों में मशरक के पांच एवम बनियापुर के चार खिलाड़ी शामिल है। सम्मानित होने वालो में मशरक के गोपालबारी गांव निवासी गणेश सिंह के पौत्र अभिषेक कुमार सिंह , मशरक मुख्यालय अवस्थित राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्रा दीपशिखा कुमारी , शबाना खातून , छात्र अनिकेत यादव एवम राजा कुमार सिंह , बनियापुर के बड़ा लौवा गांव अवस्थित संत जलेश्वर एकेडमी की छात्रा निधि कुमारी , तृप्ति कुमारी , मुस्कान कुमारी एवम पम्मी कुमारी है। सभी खिलाड़ियों को प्रशस्ति प्रमाण पत्र , प्रतीक चिह्न के साथ पदक के अनुसार निर्धारित मोटी रकम के पुरस्कार राशि का प्रतिकात्मक चेक मंच से मिला। हालांकि पुरस्कार राशि बैंक ट्रांसफर के माध्यम से खिलाड़ियों के बैंक खाता में आएगा। सम्मान समारोह के नजदीक मौजूद बिहार हैंडबॉल संघ के महासचिव ब्रजकिशोर शर्मा एवम अध्यक्ष पंकज कुमार ने खिलाड़ियों को बधाई दी । इधर सारण हैंडबॉल खिलाड़ियों के ऐतिहासिक प्रदर्शन पर सारण हैंडबॉल के संरक्षक सह बिहार हैंडबॉल के चेयरमैन विधान पार्षद इंजीनियर सच्चिदानंद राय, जिला खेल पदाधिकारी मो शमीम अंसारी , सचिव संजय कुमार सिंह, अध्यक्ष कृष्णमोहन सिंह , चेयरमैन डा हरेंद्र सिंह , उपाध्यक्ष मुखिया अजीत सिंह , जितेन्द्र सिंह , राकेश कुमार सिंह , कोषाध्यक्ष प्रिंस कुमार ,संयुक्त सचिव सच्चिदानंद ओझा , रितेश कुमार सिंह , मनोकामना सिंह के अलावे प्राचार्या अनुपमा मिश्रा, प्रधानाध्यापक मुकेश कुमार , ठाकुर विनोद सिंह अप्पू जी, यशपाल सिंह , सुजीत कुमार किशोर कुणाल , पंकज सिंह , शक्ति सिंह , कुमार कौशलेंद्र , विनय पंडित, आकाश कुमार , अंजली कुमारी , पुष्पा कुमारी सहित अन्य ने बधाई दी।

अनियंत्रित ट्रक ने बाइक सवार को रौदा, पंचायत सचिव की मौत,दूसरा जख्मी

प्रात : किरण, संवाददाता

भेल्दी। भेल्दी बाजार में एक अनियंत्रित ट्रक ने बाइक सवार को रौंद दिया जिससे एक की मौत हो गई जबकि दूसरा गंभीर रूप से जख्मी हो गया।मृतक अरविन्द राय उर्फ जयराम राय(56) दरियापुर थाने के दरिहारा चतुर्भुज गांव का बताया जाता है।वहीं घायल राजेश्वर सहनी परसा थाने के परसादी गांव के है।मृत अरविन्द राय पंचायत सचिव जो छपरा सदर ब्लाक में थे। मिली जानकारी के अनुसार दरियापुर थाने के दरिहारा चतुर्भुज गांव के पंचायत सचिव अरविन्द राय उर्फ जयराम राय अपने करीबी परसा थाने के परसौना निवासी राजेश्वर सहनी के साथ बाइक पर सवार होकर छपरा सदर ब्लाक में जा रहे थे।दोनों बाइक लेकर जैसे ही भेल्दी चौक के समीप पहुंचें कि अनियंत्रित ट्रक ने पीछे से रौंद दिया जिससे दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए। दोनों को इलाज के लिए गड़खा सीएचसी लाया गया जहां पंचायत सचिव अरविन्द राय को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया।घटना के बाद ट्रक चालक भागने की कोशिश की मगर लोगों ने पकड़कर पुलिस को सौंप दिया।चालक पुलिस हिरासत में हैं जिसे पुलिस पुछ-ताछ कर रही है। पंचायत सचिव की मौत के बाद परिजनों में मचा कोहराम पंचायत सचिव अरविन्द राय उर्फ जयराम राय की मौत की खबर सुनते ही परिजनों में चीख-पुकार मच गई। पत्नी छठिया देवी अपने पति का शव देखते ही मूर्छित होकर गिर पड़ी। वह जब भी होश में आती अपने पति के शव से लिपटकर रोने लगती।पुत्र बोलबम व पुत्री रंजू,संजू व संगीता का रो-रोकर बुरा हाल था।उनकी मौत के बाद दरिहारा चतुर्भुज गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेजा भेल्दी पुलिस ने मृत पंचायत सचिव अरविन्द राय उर्फ जयराम राय के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल छपरा भेज दिया।पुलिस ने परिजनों का बयान दर्ज कर प्राथमिकी दर्ज करने में जुट गई है।

इसुआपुर में ट्रैक्टर के धक्के से युवक की हुई मौत

प्रात : किरण, संवाददाता

इसुआपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के बंगरा गांव स्थित पुल के पास शुक्रवार को ट्रैक्टर के धक्के से एक युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान सुम्हां गांव के मोहन कुशवाहा के 20 वर्षीय पुत्र प्रभात कुमार कुशवाहा के रूप में हुई है। वहीं इस दुर्घटना में उसी गांव के शत्रुघ्न कुशवाहा के पुत्र सोनू कुमार भी घायल हो गए हैं। जिनका उपचार सीएचसी इसुआपुर में चल रहा है। ट्रैक्टर उसी गांव के मोखतार पड़ित की बताई जा रही है। घटना की सूचना मिलने पर अपर थानाध्यक्ष कुंदन कुमार ने वहां पहुंचकर लाश को अपने कब्जे में ले लिया तथा पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल छपरा भेज दिया। मृतक तीन भाई बहनों में सबसे बड़ा था। पिता राजमिस्त्री का काम कर परिवार का भरण पोषण करते हैं। अब बड़े बेटे प्रभात के भी कंधों पर परिवार की ज़िम्मेदारी आ पड़ी थी। मृतक के पिता मोहन कुशवाहा तथा माता लक्ष्मी देवी बेटे के लाश को देखकर बार-बार बेसुध होकर गिर पड़ते थे। वहीं मृतक के छोटे भाई आकाश, छोटी बहन पूनम तथा परिजनों के रुदन क्रंदन से गांव का माहौल गमगीन हो गया था। युवक की मौत की खबर जैसे ही लोगों को लगी गांव में भारी भीड़ इकट्ठी हो गई। महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल , प्रखंड प्रमुख मितेंद्र प्रसाद यादव, स्थानीय रामचौरा पंचायत के मुखिया संजय रजक, सरपंच पति विजय सिंह, बीडीसी राजेंद्र यादव, रमेश राय, नितेश सिंह, शिक्षक सुनील राम, सुधीर राम व अन्य ने पहुंचकर शोक संतप्त परिजनों का ढ़ाढस बंधाया तथा अपनी गहरी शोक संवेदना व्यक्ति की।

सियालदह -गोरखपुर-सियालदह विशेष गाड़ी के संचलन का हुआ विस्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्रियों की होने वाली अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुये 03131/03132 सियालदह-गोरखपुर-सियालदह विशेष गाड़ी का संचलन सियालदह से 05, 07, 12, 14, 19, 21, 26, 28 अक्टूबर तथा 02, 04, 09, 11, 16, 18, 23, 25 एवं 30 नवम्बर, 2024 को तथा गोरखपुर से 06, 08, 13, 15, 20, 22, 27, 29 अक्टूबर, 03, 05, 10, 12, 17, 19, 24, 26 तथा 01 दिसम्बर, 2024 को 17 फेरों के लिए किया जायेगा। गाड़ी सं-03131 सियालदह-गोरखपुर विशेष गाड़ी सियालदह से 18.15 बजे प्रस्थान कर बर्धमान से 20.05 बजे, दुर्गापुर से 20.57 बजे, आसनसोल से 21.35 बजे, चितरंजन से 22.05 बजे, मधुपुर से 22.42 बजे, जसीडीह से 23.17 बजे, झाझा से 23.55 बजे, दूसरे दिन किऊल से 00.52 बजे, मोकामा से 01.27 बजे, बख्तियारपुर से 02.00 बजे, पटना से 03.35 बजे, पाटलिपुत्र से 04.10 बजे, छपरा से 06.30 बजे, सीवान से 07.15 बजे तथा देवरिया सदर से 08.22 बजे छूटकर गोरखपुर 10.10 बजे पहुंचेगी। वापसी यात्रा में गाड़ी सं-03132 गोरखपुर-सियालदह विशेष गाड़ी गोरखपुर से 11.30 बजे प्रस्थान कर देवरिया सदर से 13.25 बजे, सीवान से 14.40 बजे, छपरा से 16.05 बजे, पाटलिपुत्र से 19.25 बजे, पटना से 20.05 बजे, बख्तियारपुर से 20.55 बजे, मोकामा से 21.38 बजे, किऊल से 22.12 बजे, झाझा से 23.55 बजे, दूसरे दिन जसीडीह से 00.30 बजे, मधुपुर से 01.00 बजे, चितरंजन से 01.42 बजे, आसनसोल से 02.27 बजे, दुर्गापुर से 03.07 बजे तथा बर्धमान से 04.12 बजे छूटकर सियालदह 06.25 बजे पहुंचेगी। इस गाड़ी में शयनयान श्रेणी के 16 तथा एस.एल.आर.डी. के 02 कोचों सहित कुल 18 कोच लगाये जायेंगे।

नगरा में सीएसपी संचालक से कट्टे के बल पर एक लाख 27 हजार रुपए, बाइक और मोबाइल लूटकर हुए फरार

प्रात : किरण, संवाददाता

नगरा। प्रखंड क्षेत्र के बन्नी गांव के समीप में गुरुवार की रात हुई लूटपाट की घटना के संबंध में खैरा थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। इस घटना में खैरा थाना के छोटा तकिया गांव के सीएसपी संचालक सुरेंद्र कुमार से 1.27 लाख रुपये नकद, मोबाइल और बाइक की लूट हुई थी।घटना के बारे में बताया जा रहा है कि नगरा एसबीआई में शाम को सीएसपी संचालकों की बैठक के बाद सुरेंद्र कुमार अपने साथी के साथ बाइक से घर लौट रहे थे।इसी दौरान बन्नी गांव के समीप दो बाइक पर सवार चार अपराधियों ने उन्हें ओवरटेक किया और कट्टा दिखाकर लूटपाट की।अपराधी लूट के बाद नगरा की ओर फरार हो गए। सूचना मिलते ही नगरा थाना, खैरा थाना पुलिस टीम घटना स्थल पर पहुंचीं, लेकिन दोनों थाने की सीमा को लेकर विवाद करते रहे।इसी दौरान पीड़ित सुरेंद्र कुमार वरिष्ठ अधिकारियों के आने का इंतजार कर रहे थे।करीब 10 बजे के बाद रात को एएसपी राजकिशोर सिंह और इंस्पेक्टर किरण शंकर मौके पर पहुंचे और खैरा थाना में प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया।प्राथमिकी दर्ज होने के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।खैरा थाना प्रभारी अनिमा राणा ने कहा कि वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है,और जल्द ही अपराधियों को गिरफ्तार किया जाएगा।

पति की लंबी आयु को लेकर सुहागिनों ने तीज व्रत पर की पूजा-अर्चना

मशरक मशरक के नगर पंचायत और प्रखंड क्षेत्र के गांवों में हरितालिका तीज व्रत महिलाओं के द्वारा सामूहिक रूप से पूरी श्रद्धा एवं उन्मुक्त हृदय से मनाया गया। इस दौरान तीज व्रत कर रहे सुहागिन महिलाएं पूरे दिन भर निर्जला उपवास रहकर दूसरे दिन शनिवार की सुबह अपने पति के हाथों से जल ग्रहण कर उपवास तोड़ेंगी। इस अवसर पर महिलाओं ने पूजा अर्चना कर व व्रत कथा का श्रवण कर भगवान शिव की स्तुति की। थाना परिसर स्थित राम-जानकी शिव मंदिर में पूजा करा रहे आचार्य टुन्ना बाबा ने बताया कि भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए माता पार्वती ने वन में रहकर तपस्या की थी। इस व्रत को करने से पति की लंबी आयु तथा महिलाओं के प्रति दीघार्यु होने के साथ-साथ व्रत कर्ता महिलाओं के सभी इच्छाएं की पूर्ति होती है।

तरैया के आदित्य इंटरप्राइजेज दुकान में लगा प्रीपेड स्मार्ट मीटर

तरैया। तरैया बाजार में शुक्रवार को भूतनाथ चौक स्थित पवन कुमार सिंह के आदित्य इंटरप्राइजेज दुकान में प्रीपेड स्मार्ट मीटर लगाने के कार्य का शुभारंभ जेई पंकज कुमार ने वैदिक पुजन के साथ किया।जेई ने बताया की पहले शहरी क्षेत्र में प्रीपेड स्मार्ट मीटर लगाया जाएगा।जिसके तहत आदित्य इंटरप्राइजेज में मीटर लगाकर शुभारंभ किया गया।जेई ने बताया की प्रीपेड स्मार्ट मीटर लगाने के बाद पहले से जो बिजली बिल बकाया होगा।उसे दस महीनों में जमा करना है।बिजली जलाने के लिए स्मार्ट मीटर को रिचार्ज करना होगा।तरैया बाजार पर सबसे पहले स्मार्ट मीटर लगवाने वाले दुकानदार को जेई ने मिठाई खिलाकर मुंह मीठा करवाया।प्रीपेड मीटर लगाने के दौरान जेई ने कहा कि सभी लोग अपने अपने घरों और प्रतिष्ठानों में स्मार्ट मीटर जरूर लगवाए।उक्त मौके पर अडानी डिविजन हेड मुकेश कुमार,सब डिवीजन हेड शिशुपाल,तरैया विद्युत कर्मी रौशन कुमार,राकेश कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

इंडो नेपाल सीमा पर रही तीज की धूम नेपाली महिलाओं ने नृत्य गान कर के मनाई पर्व

बगहा। नसीम खान क्या इंडो नेपाल सीमावर्ती नेपाली महिलाओ के द्वारा नाच गाकर मनाया गया तीज का त्यौहार। भाद्र शुक्ल तृतीया के दिन मनाया जाने वाला हरितालिका तीज पर्व पर नेपाली महिलाओ द्वारा सर्वप्रथम सोमवार को नजदीक के शिवालय में पूजा अर्चना किया गया। इसके पश्चात महिलाए त्रिवेणी तथा रानीनगर स्थित शिव मंदिर में इकट्ठा हो सामूहिक रूप से तीज के गीत पर नृत्य किया गया। जिसको देखने के लिए हजारों की संख्या में लोगों की भीड़ जुटी । नेपाली महिलाओ द्वारा गांव घर में हुई घटना को गीत के रूप में पिरोकर अपने ही गीतों पर नृत्य कर दर्शकों को झूमने के लिए मजबूर कर दिया गया। तीज पर्व के बारे में त्रिवेणी के ज्योतिषाचार्य जगदीश उपाध्याय बताते है की महिलाओं के द्वार भाद्र शुक्ल तृतीया में व्रत रख शिव पार्वती की पुजा, उपासना करने से उन्हे पारिवारिक सुख शांति व कल्याण की प्राप्ति होती है। सतयुग में हिमालय पुत्री पार्वती के द्वारा महादेव को अपने पति के रूप में प्राप्त करने का वरदान के विश्वास में ये व्रत शुरू हुआ पौराणिक मान्यता है। थरुहट में भी तीज हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

थरुहट क्षेत्र स्थित गांवों की महिलाओं ने भी तीज पर्व परम्परागत तरीके से मनाई। तीज के मौके पर घर के आंगन और द्वार को लीपकर पूरे विधिवत तरीके से परम्परा के अनुसार पूजार्चना कर गीत गाकर मनाई गई। महिलाओं ने परंपरागत परिधान में नए वस्त्र धारण कर नृत्य गान कर तीज पर्व पूरे हर्षोउल्लास के साथ मनाया।

सभी सरकारी विद्यालयों को सुविधायुक्त बनाने के लिये आधारभूत संरचनाओं का प्राथमिकता से होगा निमार्ण:जिलाधिकारी

अतिरिक्त वर्गकक्ष निर्माण,शौचालय निर्माण एवं मरम्मती, शुद्ध पेयजल (बोरिंग) से संबंधित योजनाओं का क्रियान्वयन कर जनवरी 2025 तक करें पूर्ण

- सभी कार्यों को स्थानीय क्षेत्र अभियंत्रण संगठन 1 एवं 2, भवन प्रमंडल, लोकस्वास्थ्य प्रमंडल तथा बिहार शिक्षा परियोजना के माध्यम से क्रियान्वित कराया जायेगा

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। राज्य सरकार द्वारा निर्धारित प्राथमिकता के आधार पर सभी सरकारी विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाने हेतु लगातार कार्य किया जा रहा है। इस उद्देश्य से सारण जिला के विद्यालयों में अतिरिक्त वर्गकक्ष निर्माण, शौचालयों का निर्माण एवं मरम्मती, शुद्ध पेयजल की व्यवस्था के लिये लगभग 2500 योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इन योजनाओं का कार्य तेजी से पूरा हो इसके लिये विभिन्न तकनीकी विभागों के सहयोग से इनका क्रियान्वयन कराया जायेगा। भवन प्रमण्डल, एलएईओ-1 एवं 2, पीएचईडी तथा बिहार शिक्षा परियोजना के बीच योजनाओं का बंटवारा कर क्रियान्वित कराया जा रहा है। जिलाधिकारी अमन समीर ने आज शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों एवं संबंधित तकनीकी विभाग के अभियंताओं के साथ बैठक किया। बताया गया कि पेयजलापूर्ति से संबंधित सभी 476 योजनाओं का क्रियान्वयन पीएचईडी द्वारा किया जाना है। कार्यपालक अभियंता पीएचईडी को एक सप्ताह के अन्तर्गत सभी योजनाओं की निविदा प्रकाशित कराकर क्रियान्वित कराने को कहा गया। अतिरिक्त वर्गकक्ष निर्माण एवं नये शौचालय निर्माण की योजनाओं का क्रियान्वयन भवन प्रमण्डल एवं एलएईओ 1 एवं 2 द्वारा कराया जायेगा। शौचालय मरम्मती की योजनाओं का क्रियान्वयन बिहार शिक्षा परियोजना के माध्यम से कराया जायेगा। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित कार्यकारी विभागों के कार्यपालक अभियंताओं को एक सप्ताह के अंतर्गत सभी योजनाओं की निविदा प्रकाशित कराकर त्वरित अग्रेतर कार्रवाई सुनिश्चित करने का निदेश दिया। सभी योजनाओं का कार्य 31 जनवरी 2025 तक पूरा करने का स्पष्ट रूप से लक्ष्य निर्धारित किया गया। बैठक में परिक्ष्यमान सहायक समाहर्त्ता, जिला शिक्षा पदाधिकारी, कार्यपालक अभियंता भवन/एलएईओ/पीएचईडी एवं बिहार शिक्षा परियोजना के अभियंता उपस्थित थे।

सारण खेल महोत्सव 2024 के सफल छात्रों को किया गया पुरस्कृत

मुख्य अतिथि ने मार्च पास्ट के उपरांत बैलून उड़ाकर नशा मुक्ति का दिया सन्देश

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा:शिक्षा के अलावा बच्चों में खेल को बढ़ावा देने के लिए परसा थाना क्षेत्र के एसटी मिशन इंटरनेशनल स्कूल के तत्वधान में सारण खेल महोत्सव 2024 के तहत जिलास्तरीय चयनित खिलाड़ियों के बीच पुरस्कार वितरण सह गुरु सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।इसका उद्देश्य विभिन्न खेलों को बढ़ावा देना और बच्चों का विकास करना है।इस दौरान विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। जिसमें सारण जिला के 51 प्राइवेट स्कूल से 800 छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।कार्यक्रम के पूर्व सभी अतिथियों व छात्र छात्राओं के द्वारा एसटी मिशन इंटरनेशनल स्कूल से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परसा तक मार्च पास्ट किया गया।इसके उपरांत मुख्य अतिथि अवकाश प्राप्त बीडीओ रजत किशोर सिंह,पूर्व प्राचार्य अम्बिका राय,चैयरमैन प्रतिनिधि मो करमुल्लाह,प्राचार्य राजा राम दास,बलिराम दास,समाजसेवी तूफान सिंह,शैलेश कुमार,राजेश कुमार,रजनीश कुमार,सुनील कुमार साह,अनीश कुमार,पप्पू कुमार सिंह,सरपंच संघ अध्यक्ष विजय कुमार गुप्ता,डॉ शशिभूषण कुमार,डॉ अजय सिंह ने संयुक्त रूप से हवा में बैलून उड़ाकर नशा मुक्ति,वृक्ष बचाओ,स्वच्छता व पौधरोपण का संदेश दिया।तदोपरांत कार्यक्रम का शुभारंभ दिप प्रज्वलित कर किया गया।यह तीन दिवसीय जिलास्तरीय खेल महोत्सव छ सितंबर से आठ सितंबर तक आयोजित है।

कार्यक्रम के प्रथम दिन पांच विद्यालय में एसटी मिशन इंटरनेशनल स्कूल परसा,सनराइज पब्लिक स्कूल माड़र,आर एन मिशन स्कूल बनौता ,सनराइज पब्लिक स्कूल अमनौर के दर्जनों छात्र छात्राओं ने क्विज प्रतियोगिता,गीत संगीत प्रतियोगिता,विज्ञान प्रदर्शनी प्रतियोगिता में भाग लिया।इसके पूर्व निदेशक राजाराम दास के नेतृत्व में शिक्षक रजनीश कुमार मिश्रा,सुनील कुमार साह,अखिलेश सिंह,राजेश कुमार,बलिराम दास,मिथलेश कुमार,शैलेश कुमार,तूफान कुमार सिंह ने आगत अतिथियों को बुके,पुष्पमाला देकर स्वागत किया।वही विद्यालय की छात्राओं में रूही,आशिया,छोटी,सुरुचि, प्रांशी,ऐश्वर्या कुमारी आदि ने स्वागत गान से कार्यक्रम की प्रस्तुति की।जबकि क्विज प्रतियोगिता में नव छात्र छात्राओं ने भाग लिया।इस दौरान मौजूद सैकड़ों प्रतिभागी छात्रों को मोमेंटो मेडल देकर सम्मानित किया गया।इस मौके पर सारण खेल महोत्सव के निदेशक राजाराम दास ने बताया कि सभी प्राइवेट विद्यालय में शिक्षा के साथ ही खेलों को भी बढ़ावा दिया जाता है।इसके लिए पूरे वर्ष बच्चे खेलकूद में हिस्सा लेते रहते हैं। छात्र अपनी रुचि के हिसाब से खेल का चयन करते हैं। छात्रों को एक मंच प्रदान करने के लिए वार्षिक खेल में सारण खेल महोत्सव का आयोजन किया जाता है।हमारा प्रयास बच्चों का समुचित विकास करना रहता है।इसके लिए समय-समय पर कई कार्यक्रमों के आयोजन होते रहते हैं।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण
पटना, शनिवार, 07 सितम्बर, 2024

बिहार स्टार्टअप मे स्वीकृत हुआ भोजपुर का पहला हेल्थकेयर स्टार्टअप आइडिया, स्वचिकित्सा और स्वरोजगार मुहैया कराना उदेश्य : डॉ पी पुष्कर

प्राकृतिक चिकित्सा एक्यूप्रेशर-योग, डाइट एवं डिटॉक्स बना स्टार्टअप बिहार का हिस्सा : डॉ पी पुष्कर

प्रात : किरण संवाददाता

आराःशुरूआती बीमारी को गंभीर और असाध्य बनने से पहले रोकने पर कर रहे हैं कई वर्षों से काम

वर्ष 2009 से प्राकृतिक चिकित्सा पर काम कर रहे भोजपुर के प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक पिंटू पुष्कर के आइडिया को बिहार स्टार्टअप के अन्तर्गत चुन लिया गया है, डा पुष्कर ने बताया कि बिहार स्टार्टअप का हिस्सा बनने के बाद प्राकृतिक चिकित्सा को राष्ट्रीय स्तर पर घर-घर में पहुंचाना आसान हो जाएगा तथा प्राकृतिक चिकित्सको को काम करने का सकारात्मक माहौल बनेगा आज के समय में कोई ऐसा घर नहीं है जिसमें 100% लोग स्वस्थ हैं सभी पीड़ित व्यक्ति का रुझान वर्तमान समय में प्राकृतिक चिकित्सा पर बढ़ा है वह अंग्रेजी दवाइयां से दूरी बनाना चाहते हैं ऐसे में प्राकृतिक चिकित्सकों के लिए एक बड़ा अवसर है शुरूआती बीमारी पर काम करने वाली पहली स्टार्टअप है जो प्राकृतिक चिकित्सा करने के लिए युवाओं को प्रशिक्षण देकर स्वःरोजगार के लिए तैयार करते हैं ताकि पीड़ितों को प्राकृतिक चिकित्सा का लाभ मिल सके हमारा उद्देश्य भारत के हजारों युवाओं को प्रशिक्षित कर स्वस्थ भारत निर्माण में योगदान देना चाहते हैं प्रशिक्षित युवाओं को प्राकृतिक चिकित्सा में उपयोग होने वाली सभी औषधीय के घरेलु इस्तेमाल पर जागरूकता पर बल देना प्राथमिकता होगा जानते हैं बिहार स्टार्टअप मे स्वीकृत हुआ भोजपुर का पहला हेल्थकेयर स्टार्टअप आइडिया जो स्व चिकित्सा और स्व रोजगार मुहैया कराना उदेश्य है कैसे अलग है

प्रश्न :-आपका स्टार्टअप किस प्रॉब्लम एरिया पर काम कर रहा है

उत्तरः-लोगों में जागरूकता के कमी या प्रशिक्षण के अभाव में बीमारी के लक्षणों को समझ नहीं पाने के कारण शुरूआती बीमारी गंभीर और असाध्य बन जाती है जिससे पूरे जीवन रोग के दर्द और दवा में गुजारना मजबूरी हो जाती है ऐसे में हमारा स्टार्टअप प्राकृतिक चिकित्सा एक्यूप्रेशर-योग, डाइट एवं डिटॉक्स के प्रशिक्षण द्वारा स्वः चिकित्सक बनाकर लक्षण को बीमारी बनने से पहले ही ठीक कर रही है ताकि स्वस्थ जीवन जिया जा सके

प्रश्न :- आपके स्टार्टअप में नयापन या यूनीकनेस क्या है

उत्तरः- 1. घर के एक व्यक्ति को स्वःचिकित्सक बनाना जिससे घर के स्वस्थ और अस्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ बनाए जा सके

2. हेल्थ इंडस्ट्रीज में प्राकृतिक चिकित्सा मे रुझान काफी बढ़ा है ऐसे में प्राकृतिक चिकित्सा में थैरेपिस्टों की बहुत कमी है प्रशिक्षण के बाद थैरेपिस्ट बन कर प्राकृतिक चिकित्सा कि सेवा करके प्रतिदिन हजारो कमा सकते हैं

3. हमारा फोकस बीमारी के लक्षणों को ठीक कर के गंभीर बीमारी बनने से पहले ही ठीक करना है इसलिए पीड़ितों के साथ स्वस्थ व्यक्ति पर काम करने वाली पहली संस्था है

4. स्वःचिकित्सक और थैरेपिस्ट को लाइफ टाईम हैंड-होल्डिंग सपोर्ट देना

5. हम पहले स्टार्टअप है जो शरीर के अलग-अलग अंगों को प्राकृतिक तरीके से डिटॉक्सिफिकेशन यानी सर्विसिंग करके अंगों के अंदर के टॉक्सिंस को बाहर निकाल कर स्वस्थ जीवन जीने मे सहयोग दे रहे हैं

गुरू वंदना के साथ शुरू हुआ जयंती समारोह छात्र छात्राओं ने लिया अपने गुरू का आशीर्वाद

प्रात : किरण संवाददाता

गडहनी। भोजपुर जिले के गडहनी प्रखण्ड अन्तर्गत मध्य विद्यालय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय काउप मे शिक्षक दिवस के अवसर पर डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ गुरू वंदना के साथ किया गया।इस विशेष अवसर पर छात्रों ने पूरी योजना बनाकर शिक्षकों के लिए कई अनोखे सरप्राइज प्रस्तुत किए, जिससे पूरे दिन का माहौल जीवंत और उत्सवपूर्ण हो गया।कार्यक्रम की शुरूआत तब खास बन गई जब छात्र शिक्षक के रूप में तैयार होकर स्कूल पहुंचे। वरिष्ठ छात्रों ने जूनियर कक्षाओं की जिम्मेदारी संभालते हुए शिक्षकों की भूमिका निभाई। इस अद्वितीय अनुभव ने न केवल उन्हें शिक्षण के प्रति एक नई समझ दी, बल्कि कक्षा में अनुशासन और जिम्मेदारी के महत्व को भी उजागर किया।छात्रों ने इस अनुभव का भरपूर आनंद लिया और अपनी भूमिका को गंभीरता से निभाया।इसके बाद, छात्रों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया, जो पूरी तरह से उनकी रचनात्मकता और समर्पण का परिणाम था। इस कार्यक्रम में नृत्य, संगीत और नाटक जैसी विविध प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। शिक्षकों ने छात्रों के इस प्रयास की सराहना की और उनके उत्साह और कड़ी मेहनत की तारीफ की। शिक्षण और सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद, विद्यालय के प्रधानाचार्य नन्द जी सिंह और प्रबंधन सदस्यों ने विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया, जिसमें सभी ने सक्रिय रूप से भाग लिया।इसके साथ ही, प्रधानाचार्य द्वारा शिक्षकों को सम्मानित करते हुए उपहार भी भेंट किए गए, जो उनके समर्पण और मेहनत के प्रति आभार व्यक्त करने का एक तरीका था।इस तरह शिक्षक दिवस का यह समारोह आपसी सम्मान और सहयोग का जीवंत उदाहरण बना। इस दिन ने न केवल छात्रों को शिक्षकों के प्रति उनके आभार और सम्मान को व्यक्त करने का अवसर दिया, बल्कि शिक्षकों और छात्रों के बीच के संबंधों को भी और प्रगाढ़ किया। छात्रों की रचनात्मकता और शिक्षकों के मार्गदर्शन का यह अद्भुत संगम विद्यालय की समर्पित शैक्षणिक परंपरा का प्रतीक था, जिसने सभी के लिए इस दिन को खास और यादगार बना दिया।इस अवसर पर प्रधानाध्यापक नन्द जी सिंह, सहायक शिक्षक सोहराब आलम, उमा शंकर पंडित, विजय कुमार, शंकर दयाल सिंह, रोहित कुमार, कुमार अंजना, गीता कुमारी, मंजु कुमारी, नूरजहां खातून, संतोष प्रभाकर, शशिरंजन कुमार, अजीत कुमार, अनिल शर्मा, रवि कान्त चक्रवर्ती, अंकित कुमार, रवि प्रकाश, नीतिश कुमार, प्रियंका कुमारी, अनिता कुमारी सहित अन्य कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

पूर्वी गुमटी फुट ओवर ब्रिज निर्माण में लापरवाहि रेल अधिकारी पर कठोर कर्रवाई की मांग :आर के शर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष जनतंत्र आवाज पार्टी

प्रात : किरण संवाददाता

आराः पूर्वी गुमटी फुट ओवर ब्रिज निर्माण मे लापरवाह रेल अधिकारी पर कठोर करवाई की मांग आर के शर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष जनतंत्र आवाज पार्टी दो वर्ष पूर्व बिना फुट ओवर ब्रिज निर्माण किये पूर्वी गुमटी को बंद कर दिया गया था जिसे दझीन और उत्तर आरा के जनता को यातायात मे भारी परेशानी उठानी पड़ रही है

उस झेत्र मे चलने वाले रोजगार बंदी के कगार है तथा उधर के ब्यवसाए भारी आर्थिक मंदी से गुजर रहे है जिनका सुध लेने वाला कोई नहीं है जनतंत्र आवाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया पूर्वी गुमटी को बंद करना बहुत गलत था मगर रेल और जिला प्रशासन के सामनती अधिकारी ब्रिज बनाने के पूर्व ही उसे बंद कर उधर का रोजी रोजगार यातायात तबाह कर दिया है राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया पटना मे बड़े बड़े ओभर ब्रिज है फिर भी बहुत सारा रेल रोड चल रहा है आरा सासाराम रेल खंड पर भी कई दर्जन अंडर पास बना है जो चल रहा है वही दिल्ली बम्बे जैसे शहर मे सैकड़ो अंडर पास चल रहा है मगर आरा मंद बुद्धि रेल प्रशासन और जिला प्रशासन अति महत्वपूर्ण पश्चिम गुमटी पहले बंद के उधर के लोगो का बिकास यातायात स्पताल स्कुल आदि जाना मुश्किल कर दिया है बचा पूर्वी गुमटी तो बिना ब्रिज बनाये ही बंद कर दिया जिसका निर्णय का मामला लोकसभा तक उठ गया मगर जमीन पर कोई काम नहीं पूर्वी गुमटी ब्रिज छः माह मे बना कर देना था मगर दो साल हो गया नहीं बना पहले का बना फाउंडेशन फेल हो गया दूसरा मे का एक दिन होता है तो चार दिन बंद रह जाता है इस संबंध मे जनतंत्र आवाज पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष राज किशोर शर्मा ने आरा जिला पदाधिकारी रेल प्रबंधक ेि दाना पूरा रेल मंत्री को पत्र भेज काम मे बिलम्ब के साथ अंडर पास बनाने का मांग किया है लेकिन अधिकारिओ के कान पर जु नहीं रेग रहा है अगर यही स्थिति रही तो आंदोलन भी हो सकता है

कन्हैया प्रसाद अपने जन्मदिन पर असहायों और जरूरतमंदों को खाना खिलाया

आरा/भोजपुर जिले के समाजसेवी सह उधोगपति कन्हैया प्रसाद अपने जन्मदिन के अवसर पर शुक्रवार को असहायों और जरूरतमंदों को खाना खिलाया, वहीं उनकी जरूरत से जुड़ी वस्तुएं दीं, समाजसेवी श्री प्रसाद ने बताया कि जन्म दिन पर रेस्टोरेंट में केक काटने की परंपरा हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं है, इसे बदले हम जरूरत मंदों की सेवा करें तो ज्यादा बेहतर होगा, जन्मदिन के मौके पर सदर हॉस्पिटल में मरीजों एवं जरूरतमंद बच्चों को फल वितरण किए गए,उसके बाद जमीरा के समीप कुष्ठ रोगियों के बीच फल एवम खाना का वितरण किया, इसी प्रकार शहर के बस स्टैंड, जिला स्कूल, चंदवा दलित बस्ती में जाकर खाना का वितरण किया, उन्होंने कहा कि नौजवानों के बीच संदेश देने के लिए मैने यह कार्य अपने जन्म दिन पर शुरू किया है, कन्हैया प्रसाद के दोस्त राजा भाटिया, विकाश कुमार सिंह, राजू प्रसाद, सुमन कुमार, संतोष कुमार, रानू , सोनू, शंकर, राहुल,राजन पाल, निशु श्रीवास्तव, संतोष कुमार गुप्ता,आदि ने भी असहायों के बीच जाकर आवश्यक वस्तुओं का वितरण करने का संकल्प लिया,साथ ही कन्हैया प्रसाद के जन्मदिन की अवसर पर दोस्तों ने एक कविता सुनाई-

मैं लिख दू तुम्हारी उम्र चांद सितारों से, मैं मनाऊं जन्मदिन तुम्हारा फूल बहारों से, ...दिल से मेरी दुआ है कि खुश रहो तुम, ...उम्र बढ़ती रहेगी साल घटते रहेंगे ... नये प्रभात का सुरक्षित आंचल भरा मिले यश वैभव से ...

बहुत दूर मगर बहुत पास रहते हो ...ये दिन बार-बार आए ,तुम्हारे जन्मदिन के दिन ये दुआ है हमारी ...तुमसे न खुशी कभी अलग जाए,

केंद्रीय मंत्री सह पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के आगमन पर सर्किट हाउस में जिलाधिकारी नवीन कुमार ने शिष्टाचार मुलाकात की

रोहतास (सासाराम)। जिलाधिकारी ने केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी जी को जिले में चल रहे विकासात्मक कार्यों व योजनाओं के क्रियान्वयन से अवगत करवाया। जिलाधिकारी ने बताया कि जिले में 100 फीसदी राशन कार्ड बनाने को लेकर जिला प्रशासन लगातार काम कर रहा है और जल्द ही इस लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अभियान बसेरा 2 के तहत पूरे जिले भर में एक दिन में ऐतिहासिक 2500 से अधिक भूमिहीन परिवारों को बंदोबस्ती पर्चा वितरित किया गया है। उन्होंने मंत्री जी को बताया कि जिले के दलित-महादलित टोलों में बेहतर शिक्षा व रोजगार के लिए युवाओं का चयन कर उन्हें प्रशिक्षण देने का काम किया जा रहा है। टोलों में वर्कशेड, सामुदायिक भवन, बिजली, पानी आदि की बेहतर सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिलाधिकारी ने बताया कि यहां 14 स्टार्टअप शुरू किए गए हैं। यह जिला पीएम विश्वकर्मा में पूरे राज्य भर में नंबर एक पर है। केंद्रीय मंत्री श्री जीतन राम मांझी ने कहा कि भूमिहीन किसानों को पर्चा वितरण के साथ-साथ उन्हें पोजेशन भी मिले इसकी सुनिश्चितता की जानी चाहिए। केंद्रीय मंत्री ने जिलाधिकारी से जिले में 20 एकड़ की जमीन उपलब्ध कराने को कहा है, जहां 2500 करोड़ रुपए की लागत से टेक्नोलॉजी सेंटर का निर्माण किया जाएगा। इस टेक्नोलॉजी सेंटर में 500 से 600 कर्मचारी काम करेंगे। यहां कौशल विकास का काम किया जाएगा। इससे यहां रोजगार सृजन भी होगा।

जिलाधिकारी ने केंद्रीय मंत्री से आग्रह किया है कि इस जिले में अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति के लिए एकलव्य सेंटर और स्किल हब बनाए जाने की आवश्यकता है।

महिलाओं ने रखा अखण्ड सौभाग्य व पति के लम्बी आयु हेतू निर्जला व्रत

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भाद्रपद शुक्ल तृतीया को मनाये जाने वाला हरितालिका तीज व्रत पर शुक्रवार को महिलाओ ने अपने अखण्ड सौभाग्य व पति की लम्बी आयु के लिए 24 घंटे का निर्जला व्रत रख भगवान शिव पार्वती की पूजा आराधना विधि-विधान के साथ की।इस अवसर पर आचार्य गण पूजनोपरान्त हरितालिका व्रत की कथा सुनाई।आचार्य अमरेन्द्र कुमार मिश्र ने बताया कि हरितालिका तीज व्रत हिन्दू धर्म में सबसे बड़ा व्रत माना जाता हैं।इसे गौरी तृतीया व्रत भी कहा जाता है। खासतौर पर महिलाओं द्वारा यह त्यौहार मनाया जाता हैं। कम उम्र की लड़कियों के लिए भी यह हरितालिका का व्रत श्रेष्ठ समझा गया हैं।विधि-विधान से हरितालिका तीज का व्रत करने से जहाँ कुंवारी कन्याओं को मनचाहे वर की प्राप्ति होती है, वहीं विवाहित महिलाओं को अखंड सौभाग्य मिलता है।हरतालिका तीज में भगवान शिव, माता गौरी एवम गणेश जी की पूजा का महत्व हैं। यह व्रत निराहार एवं निर्जला किया जाता हैं। शिव जैसा पति पाने के लिए कुँवारी कन्याएं इस व्रत को विधि विधान से करती हैं।

क्यों कहते हैं हरितालिका

आचार्य श्री ने बताया कि हरितालिका दो शब्दों के मेल से बना माना जाता है हरत एवं आलिका। हरत का तात्पर्य हरण से लिया जाता है और आलिका सखियों को संबोधित करता है। मान्यता है कि इस दिन सखियां माता पार्वती की सहेलियां उनका हरण कर उन्हें जंगल में ले गई थीं। जहां माता पार्वती ने भगवान शिव को वर रूप में पाने के लिये कठोर तप किया था। तृतीया तिथि को तीज भी कहा जाता है। हरतालिका तीज के पिछे एक मान्यता यह भी है कि जंगल स्थित गुफा में जब माता पार्वती, भगवान शिव की कठोर आराधना कर रही थी तो उन्होंने रेत के शिवलिंग को स्थापित किया था। मान्यता है कि यह शिवलिंग माता पार्वती द्वारा हस्त नक्षत्र में भाद्रपद शुक्ल तृतीया तिथि को स्थापित किया था इसी कारण इस दिन को हरियाली तीज के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय जनता पार्टी ओबीसी मोर्चा जिला रोहतास के महामंत्री संजीव मोहन का बीमारी के कारण आकस्मिक निधन

प्रात : किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास) : आज दिनांक 6 सितंबर 2024 दिन शुक्रवार को वाराणसी अस्पताल में भारतीय जनता पार्टी ओबीसी मोर्चा जिला रोहतास के महामंत्री संजीव मोहन का बीमारी के कारण आकस्मिक निधन हो गया। यह अमरा तालाब की निवासी थे। धर्मपत्नी राम कुमारी देवी का राजनीतिक क्षेत्र में सहयोगी रही। राम कुमारी देवी वर्तमान में बिहार प्रदेश महिला मोर्चा के मंत्री भी हैं। उनकी मृत्यु का समाचार मिलते हैं जिले में शोक का लहर छा गया । दाह संस्कार जिले के सोन नदी में किया गया। वर्ष 2023 में ओबीसी मोर्चा के अभिनंदन समारोह में मंच का संचालन करते हुए अपनी राजनीतिक इच्छा शक्ति जाहिर की थी। इस कार्यक्रम में प्रदेश के अध्यक्ष बलराम मंडल उपस्थित थे। इनकी आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करने वालों में नवीन चंद्र शाह ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष ,प्रदेश की उपाध्यक्ष रमेश चौहान ,चंदेश्वर भारती, परमेश्वर गुप्ता उपाध्यक्ष ,शनि चौरसिया ,विनोद सिंह ,भिखारी राम, अरूण गुप्ता, सहित भारतीय जनता पार्टी के सभी अधिकारी पदाधिकारियों ने उनके प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए ईश्वर उन्हें आत्मा की शांति प्रदान करे ऐसी कामना किया ।

कुष्ठ (लेप्रोसी) खोजी अभियान प्रोग्राम हेतु एक कोऑर्डिनेशन कमेटी की किया गया बैठक

आराःभोजपुर जिला में कुष्ठ(लेप्रोसी) खोजी अभियान प्रोग्राम हेतु एक कोऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता डॉ के एन सिन्हा भोजपुर ने की ।बैठक में जिला टीकाकरण पदाधिकारी डॉ संजय श्रीवास्तव, डब्लूएचओ से डॉ आशीष, डॉ दयानंद कुमार राय , कुष्ठ चिकित्सा पदाधिकारी, एफ एलए, कुमारी प्रियंका ,जिला टीका कार्यालय एवं डब्लूएचओ के अन्य कर्मचारी गण उपस्थित थे। जिले में कुष्ठ खोजी अभियान के तहत शहरी क्षेत्र में अभियान के लिए कुछ वॉलिंटियर्स की जरूरत थी, जो कमी पूरी नहीं की जा रही थी। टीकाकरण विभाग एवं डब्लूएचओ से सपोर्ट के लिए यह बैठक आयोजित हुई। जिसमें यह निर्णय हुआ कि जो कर्मचारी पहले काम किए हैं जब उनका पेमेंट हो जाए। और तब आगे के लिए क्षेत्र में विभिन्न प्रोग्राम के संचालन हेतु एक कमेटी बनाई जाए। हर तरह के विभागीय कार्यक्रम में मदद के लिए

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग, पटना
अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–10 वर्ष 2024–25
(विशेष शर्त मद एवं मात्रा के लिए वेबसाईट state.bihar.gov.in/.prdbihar देखें)

समुचित श्रेणी में निबंधित संवेदकों/ख्याति प्राप्त फार्मो/निबंधित दुकानदारों/कम्पनियों (जिसे Cupboard and Kitchen के कार्य करने का अनुभव हो उसे विशेष प्राथमिकता दी जायेगी) से निम्नलिखित कार्य के लिए मुहरबंद कोटेशन आमंत्रित किया जाता है, जो अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, भवन निर्माण विभाग, पटना, एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 13.09.2024 के अपराहन 12:30 अपराहन बजे तक प्राप्त किया जायेगा एवं उसी दिन 3:00 बजे अपराहन में कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जाएगा।

कोटेशन का मूल्य (रूपये में) प्रत्येक कार्य क्रमांक के कोटेशन–पत्र के साथ कोटेशन मूल्य ONLINE GOVERNMENT REVENUE AND ACCOUNTING SYSTEM (O-GRAS) के माध्यम से (कार्यपालक अभियंता, गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, पटना) के पदनाम से जमा करना अनिवार्य होगा, जो कोटेशन प्रकाशन की तिथि के बाद का होना चाहिए। कोटेशन प्रकाशन के पूर्व के निर्गत ओ–ग्रास (O-GRAS) का कम्पयूटराईज्ड प्राप्ति रसीद पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। कोटेशन मूल्य संवेदक के द्वारा कुल कोटेड राशि के अनुसार होगा, जो निम्न प्रकार हैः रू0 0 से 50,000.00 तक रू0 250/– रू0 50,001 से रू0 2,50,000.00 तक रू0 500/– रू0 2,50,001 से रू0 5,00,000 तक रू0 750/– रू0 5,00,001 से रू0 10,00,000 तक रू0 1250/– रू0 10,00,001 से रू0 15,00,000 तक रू0 2500/– एवं अग्रधन की राशि 2% (कोटेड राशि का मूल्य दो प्रतिशत तथा कम से कम रू0 30,000) कोटेशन कागजात के साथ संलग्न किया जाना अनिवार्य होगा।

कार्य का विवरणी :–

क0	सामग्री का नाम एवं विशिष्टयॉ
1	S/F/F Cupboard & Modular Kitchen & Curtain rod in officer's flat (Type-D) (Block-D5 flat No.-7, 8 & 9) at Gardanibagh, Patna for the year 2024-25

- कार्य समाप्ति की अवधि : 20 दिन
- सक्षम पदाधिकारी के निर्देशन में ही सामानों की आपूर्ति की जानी है तथा आपूर्तिकर्त्ता को आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान की प्रक्रिया की जायेगी।
- विशेष जानकारी हेतु सूचनापट्ट अथवा वेबसाईट state.bihar.gov.in/prdbihar देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में कार्यावधि में सम्पर्क करें।

कार्यपालक अभियंता,
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भ0नि0वि0, पटना

PR. No. 007620 (BCD) 2024-25

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग, पटना
अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–12 वर्ष 2024–25
(विशेष शर्त मद एवं मात्रा के लिए वेबसाईट state.bihar.gov.in/prdbihar देखें)

समुचित श्रेणी में निबंधित संवेदकों/ख्याति प्राप्त फार्मो/निबंधित दुकानदारों/कम्पनियों (जिसे Cupboard and Kitchen के कार्य करने का अनुभव हो उसे विशेष प्राथमिकता दी जायेगी) से निम्नलिखित कार्य के लिए मुहरबंद कोटेशन आमंत्रित किया जाता है, जो अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, भवन निर्माण विभाग, पटना, एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 14.09.2024 के अपराहन 12:30 अपराहन बजे तक प्राप्त किया जायेगा एवं उसी दिन 3:00 बजे अपराहन में कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जाएगा।

कोटेशन का मूल्य (रूपये में) प्रत्येक कार्य क्रमांक के कोटेशन–पत्र के साथ कोटेशन मूल्य ONLINE GOVERNMENT REVENUE AND ACCOUNTING SYSTEM (O-GRAS) के माध्यम से (कार्यपालक अभियंता, गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, पटना) के पदनाम से जमा करना अनिवार्य होगा, जो कोटेशन प्रकाशन की तिथि के बाद का होना चाहिए। कोटेशन प्रकाशन के पूर्व के निर्गत ओ–ग्रास (O-GRAS) का कम्पयूटराईज्ड प्राप्ति रसीद पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। कोटेशन मूल्य संवेदक के द्वारा कुल कोटेड राशि के अनुसार होगा, जो निम्न प्रकार हैः रू0 0 से 50,000.00 तक रू0 250/– रू0 50,001 से रू0 2,50,000.00 तक रू0 500/– रू0 2,50,001 से रू0 5,00,000 तक रू0 750/– रू0 5,00,001 से रू0 10,00,000 तक रू0 1250/– रू0 10,00,001 से रू0 15,00,000 तक रू0 2500/– एवं अग्रधन की राशि 2% (कोटेड राशि का मूल्य दो प्रतिशत तथा कम से कम रू0 30,000) कोटेशन कागजात के साथ संलग्न किया जाना अनिवार्य होगा।

कार्य का विवरणी :–

क0	सामग्री का नाम एवं विशिष्टयॉ
1	S/F/F/ Cupboard & Modular Kitchen in B-Type quarter (Block-1 Flat No-119,120 & 121) at Gardanibagh, Patna for the year 2024-25

- कार्य समाप्ति की अवधि : 20 दिन
- सक्षम पदाधिकारी के निर्देशन में ही सामानों की आपूर्ति की जानी है तथा आपूर्तिकर्त्ता को आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान की प्रक्रिया की जायेगी।
- विशेष जानकारी हेतु सूचनापट्ट अथवा वेबसाईट state.bihar.gov.in/prdbihar देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में कार्यावधि में सम्पर्क करें।

कार्यपालक अभियंता,
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल,
भ0नि0वि0, पटना

PR. No. 007624 (BCD) 2024-25

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

राजकेश्वर सिंह चुनमुन देवी सरस्वती विद्या मंदिर छात्र छात्राओं ने खेल प्रतियोगिता में मारी बाजी

प्रात : किरण संवाददाता

आराःराजकेश्वर सिंह चुनमुन देवी सरस्वती विद्या मंदिर, सिंगही, आरा के भैया बहनों ने दिनांक 4-6 सितम्बर 2024 तक अयोजित जिला स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता एवं योगासन में दो रजत और दो कांस्य प्राप्त हुए। ज्ञात हो कि विद्यालय के बहनों की खो-खो टीम ने भी सेमी फाइनल तक का सफर तय किया था। विद्यालय की तीन बहनों का चयन राज्य स्तरीय खो-खो प्रतियोगिता के लिए भी हुआ है। समस्त विद्यालय परिवार की ओर से विजेता भैया बहनों को बहुत बहुत बधाई और आगामी प्रतियोगिता के लिए मंगलकामना। जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में कृतिका यादव, कक्षा 10 द्वितीय स्थान पर, आकांक्षा कुमारी कक्षा 7 तृतीय, सुहानी सिंह, कक्षा 10 द्वितीय और अलंकृता तृतीय स्थान पर रही।

जिलाधिकारी नवीन कुमार ने लगभग 50 फरियादियों की शिकायतें सुनी

रोहतास (सासाराम)।जनता दरबार में आज जिलाधिकारी नवीन कुमार ने लगभग 50 फरियादियों की शिकायतें सुनी और उन्होंने मामले के जल्द निराकरण के लिए संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। चेनारी के रहने वाले समाजसेवी राही शाहाबादी ने बताया कि दिसंबर, 2021 में अनुमंडल पदाधिकारी सासाराम के द्वारा चेनारी स्थित सरकारी भूमि पर स्वतंत्रता सेनानी पार्क का निर्माण करने का आदेश दिया गया था। लेकिन अंचलाधिकारी चेनारी के द्वारा जमीन का एनओसी नहीं दिए जाने के कारण अभी तक स्वतंत्रता सेनानी पार्क का निर्माण कार्य पूरा नहीं किया जा सका है। जिलाधिकारी ने उक्त आवेदन पर संज्ञान लेते हुए सीओ चेनारी को निर्देश दिया कि वे एनसीओ देना सुनिश्चित करें। साथ ही उन्होंने संबंधित पदाधिकारी को निर्देश दिया कि वे पार्क में स्थित तालाब का जीर्णोद्धार करवाकर, उसके किनारे-किनारे पेड़ पौधे लगाकर और फुटपाथ बनाकर जल्द से जल्द काम को पूरा करें। तिलौथू के महाराजगंज गांव की निवासी प्रीति कुंवर ने बताया कि वे विधवा हैं और उनके तीन छोटे-छोटे बच्चे हैं। उनके पास रहने के लिए घर नहीं है। उन्होंने बिहार सरकार की आवास योजना के तहत तीन डिसमिल जमीन मुहैया कराने का अनुरोध किया है। जिलाधिकारी ने तिलौथू अंचलाधिकारी को इस पर आवश्यक कार्रवाई करने हेतु दिशा निर्देश दिए हैं। राजपुर प्रखंड के निवासी सुदामा सिंह ने बताया कि अतिक्रमण को हटाकर रास्ता देने को लेकर जिलाधिकारी के द्वारा अंचलाधिकारी को पूर्व में आदेश दिया गया था, लेकिन अंचलाधिकारी द्वारा अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। जिलाधिकारी ने अंचलाधिकारी राजपुर को इस दिशा में फौरन कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। आज जनता दरबार में कई फरियादी जमीन अतिक्रमण हटाने के लिए आवेदन लेकर आए थे। जिलाधिकारी ने संबंधित पदाधिकारी को मामले की जांच कर विधिसम्मत कार्रवाई करने का निर्देश दिया है।

बड़हरा के चहुँमुखी विकास के लिए कृत संकल्पित हूँ : सुरेन्द्र सिंह

क्षेत्र के जनता मेरे अपने, हर समय खड़ा था और खड़ा रहूंगा

- रामपुर छठी समारोह सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बड़हरा। बड़हरा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत रामपुर गांव निवासी पिंटू सिंह को 14 वर्ष के बाद पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, इस उपलक्ष्य में गुरुवार की संध्या छठी समारोह सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन फीता काटकर श्री सुरेंद्र सिंह कुंवर सेना अध्यक्ष ने किया। वही पिंटू सिंह द्वारा सभी अतिथियों को अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया। मौके पर संबोधित करते हुए श्री सुरेन्द्र सिंह ने कहा कि आज बहुत ही खुशी का दिन है, पिंटू जी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है, उन्हें बहुत बहुत बधाई। साथ ही उन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रम पर बोलते हुए कहा कि हमारी संस्कृति रही है कि हम हर खुशी के अवसर पर जश्न मनाते है, आज यही सुअवसर है। उन्होंने उपस्थित कलाकारों की भी सराहना की। इस दौरान श्री सिंह ने कहा कि क्षेत्र की आम अवाम के हर सुख दुख में मैं हर समय खड़ा हूँ, यहां की जनता मेरी अपनी है। मेरा हर समय खासकर बड़हरा के लिए प्रयास रहा है कि यहां का चहुँमुखी विकास हो, इस क्षेत्र के विकास के लिए मैं दृढ़ संकल्पित हूँ। उन्होंने कहा कि यह मंच राजनीतिक मंच तो नही है, ये खुशी के इजहार करने का मंच है, इसलिए यहां अन्य कोई बात पर चर्चा करना अच्छी बात नही है। बस इतना ही कहूंगा कि आपके साथ मैं हर वक्त हूँ। मौके पर कलाकारों ने अपने गीतों से उपस्थित लोगों को झूमने पर विवश कर दिया। कलाकारों ने ऐसा समा बांधा की उपस्थित लोग मंत्रमुग्ध हो गये। मौके पर रोहित सिंह उर्फ बबलू सिंह, समाजसेवी संजय सिंह, विनोद सिंह, गोपाल जी राय, कृष्ण सिंह, हरेंद्र सिंह, भूपेश बाबा, प्रताप सिंह, मंटू सिंह, सुनील पांडे, निर्मल सिंह, अरुण सिंह पूर्व अध्यक्ष समेत काफी संख्या में गणमान्य उपस्थित थे।

बिहार में पहली बार बिना ब्लड ग्रुप मिले, कर दिखाया किडनी ट्रांस्प्लांट

प्रात : किरण संवाददाता

बिना ब्लड ग्रुप मिले भी किडनी का ट्रांस्प्लांट संभव है। पारस एचएमआरआई, पटना ने एक 32 वर्षीय युवक का सफल एबीओ इंकाम्पिटेबल ट्रांस्प्लांट कर यह साबित कर दिया है। दरअसल, युवक की किडनी पूरी तरह से खराब हो गयी थी। लगातार डाइलिसिस के बाद भी उसकी स्थिति बिगड़ती जा रही थी। डॉक्टरों ने उसे किडनी ट्रांस्प्लांट की सलाह दी मगर कोई डोनर नहीं मिल रहा था। उसकी मां किडनी देने के लिए तैयार थी मगर उनका ब्लड ग्रुप मरीज के ब्लड ग्रुप से नहीं मिल रहा था। यही सबसे बड़ी मुश्किल की बात थी। आखिरकार अस्पताल के नेफ्रोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शशि कुमार ने मरीज के बी पॉजिटिव और उसकी मां के अलग एबी पॉजिटिव ब्लड ग्रुप के साथ उसकी किडनी का ट्रांस्प्लांट करने की योजना बनाई। कई डॉक्टरों की टीम की अथक मेहनत के बाद उन्होंने ऐसी सर्जरी कर दिखाई जो बिहार में एक मिसाल बन गयी। डॉ. शशि बताते हैं कि देश में हर साल करीब दो लाख 20 हजार नये मरीजों को डायलिसिस या ट्रांस्प्लांट की जरूरत होती है। मगर सिर्फ 10-11 हजार लोगों का ही किडनी ट्रांस्प्लांट हो पाता है। इसका मतलब है कि सिर्फ 5% जरूरतमंद लोगों का ही किडनी प्रत्यारोपण हो पाता है। इसका सबसे बड़ा कारण है डोनर या किडनी दान करने वाले डोनर की कमी। इसमें भी एक बड़ा कारण है डोनर और मरीज का ब्लड ग्रुप मैच न कर पाना। ऐसी स्थिति में बिना समान ब्लड ग्रुप के किडनी का ट्रांस्प्लांट करना जिसे एबीओ इंकाम्पिटेबल प्रत्यारोपण कहा जाता है, अंतिम विकल्प बचता है। यह काफी जटिल प्रक्रिया होती है। इसमें मरीज का प्लाज्मा बदलकर और कुछ दवाइयां देकर उसे इस तरह बनाया जाता है कि उसका शरीर दूसरे ब्लड ग्रुप की किडनी को स्वीकार कर सके। यह देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में बहुत गिने-चुने जगहों पर हो पाता है। हमने पहली बार ऐसा ट्रांस्प्लांट किया है। नेफ्रोलॉजी विभाग के निदेशक और विभागाध्यक्ष डॉ. शशि कुमार के नेतृत्व में नेफ्रोलॉजी विभाग के डॉ. जमशेद अनवर, डॉ. अभिषेक , यूरोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अपूर्व चौधरी, डॉ. अंशुमन आशु, डॉ. विकास कुमार, ब्लड बैंक से डॉ. शांतनु , पैथोलॉजी विभाग की डॉ. विनिता सिन्हा और एनिस्थिसिया के डॉ. श्री नारायण की पूरी टीम ने इस ट्रांस्प्लांट को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। पारस एचएमआरआई के फैसिलिटी डाइरेक्टर अनिल कुमार ने डॉ. शशि कुमार सहित उनके सहयोगियों को इस मरीज को नई जिंदगी देने के लिए धन्यवाद दिया। बताया कि हमलोगों ने 2018 से किडनी ट्रांसप्लांट शुरू किया था और अबतक 70 मरीजों से ज्यादा का ट्रांसप्लांट कर चुके हैं। इसलिए, पारस एचएमआरआई की भरोसेमंद सुविधा किडनी ट्रांस्प्लांट के लिए सबसे उपयुक्त है। पारस एचएमआरआई के बारे में पारस एचएमआरआई, पटना बिहार में 2013 से कार्यरत है। पारस इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर केयर बिहार में अपनी विशेषज्ञता, बुनियादी ढांचे और कैंसर देखभाल प्रदान करने के लिए जाना जाता है।

कल को मगध की धरती से लक्ष्मण यादव का होगा शंखनाद

गया। ओबीसी महासभा के प्रदेश अध्यक्ष बीरेंद्र गोप ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि 8 सितंबर 2024 को गया के संग्रहालय में महान चिंतक प्रोफेसर लक्ष्मण यादव, प्रोफेसर जोगेंद्र यादव, अली अनवर साहब, मध्य प्रदेश से धर्मेंद्र कुशवाहा जी जैसे विद्वानों का परिचर्चा होगा। इस परिचर्चा का मुख्य बिंदु देश से न्यायिक प्रक्रिया में कॉलिजियम सिस्टम को खत्म करना, आरक्षण को समाप्त करने की केंद्र सरकार की नीति का पर्दाफाश करना, पूरे देश में जातिगत जनगणना वर्तमान राजनीतिक परिपेक्ष में लालू प्रसाद की भूमिका, जैसे तमाम सामाजिक राजनीतिक विषयों पर चिंतन होगा। लोकसभा के पूर्व प्रत्याशी अशोक आजाद ने कहा कि 8 सितंबर को मगध क्षेत्र के लोग हजारों हजार की संख्या में पधारे इस दिन बड़े-बड़े सामाजिक चिंतकों का भाषण से लाभ उठाएं। अपने वक्तव्य में बीरेन्द्र गोप ने कहा कि प्रोफेसर लक्ष्मण यादव, योगेन्द्र यादव, इस देश के बड़े सामाजिक चिंतक हैं जिनका भाषण सुनकर 90% लोग जो शोषित, वंचित, दबे-कुचले हैं

डीएम ने जनता दरबार में 21 परिवादियों का सुना फरियाद

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। जिला पदाधिकारी वर्षा सिंह द्वारा जनता दरबार का आयोजन किया गया। जनता दरबार में 21 परिवादियों के फरियाद को सुना गया। परिवादियों द्वारा भूमि विवाद, अनियमितता, अतिक्रमण, बंटवारा, मजदूरी, रोजगार, विद्युत विभाग, आपदा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग एवं अन्य विभागों से संबंधित मामले थे। परिवादियों के आवेदनों के शीघ्र निष्पादन हेतु जिला पदाधिकारी द्वारा संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक निदेश दिया गये। करपी प्रखण्ड स्थित ग्राम गिलारमन गंज के ग्रामीणों द्वारा बताया गया कि परियारी पंचायत के वार्ड नं-01 में सरकारी योजना के तहत पक्की गली नाली का निर्माण किया गया था। गाँव के ही भरत यादव द्वारा नाली को भरकर अतिक्रमित कर लिया गया है। अतिक्रमण हटवाने की कृपा की जाए। इस संबंध में जिला पदाधिकारी द्वारा प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी करपी को निष्पादन हेतु निदेशित किया गया। कलेर प्रखण्ड स्थित ग्राम अगनूर चौकी निवासी सुरेन्द्र पासवान द्वारा बताया गया कि राजकीयकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय अगनूर में सफाई कर्मी हूँ। लगभग दो माह के अधिक समय से शिक्षा विभाग द्वारा चयनित एजेन्सी के द्वारा मुझे मानदेय भुगतान नहीं किया जा रहा है। मानदेय भुगतान करवाने की कृपा की जाए। इस संबंध में जिला पदाधिकारी द्वारा प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, कलेर को निष्पादन हेतु निदेशित किया गया। अरवल प्रखण्ड स्थित ग्राम अरवल सिपाह निवासी रेणु देवी द्वारा बताया गया कि मेरे जमीन के प्लॉट अंतर्गत हिस्सेदारों के बीच पूर्व में बंटबारा किया जा चुका है। मेरे पति के मृत्यु पश्चात मेरे हिस्से की भूमि पर श्री मुन्नु लाल गुप्ता एवं अन्य के द्वारा कब्जा कर लिया गया है। इस कारण अपनी भूमि रहते हुए मुझे फुटपाथ पर गुजर-बसर करना पड़ रहा है। मेरे हिस्से की जमीन दिलवाने की कृपा की जाए। इस संबंध में जिला पदाधिकारी द्वारा अंचलाधिकारी एवं संबंधित थानाध्यक्ष को आवश्यक कारवाई कर प्रतिवेदन उपलब्ध कराने हेतु निदेशित किया गया। इसी क्रम में द्वितीय अपीलीय प्राधिकार से संबंधित आज कुल 05 मामलों की सुनवाई हुई जिसमें 02 का निष्पादन किया गया एवं 03 मामलों की सुनवाई के लिए अगली तिथि निर्धारित की गई।

दस दिवसीय 11वीं कंबाइंड एनुअल ट्रेनिंग कैंप का हुआ समापन

प्रात : किरण संवाददाता

बोधगया। 6 बिहार बटालियन एनसीसी गया द्वारा निगमा मोनिस्ट्री में आयोजित 11वीं कंबाइंड एनुअल ट्रेनिंग कैंप का सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सफलतापूर्वक समापन हो गया है इस मौके पर गया ग्रुप मुख्यालय के कमांडर ब्रिगेडियर राम नरेश,6 बिहार बटालियन एनसीसी के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल पंकज कुमार कीर्ति चक्र),एडम अधिकारी कर्नल एमके शुक्ला,27 बिहार बटालियन एनसीसी कमांडिंग ऑफिसर कर्नल अमर पारकर,एडम अधिकारी कर्नल चौहान,5 बिहार बटालियन एनसीसी कमांडिंग ऑफिसर कर्नल मनु तिवारी, ओटीए,गया कर्नल मिताली मधुमितासेना मेडल,लेफ्टिनेंट कर्नल सुनीता गांगुली,सुबेदार मेजर अमलेंदु मंडल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे इस कैंप में शारीरिक प्रशिक्षण और ड्रिल ने कैडेट्स को अपनी सहनशक्ति,ताकत और समग्र व्यक्तित्व में सुधार करने में मदद की इसके अलावा,कैडेट्स को मैप रीडिंग,हथियार प्रशिक्षण, फील्ड क्राफ्ट,आपदा प्रबंधन, प्राथमिक चिकित्सा और जीवन रक्षा जैसे विषयों पर प्रशिक्षित किया गया है।शिविर के दौरान एनसीसी कैडेट्स ने समाज को वापस देने के मूल्य को सीखा। फायर,ट्रैफिक और साइबर-क्राइम विभागों के अधिकारियों द्वारा व्याख्यान ने कैडेट्स को मूल्यवान ज्ञान प्राप्त करने में मदद की है।इसके अलावा, कैडेट्स ने व्यक्तित्व विकास,सेना भर्ती कार्यालय गया द्वारा आयोजित वार्ता में कैडेटों को भारतीय सेना में भर्ती होने के टिप्स दिए हैं।शिविर के अंतिम दिन, कैडेटों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, इस कार्यक्रम के दौरान बिहार के सांस्कृतिक पर नृत्य संगीत प्रस्तुत कैडेटों ने किया।जिसके बाद पुरस्कार वितरण और पारंपरिक भोज झाबड़ा-खानाह्हूआ।वही गर्ल्स कैडेट ने बताया कि मुझे 6 बिहार बटालियन के कैंप में आकर बहुत अच्छा लगा यहां का खान-पान रहन-सहन बहुत ही बढ़िया था इसके लिए सभी अधिकारियों व पीआई स्टाफ को धन्यवाद करतीं हूं कि हमलोग दूर रहकर भी एहसास नहीं होने दिया की घर से दूर है।मौके पर सूबेदार सुंदर सिंह,प्रमोद कुमार,राकेश प्रसाद,नयाब सूबेदार अरविंद शर्मा,विक्रम सिंह,बीएचएम कानाराम,सीएचएम रंजय, अनंजय कुमार,करतार,राहुल, एनसीसी अधिकारी भुवन कुमार गुप्ता,मीनू कुमारी,जीसीआई सुप्रिया रंजन,विरेन्द्र कुमार सिंह, शहाबुद्दीन,रवि कुमार,अनिल सिंह, राजकुमार सहित एनसीसी कैडेट्स मौजूद थे।

हाजीपुर के सिपेड कॉलेज के निदेशक पर शीघ्र प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल । हाजीपुर सिपेड कॉलेज के कैम्पस में भारत सरकार के पूर्व के केन्द्रीय मंत्री पद्म भूषण स्वर्गीय रामविलास पासवान के नाम से छात्रावास बनाने के लिए लगाये गये शिलान्यास शिलापट्ट से गटर ढकने का कार्य किये जाने पर लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के जिलाध्यक्ष सत्येन्द्र रंजन ने कड़ी प्रतिक्रिया करते हुए कहा पद्म भूषण स्वर्गीय रामविलास पासवान के नाम से लगाये गये शिलान्यास शिलापट्ट से गटर ढकने का कार्य करने की घटना निंदनीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण है , इसकी जितनी भी निंदा किया जाय वह कम होगा । उन्होंने वैशाली के जिलापदाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक से मांग करते हुए कहा कि हाजीपुर के सिपेड कॉलेज के निदेशक पर शीघ्र प्राथमिकी दर्ज कर विधि सम्मत कारवाई किया जाय । इस तरह की संकीर्ण सोच मानसिकता रखने वाले पदाधिकारी को कड़ी से कड़ी सजा होनी चाहिये । ताकि इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति करने की हिम्मत नहीं हो । हाजीपुर के सिपेड कॉलेज में प्लास्टिक इंजीनियरिंग का प्रशिक्षण दिया जाता है । उक्त कॉलेज में हाजीपुर के नजदीक गाँव के छात्र-छात्राओं अपना नामांकन कराकर प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ बिहार भर के इच्छुक छात्र छात्राओं प्लास्टिक इंजीनियरिंग का प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत रोजगार करने का अवसर मिलता है ।

तीन दिवसीय नि:शुल्क पिरामिड ध्यान महायज्ञ का शुभारंभ, बिहार सरकार के मंत्री हुए शामिल

प्रात : किरण संवाददाता

गया। पिरामिड स्पिरिचुअल सोसायटीज मूवमेंट एवं बिहार पिरामिड मेडिटेशन फाउंडेशन द्वारा बोधगया के इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में दिनांक 6 सितम्बर शुक्रवार को तीन दिवसीय पत्रीजी बोधगया ध्यान महायज्ञ 2024, का प्रातः 5.30 में दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ हुआ है। इस कार्यक्रम के शुरूआत में 2 घंटे का लाइव संगीत ध्यान सत्र का आयोजन हुआ जिसमें एक साथ 500 लोगों ने ध्यान किया है । इस कार्यक्रम के अगले सत्र में देश के अलग-अलग राज्यों से आये वरिष्ठ पिरामिड मास्टर्स ने ध्यान से सम्बंधित लोगों को अपना सन्देश दिया है। आगे के सत्र में नृत्यांगनाओं ने कुचुपुड़ी नृत्य से लोगों का दिल जीत लिया है। मास्टर पल्लवी और मास्टर सारिका सराफ के सेशन में आत्म साक्षात्कार एवं हर समस्या का मूल समस्या का मुख्य कारण क्या है, पिछले जन्म से सम्बन्धित समस्याओं पर विशेष चर्चा हुई है।

इसी दौरान बिहार सरकार के सहकारिता एवं पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के मंत्री डॉ. प्रेम कुमार कार्यक्रम में उपस्थित हुए और अपने संबोधन में ब्रह्मर्षि सुभाष पत्रीजी के बारे में विस्तृत जानकारी दी है इसके साथ में उन्होंने कहा कि मुझे इस ध्यान कार्यक्रम में आकर बहुत प्रशन्ता हुई है और लोगों से ध्यान करने का आग्रह किया जिससे उनका जीवन स्वस्थ और निरोग रहे हैं।इस कार्यक्रम के अगले सत्र में बौद्ध भिक्षुओं ने लोगों के बीच अपनी बातें रखीं हैं ।उन्होंने कहा कि जीवन में मोक्ष प्राप्ति करनी है तो अपनी इच्छा को मारने की जरुरत है तभी आप मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं । दक्षिण भारत से आये ध्यान मास्टर्स ने ध्यान से सम्बंधित अपने-अपने विचार लोगों के समक्ष रखे।मालुम हो कि यह ध्यान कार्यक्रम का आयोजन निःशुल्क किया जा रहा है जिसमें लोगों के लिए निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की गयी है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप भानु,राजीव साहा,सारिका,प्रभा वर्णवाल, धीरज ।

राष्ट्रीय पोषण सप्ताह अन्तर्गत इनर व्हील क्लब द्वारा परीक्षा के समय खानपान के प्रभाव के विषय में चर्चा

प्रात : किरण संवाददाता

गया। राष्ट्रीय पोषण सप्ताह के अंतर्गत इनर व्हील क्लब गया द्वारा स्नातकोत्तर गृह विभाग में एक वार्ता का आयोजन किया गया है 'सबसे पहले अध्यक्षता तृप्ति गुप्ता ने इनर व्हील के कार्यकलापों की जानकारी उपस्थित शिक्षको और छात्राओं के दी तत्पश्चात न्यूट्रोलॉजिस्ट और डाइटिशियन अर्चना गोयनका द्वारा परीक्षा के समय खानपान के प्रभाव के विषय में लड़कियों को पीपीटी के माध्यम से बहुत ही रोचक तरीके से अवगत कराया है ।उन्होंने बताया कि भोजन हमारे शरीर के साथ-साथ दिमाग को भी प्रभावित करता है ।इसलिए हमेशा परीक्षा के पहले सुपाच्य भोजन खाना चाहिए। जिसमें भरपूर मात्रा में मिनरल विटामिन आयोडीन इत्यादि हो तथा वह खाने में हल्का हो । बच्चों को 8 घंटे की नींद कम से कम लेनी चाहिए, ताकि परीक्षा के समय उसका उनका दिमाग सही तरह से कम कर सके। रात में पढ़ने के लिए कैफीन का सेवन कम से कम करना ही उचित होगा।

उन्होंने अच्छी नींद के लिए लाभदायक कसरत के विषय में भी बताया है ।उन्होंने छात्रों द्वारा पूछे गए अनेक सवालों का जवाब दिया है ।इस कार्यक्रम को करवाने के लिए गृह विभाग की इंचार्ज डॉक्टर दीप शिखा पांडे ने इनर व्हील क्लब गया को तथा अर्चना गोयनका को के प्रति अपना आभार व्यक्त किया तथा कहा कि इस तरह के कार्यक्रम हमेशा बच्चों के लिए लाभदायक होते हैं। इस कार्यक्रम में इनरवियर क्लब की अध्यक्षता तृप्ति गुप्ता, सचिन आभा सिंह विनीता भदानी मगध यूनिवर्सिटी की गृह विज्ञान ए चार्ज दीप शिखा. विभाग अल्युमिनियम संगठन की अध्यक्ष डॉक्टर मीनू कुमारी , अनेक शिक्षक शिक्षिकाएं तथा लगभग 80 छात्राएं शामिल हुई है ।'

प्रेमी ने नंबर ब्लॉक किया तो प्रेमिका लगा दी कुआं में छलांग

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। शुक्रवार सुबह एक नाबालिग लड़की 20 फीट गहरे कुएं में कूद गई। हालांकि, वक्त रहते ग्रामीणों ने उसे मरने से बचा लिया। लड़की (16) का कहना है कि उसके प्रेमी (17) ने उससे बातचीत बंद कर दी और उसका नंबर भी ब्लॉक कर दिया। इसी वजह से उसने कुएं में कूदकर आत्महत्या करने की कोशिश की। इस बीच गांव वालों ने सुसाइड करने का कारण पूछा तो लड़की ने कहा कि लड़के ने उससे बातचीत बंद कर दिया है। अगर वह नहीं माना तो फिर से कूद जाऊंगी। फिलहाल अभी लड़की रामपुर थाने में है। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। जानकारी के अनुसार लड़की का प्रेमी भी नाबालिग है। दोनों रिश्ते में बुआ भतीजा लगते हैं। दोनों के बीच पिछले दो साल से अफेयर चल रहा था। हाल में किसी बात को लेकर विवाद होने के बाद दोनों की बातचीत बंद हो गई थी। मामला रामपुर चौरम थाना इलाके का है।

अफेयर के बीच रिश्ता आया तो लड़के ने बातचीत बंद की । स्थानीय लोगों के अनुसार, दोनों के प्रेम प्रसंग में रिश्ता सामने आ रहा था। दोनों बुआ-भतीजा लगते हैं। इसी वजह से लड़के ने बातचीत बंद की। कुछ दिन पहले उसका नंबर भी बलॉक कर दिया। लड़की ने कई बार उससे संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन फोन नहीं लगा। इसके बाद लड़की ने सुसाइड करने का फैसला किया। जिसके बाद सुबह वह रामपुर स्थित एक कुएं में कूद गई। एक स्थानीय विकास कुमार ने बताया, ह्यमैं रास्ते से गुजर रहा था। तभी गांव के एक चौकीदार रास्ते में मिल गए। उनसे बात कर रहा था। इसी दौरान लड़की पर नजर पड़ी। जो काफी देर से कुएं पर खड़ी थी। हम लोग आपस में बात कर ही रहे थे कि लड़की ने कुएं में छलांग लगा दी। जिसके बाद शोरगुल करने पर आसपास के लोग पहुंचे। तो गमछे को कुएं में फेंका गया और लड़की को गमछा के सहारे बाहर निकाला गया। ग्रामीणों ने पूछा- क्यों कूदी, जवाब मिला- लड़के से पूछो लडकी के कएं से रेस्क्य का वीडियो भी सामने आया है। ग्रामीणों ने पूछा- क्यों कूदी, जवाब मिला- लड़के से पूछो लड़की के कुएं से रेस्क्यू का वीडियो भी सामने आया है। वीडियो में दिख रहा है कि गांव के कुछ लोग लड़की को कपड़े के सहारे निकालने की कोशिश कर रहे हैं। इसी दौरान ग्रामीणों ने जब लड़की से पूछा कि क्यों कूदी कुएं में। इस पर लड़की ने कहा, ह्यजाकर उससे पूछिए, क्यों कूदे हैं। फिर से गांव वाले उसे किसी बात का उलाहना देते हैं। इस बार वो कहती है, वो नहीं समझा तो फिर से कूद जाऊंगी। वही रामपुर चौरम थाने की पुलिस पहुंची है। लड़की को सुरक्षित बाहर निकालने के बाद उससे पूछताछ कर रही है। थानाध्यक्ष सिंटू कुमार ने बताया है कि दोनों के परिजनों को बुलाया जा रहा है। इसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सीएम से बंद रीगा चीनी मिल में पेराई कार्य शुरू कराने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। रीगा चीनी मिल के पुनर्जीवन हेतू बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा विशेष पहल और प्रयास से तथा गन्ना विकास विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के सफल प्रयास हेतू उन्हें धन्यवाद देते हुए बिहार राज्य गन्ना किसान मोर्चा के प्रदेश संयोजक अशोक प्रसाद सिंह तथा सह संयोजक डा आनन्द किशोर ने मुख्य मंत्री से नये सत्र 2024-25 में बंद रीगा चीनी मिल में पेराई कार्य शुरू कराने की मांग की है। मोर्चा के संयोजक अशोक प्रसाद सिंह ने बताया कि बिहार राज्य गन्ना किसान मोर्चा की मांगों तथा संयुक्त किसान संघर्ष मोर्चा एवं संयुक्त किसान मोर्चा के लगातार प्रयास एवं संघर्ष तथा किसानों की मांगों पर सी एम ने संज्ञान लेकर विशेष पहल किया ।जिससे बंद चीनी मिल के चालू होने का आसार बना है ।बेंगलूर के निरानी सुगर्स लि. ने मिल की खरीद की है। जिसके खरीद राशि के भुगतान की प्रक्रिया एन सी एल टी,कोलकाता से एक सप्ताह में पूरी हो जायगी। फिर बिहार सरकार से नो आब्जेक्शन प्रमाणपत्र लेकर निरानी सुगर्स मिल चलाने तथा अन्य सहायक उद्योगों का विकास करेगी ।ज्ञातव्य हो कि यहां पूर्व में चीनी मिल के साथ डिस्टिलरी,उर्वरक, तथा पावर प्लांट भी चलता था।

बिहार राज्य गन्ना किसान मोर्चा ने मुख्य मंत्री से नये सत्र में रीगा चीनी मिल को चालू कराने के साथ किसानों को बकाये गन्नामूल्य का भुगतान कराने,केसीसी ऋण से मुक्ति दिलाने हेतू विशेष पहल करने की मांग की। नये सत्र में गन्ना की खेती हेतू मुफ्त गन्ना बीज एवं उर्वरक की आपूर्ति कराने की मांग की है। क्योंकि मिल बंद होने से ईलाके में बीज का अभाव हो गया है। मोर्चा नेताओं ने मुख्य मंत्री से नये सत्र के लिए गन्ना का राज्य परामर्शी मूल्य 600रु प्रति क्विंटल घोषित करने की भी मांग की ।

आईटीसी मंगलदीप के साथ अब और भी बेहतर होगा आपकी पूजा का अनुभव

प्रात : किरण संवाददाता

भारत के अग्रणी धूपबत्ती ब्रांडों में से एक आईटीसी मंगलदीप ने अपने नए सब-ब्रांड, मंगलदीप सेंट को लॉन्च करने की घोषणा की है। इस बेहद खास प्रोडक्ट के लॉन्च से पता चलता है, कि कंपनी सुगंध के क्षेत्र में कितनी तेजी से विस्तार कर रही है। कंपनी अपने इस रणनीतिक विस्तार के साथ ग्राहकों को भी एक प्रीमियम एवं बेहतरीन सुगंध का अनुभव प्रदान कर रही है।

मंगलदीप सेंट 3 इन 1 के एक ही पैक में तीन मनमोहक सुगंध मिलती हैं। दिल को सुकून देने वाली ये सुगंध एक समृद्ध और अद्भुत अनुभव प्रदान करती हैं। इसकी खुशबू आपको एकाग्रता के साथ प्रार्थना करने में मदद करती है। तीन इंटरनेशनल परफ्यूम से प्रेरित इसकी सुगंध आपको एक बेमिसाल और एकदम जुदा अनुभव देती है। यह 0% चारकोल कंटेंट से तैयार की गई है। सुखद खुशबू की गारंटी के साथ साथ इसकी लंबे समय तक टिकी रहने वाली सुगंध आपको एक शानदार पूजा का अनुभव भी देती है। नया मंगलदीप सेंट 3 इन 1 खूबसूरत तरीके से डिजाइन की गई पैकेजिंग में आती है। इस पैक पर प्रतिष्ठित मंगलदीप लोगो के साथ कल्याण का दीप भी दशार्या गया है। इसकी डिजाइन प्रीमियम और रहस्य की भावना पैदा करने वाली है। इस लॉन्च के बारे में बात करते हुए, श्री गौरव तायल, चीफ एग्जीक्यूटिव, मैचेज एंड अगरबत्ती बिजनेस डिवीजन, आईटीसी लिमिटेड ने कहा, ह्लआईटीसी मंगलदीप में, हमारा मिशन है कि खुशबू की इस शक्ति के साथ हम आपके जीवन को और भी बेहतर बना सकें। मंगलदीप सेंट का लॉन्च हमारी इसी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। इस पैक के साथ अब हमारे ग्राहकों को अलग-अलग पैक खरीदने की जरूरत नहीं है। अब वे एक ही पैक में तीन अलग-अलग खुशबुओं का आनंद ले सकते हैं। हमारी विस्तृत ग्राहक रिसर्च बताती हैं कि पूजा के लिए या घर के माहौल को बेहतर बनाने के लिए, लोग बेहतरीन सुगंधों को सबसे अधिक प्राथमिकता देत हैं। मंगलदीप सेंट 3 इन 1 रिटेल स्टोर, मार्ट और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है।

ग्रामीण क्षेत्रों में छुपी प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की है जरूरत- डीएम वर्षा सिंह

करपी प्रखंड क्षेत्र के रामपुर चाय ग्राम में सामुदायिक शिक्षा सह खेल प्रतियोगिता 2024 के पारितोषिक वितरण समारोह में पहुंचे अरवल जिलाधिकारी वर्षा सिंह ने कहा कि जिले के विभिन्न गांव के छात्र-छात्राओं एवं युवाओं में प्रतिभा कूट-कूट कर भरी पड़ी है जिन्हें हम सभी को मिलकर प्रोत्साहित करने की जरूरत है ! जिलाधिकारी महोदया ने कहा कि कभी-कभी संसाधन के अभाव में ग्रामीण इलाकों में छुपी प्रतिभा खत्म हो जाती है इसलिए समय रहते अगर समाज एवं सरकार उन प्रतिभागी युवाओं पर ध्यान दें तो उनका भविष्य बेहतर हो सकता है ! ज्ञात हो की सामुदायिक शिक्षा प्रतियोगिता सह खेल प्रतियोगिता के तत्वाधान में बीते कई दिनों से विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जा रहा था एवं हर एक खेल से बेहतरीन युवाओं का चयन किया जा रहा था !यहां तक की पढ़ाई के क्षेत्र में भी मैट्रिक एवं इंटर स्तर पर अच्छे मार्क्स लाने वाले बच्चों को भी पुरस्कार वितरण के लिए चयनित किया गया था !शिक्षक दिवस के अवसर पर सम्मान वितरण समारोह में पहुंचे जिलाधिकारी अरवल के द्वारा पढ़ाई खेल एवं अन्य क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले लगभग 50 छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया !

कैट बिहार द्वारा पूरे बिहार मे गणेश चतुर्थी पर सदस्यता अभियान शुरू करेगा - अशोक

कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार वर्मा ने पूरे बिहार मे वेविनार के माध्यम से संगठन की मजबूरी के लिए एक बैठक आयोजित किया। कैट राष्ट्रीय कमेटी ने पूरे देश मे माननीय श्रीमती स्मृति ईरानी जी, राष्ट्रीय महासचिव श्री प्रवीण खंडेलवाल जी व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बी सी भरतिया जी के नेतृत्व में गणेश चतुर्थी पर सदस्यता अभियान शुरू करेगा। सदस्यता अभियान पूर्ण रूप से आनलाइन होगा और छोटे व मझोले व्यापारीयों को भी जोड़ने का काम किया जाएंगा। कैट बिहार महिला अध्यक्ष श्रीमती रुची अरोड़ा, उपाध्यक्ष श्रीमती इंदू अग्रवाल, पटना महानगर महिला अध्यक्ष श्रीमती प्रियंका जी व मुजफ्फरपुर से राशी अरोड़ा ने भी सदस्यता अभियान को सफल बनाने के लिए छोटे व मझोले महिला उद्यमियों के पास जाएंगी। इस वेविनार मे बिहार के सभी जिलों से लोग मौजूद हुए।

महिलाओ ने रखा अखण्ड सौभाग्य व पति के लम्बी आयु हेतू निर्जला व्रत

पटना/राँची । भाद्रपद शुक्ल तृतीया को मनाये जाने वाला हरितालिका तीज व्रत पर शुक्रवार को महिलाओ ने अपने अखण्ड सौभाग्य व पति की लम्बी आयु के लिए 24 घंटे का निर्जला व्रत रख भगवान शिव पार्वती की पूजा आराधना विधि-विधान के साथ की।इस अवसर पर आचार्य गण पूजनोपरान्त हरितालिका व्रत की कथा सुनाई।आचार्य अमरेन्द्र कुमार मिश्र ने बताया कि हरितालिका तीज व्रत हिन्दू धर्म में सबसे बड़ा व्रत माना जाता हैं। इसे गौरी तृतीया व्रत भी कहा जाता है। खासतौर पर महिलाओं द्वारा यह त्यौहार मनाया जाता हैं। कम उम्र की लड़कियों के लिए भी यह हरितालिका का व्रत श्रेष्ठ समझा गया हैं ।विधि-विधान से हरितालिका तीज का व्रत करने से जहाँ कुंवारी कन्याओं को मनचाहे वर की प्राप्ति होती है, वहीं विवाहित महिलाओं को अखंड सौभाग्य मिलता है ।हरतालिका तीज में भगवान शिव, माता गौरी एवम गणेश जी की पूजा का महत्व हैं। यह व्रत निराहार एवं निर्जला किया जाता हैं। शिव जैसा पति पाने के लिए कुँवारी कन्याएं इस व्रत को विधि विधान से करती हैं। क्यों कहते हैं हरितालिका आचार्य श्री ने बताया कि हरितालिका दो शब्दों के मेल से बना माना जाता है हरत एवं आलिका। हरत का तात्पर्य हरण से लिया जाता है और आलिका सखियों को संबोंधित करता है।

पति की लंबी आयु के लिए तीज में उपवास रखती हैं महिलाएं, युवतियां भी

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। हरतालिका तीज सुहागिनों का बड़ा पर्व है। इसमें पति की दीघार्यु के लिए पत्नी व्रत रखती है। भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा युवतियां और महिलाएं करती हैं। यह त्योहार उत्तर भारत और महाराष्ट्र में धूमधाम से मनाया जाता है। श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाए जाने वाले इस त्योहार का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक है। इसमें उनका संपूर्ण दिन उपवास में बीतता है।

मनवांछित वर की प्राप्ति

हरतालिका तीज का व्रत विवाहित महिलाओं के लिए पति की लंबी आयु और सुख-समृद्धि के लिए अत्यंत फलदायी माना जाता है। वहीं, अविवाहित युवतियां मनवांछित वर की प्राप्ति के लिए यह व्रत करती हैं। व्रती महिलाएं दिनभर अन्न-जल का त्याग करती हैं और केवल फल, दूध आदि का सेवन करती हैं। उनका मानना है कि माता पार्वती की तरह कठिन तपस्या से इच्छित फल की प्राप्ति होती है। शिव और पार्वती की मूर्तियां की स्थापना हरतालिका तीज के दिन पूजा के लिए एक पवित्र स्थान पर भगवान शिव और माता पार्वती की मूर्तियों की स्थापना कर विधिपूर्वक पूजा की जाती है। पूजा के दौरान महिलाएं विशेष व्रत कथा का श्रवण करती हैं, जिसमें माता पार्वती की कठिन तपस्या और भगवान शिव से उनके विवाह की कथा सुनाई जाती है। पूजा के बाद सामूहिक तीज गीत गाए जाते हैं और प्रसाद का वितरण किया जाता है।

लूट की घटना के बाद व्यवसायी संघ का हुआ बैठक

शेरघाटी शहर के रमण मोहल्ला स्थित गंज मोड़ के निकट कपूर ट्रेडर्स नमक तेल मिल से लाखों रुपए के हुई लूट के घटना के बाद व्यावसायिक संघ के लोगों के बैठक करते हुए शनिवार को शेरघाटी शहर के सभी दुकानें बंद करने का ऐलान किया है। वहीं उक्त बैठक के दौरान यह भी निर्णय लिया गया कि शेरघाटी में लगातार लूट समेत कई प्रकार कैसे घटना हो रहे हैं, जिस व्यवसाय काफी चिंतित है, उन्होंने बातचीत के दौरान सभी लोगों ने कहा कि लगातार लूट की घटना गोली वारी की घटना समेत कई प्रकार की घटना होती जा रही है। लेकिन पुलिस हाथ पर हाथ रखकर सोई हुई है इसी उद्देश्य को लेकर नाराजगी जताते हुए व्यावसायिक संघ के लोगों ने शनिवार को शेरघाटी बंद करने का आह्वाहन किया है। यह बैठक शेरघाटी शहर के नरनोलिया धर्मशाला सेवा भवन में किया गया। बैठक के दौरान जयंती सिंह, नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि पवन किशोर सिंह,टना अग्रवाल,विकास कुमार, मनोज कुमार अग्रवाल,प्रमोद वर्मा,संजय अग्रवाल,विनय अग्रवाल, डॉ मुरली अग्रवाल समेत सैकड़ो के तादाद में व्यवसाय संघ के लोग उपस्थित थे।

एनसीसी सीएटीसी- में जीबीएम कॉलेज की कैडेट प्रियंका को गोल्ड मेडेल एवं नेहा को सिल्वर मेडेल

प्रात : किरण संवाददाता

गया। एनसीसी 6 बिहार बटालियन इकाई द्वारा निगमा मोनेस्ट्री, बोधगया में दिनांक 27 अगस्त, 2024 से 05 सितंबर, 2024 तक आयोजित कम्बाइन्ड ऐनुअल ट्रेनिंग कैंप-क सीएटीसी-क में जीबीएम कॉलेज की कैडेटों की प्रशंसनीय प्रतिभागिता रही है। कॉलेज के प्रभारी प्रधानाचार्य डॉ. सहदेब बाउरी एवं एनसीसी सीटीओ डॉ. कुमारी रश्मि प्रियदर्शनी, डॉ. प्यारे मांझी, डॉ. रूही खातून व अन्य ने सभी कैडेटों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं है। डॉ. बाउरी ने कैडेटों को एकता और अनुशासन बनाये रखने हेतु परामर्श दिये है। एनसीसी सीटीओ एवं पीआरओ डॉ रश्मि प्रियदर्शनी ने बताया कि संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में कैडेट प्रियंका कुमारी को ड्रिल प्रतियोगिता में प्रथम आने के लिए गोल्ड मेडेल प्रदान करके सम्मानित किया गया है। कैडेट नेहा कुमारी को क्विज प्रतियोगिता में सिल्वर मेडेल तथा बेस्ट लीडिंग ऐंकरिंग के लिए ट्रैक शूट प्राप्त हुआ है। कैडेट वैष्णवी कुमारी, माही कुमारी, आरसी कुमारी एवं अंजलि कुमारी को सांस्कृतिक कार्यक्रम में सुंदर प्रस्तुति देने हेतु ट्रैक शूट देकर सम्मानित किया गया है। कैडेट संजना कुमारी का चयन

2025 तक भारत से 20 अरब डॉलर निर्यात का लक्ष्य

दुनिया की शीर्ष ई-कॉमर्स कंपनी का अनुमान

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया की अग्रणी ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन ने इस साल के अंत तक भारत से 13 अरब डॉलर के निर्यात का लक्ष्य रखा है। इसके अमेजन ग्लोबल सेलिंग कार्यक्रम को 2015 में लॉन्च किया गया था। इससे अब तक 1.50 लाख निर्यातक जुड़े हैं। ये सभी पूरी दुनिया में 40 करोड़ से ज्यादा मेड इन इंडिया उत्पादों को अमेजन के जरिये बेचते हैं।

सर्वाधिक निर्यात वाले देश और भारत के राज्य अमेजन ने बृहस्पतिवार को कहा, जिन देशों को सर्वाधिक निर्यात हो रहा है, उनमें अमेरिका, ब्रिटेन,

संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरबिया, कनाडा, जर्मनी, इटली, फ्रांस, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर सहित अन्य देश हैं। जिन राज्यों से अमेजन के सबसे अधिक निर्यातक हैं उनमें महाराष्ट्र, दिल्ली, गुजरात, राजस्थान और कर्नाटक हैं।

सालाना आधार पर निर्यात में सबसे ज्यादा वृद्धि ब्यूटी, अपैरल, हेल्थ एवं पर्सनल केयर और खिलौने हैं। अमेजन इंडिया के ग्लोबल ट्रेड निदेशक भूपेन वाकनकर ने कहा, हमारे इस कार्यक्रम से देश के छोटे मझोले कारोबारियों का जीवन बदल गया है। वे पूरी दुनिया में मेड इन इंडिया उत्पाद बेच रहे हैं। कंपनी 2025 तक भारत से 20 अरब डॉलर का ई-कॉमर्स निर्यात का लक्ष्य रखी है।

यूपी के ये छोटे शहर निर्यातक के रूप में उभरे

अमेजन ने कहा, उत्तर प्रदेश के छोटे शहर निर्यातक के रूप में उभर रहे हैं। इनमें लखनऊ, कानपुर, गौतमबुद्ध नगर, मोरादाबाद, गाजियाबाद, मेरठ और आगरा जैसे शहर हैं। यहां पर 14,000 से ज्यादा छोटे कारोबारियों को अमेजन के कार्यक्रम से लाभ मिला है। हरियाणा के गुरुग्राम, फरीदाबाद, पानीपत, यमुना नगर, अंबाला और कुरुक्षेत्र में 8,000 कारोबारी निर्यातक बने हैं। उत्तराखंड में देहरादून, हरिद्वार, उधम सिंह नगर में 6,000 निर्यातकों को फायदा मिला है।

1000 करोड़ रुपये से ज्यादा के मिले ऑर्डर, इंफ्रा कंपनी के शेयरों में आई तूफानी तेजी

नईदिल्ली, एजेंसी। उदयशिवकुमार इंफ्रा लिमिटेड के शेयरों में तूफानी तेजी आई है। इंफ्रा कंपनी के शेयर शुक्रवार को 5 पर्सेंट के अपर सर्किट के साथ 62.51 रुपये पर पहुंच गए हैं। उदयशिवकुमार इंफ्रा लिमिटेड के शेयरों में गुरुवार को भी 5 पर्सेंट की तेजी देखने को मिली थी और कंपनी के शेयर 59.44 रुपये पर बंद हुए थे। उदयशिवकुमार इंफ्रा लिमिटेड ने बताया है कि केएमसी कंस्ट्रक्शन लिमिटेड के साथ उसका ज्वाइंट वेंचर कर्नाटक में 3 प्रमुख नेशनल हाईवे प्रोजेक्ट्स के लिए लोएस्ट बिडर के रूप में उभरा है। कंपनी को मिले यह प्रोजेक्ट्स टोटल 1057.3 करोड़ रुपये के हैं।

इस साल अब तक 53 प्रतिशत से ज्यादा उछल गए कंपनी के शेयर- कंपनी की स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग के मुताबिक, उदयशिवकुमार इंफ्रा लिमिटेड ने कर्नाटक में ईपीसी मोड के तहत नेशनल हाईवेज प्रोजेक्ट वर्क्स की बिडिंग के लिए चस्ष्ट कंस्ट्रक्शन लिमिटेड के साथ 3 ज्वाइंट वेंचर बनाए हैं। सभी तीनों ज्वाइंच वेंचर्स ने बिडिंग जीती है और लोएस्ट बिडर बन गए हैं। यह प्रोजेक्ट्स इंजीनियरिंग, प्रेक्योरमेंट और कंस्ट्रक्शन मोड के तहत दिए गए हैं और इसमें सड़क चौड़ी करने का काम शामिल है। उदयशिवकुमार इंफ्रा के शेयरों में इस साल अब तक 53 पर्सेंट से ज्यादा की तेजी देखने को मिली है।

8 करोड़ का इश्यू, 1000 करोड़ की बोलियां!

आईपीओ को लेकर सोशल मीडिया पर मचा है हंगामा

नई दिल्ली, एजेंसी। हाल में दिल्ली के एक दोपहिया वाहन डीलर का आईपीओ 400 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसके कुछ ही दिन बाद एसएमई कैटगरी के एक और आईपीओ ने बाजार में हलचल मचा दी है। इसे 100 गुना से ज्यादा सब्सक्रिप्शन मिला है। इस कंपनी के टूटे-फूटे ऑफिस की तस्वीरें सामने आने के बाद यह सुर्खियों में आया है। गुजरात की एक छोटी कंपनी बॉस पैकेजिंग सॉल्यूशंस के आईपीओ को 127 गुना सब्सक्राइब किया गया है। इसके आईपीओ का साइज 8 करोड़ रुपये है जबकि इसे 1,000 करोड़ रुपये से अधिक की डिमांड मिली है। सोशल मीडिया पर चर्चा के बाद सेबी और एनएसई अधिकारियों ने कंपनी के पिछले रिकॉर्ड को खंगाला है।

एक सूत्र ने कहा कि अधिकारियों ने कंपनी के कारखानों और कार्यालयों का जमीनी निरीक्षण किया है, और लिस्टिंग के लिए अपनी मंजूरी दे दी है। कंपनी काम कर रही है लेकिन इसमें ऐसा कुछ खास नहीं है। सोशल मीडिया पर यूजर एसएमई आईपीओ में हेराफेरी का आरोप लगा रहे हैं। उनका कहना है कि इस हेराफेरी का कारण बड़ी संख्या में निवेशक उनकी ओर आकर्षित हो रहे हैं। लेकिन मार्केट के जानकारों का कहना है कि यह पूरी तरह सच नहीं हो सकता है। एसएमई सेक्टर में सक्रिय एक मर्चेंट बैंकर ने बताया कि बाजार में उपलब्ध लिक्विडिटी और स्ह्रह्स्ह्र फैक्टर के कारण एसएमई आईपीओ में इतने ज्यादा ओवरसब्सक्रिप्शन हो रहे हैं।

बॉस पैकेजिंग के आईपीओ को मुंबई की मर्चेंट बैंकिंग फर्म फेडेक्स सिक्योरिटीज संभाल रही है। बॉस पैकेजिंग ने 66 रुपये प्रति शेयर की तय कीमत पर करीब 12.7 लाख शेयर ऑफर किए। 3 सितंबर को बोली के आखिरी दिन इसके शेयरों की कुल मांग करीब 16.3 करोड़ थी। तब से इसका ग्रे मार्केट प्रीमियम 5 रुपये से 12 रुपये के बीच उतार-चढ़ाव करता रहा है। कुछ सोशल मीडिया अकाउंट्स ने गूगल मैप्स के स्क्रीनशॉट शेयर किए हैं, जिसमें कंपनी की लोकेशन एक खस्ताहाल जगह पर दिखाई गई है। एक सूत्र ने कहा कि गूगल मैप्स की तस्वीर कंपनी की एक पुरानी यूनिट की है। कंपनी के पास मैन्युफैक्चरिंग, फैब्रिकेशन और असेंबली के लिए कई यूनिट्स है।

फ्री ओटीटी, जोमैटो गोल्ड... जियो की 8वीं सालगिरह पर मुकेश अंबानी का ग्राहकों को गिफ्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। रिलायंस जियो देश की सबसे बड़ी दूरसंचार कंपनी है। गुरुवार को इसकी आठवीं वर्षगांठ थी। इस मौके पर कंपनी ने अपने ग्राहकों के लिए चुनिंदा रिचार्ज प्लान पर कई बेनिफिट पेश किए। जियो की वेबसाइट पर दी गई जानकारी के अनुसार, पांच सितंबर से 10 सितंबर के बीच रिचार्ज कराने वालों को 899 रुपये और 999 रुपये के तीन महीने के प्लान के साथ 3,599 रुपये के वार्षिक प्लान पर 700 रुपये के तीन बेनिफिट मिलेंगे। इन पेशकश के लाभ में 10 ओटीटी की सदस्यता और 175 रुपये मूल्य की 28 दिन की वैधता के साथ 10 जीबी डेटा पैक, अन्य लाभों के अलावा जोमैटो की तीन महीने की फ्री गोल्ड मेंबरशिप शामिल है। दोनों प्लान (899 रुपये और 999 रुपये) में वर्तमान में दो जीबी की डेली इंटरनेट लिमिट है। इनकी वैलिडिटी 90 दिन और 98 दिन है। जबकि 3,599 रुपये का प्लान 2.5 जीबी की डेली डेटा लिमिट के साथ आता है, जो 365 दिनों के लिए वैध है। सितंबर, 2016 में मुफ्त वॉयस कॉल और सस्ती डेटा दरों के साथ जियो की एंट्री ने स्थापित प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ दिया था। इसके साथ ही मुकेश अंबानी के नेतृत्व वाली दूरसंचार कंपनी देश की टॉप दूरसंचार कंपनी के रूप में उभरी थी।

जियो को लेकर बड़ा है मुकेश अंबानी का प्लान

हाल ही में आयोजित वार्षिक आम बैठक में रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने जियो के भविष्य के लिए एआई और डीपटेक से जुड़े एक भव्य दृष्टिकोण को रेखांकित किया। अंबानी ने जियो यूजरों के लिए 100 जीबी तक मुफ्त क्लाउड स्टोरेज की घोषणा की। एआई सेवा प्लेटफॉर्म (जियो ब्रेन), राष्ट्रीय एआई अवसंरचना (जामनगर में गीगावाट-स्केल एआई-रेडी डेटा सेंटर), वॉयस असिस्टेंट हेलोजियो के साथ जियो टीवीओएस और जियोफोनकॉल एआई के बारे में बात की। आज, जियो के पास 49 करोड़ से अधिक ग्राहक हैं।

18 की उम्र में शादी, 30 में कारोबारी जगत में एंट्री

अब चलाती हैं 18,566 करोड़ की कंपनी

नई दिल्ली, एजेंसी। जयपुर से ताल्लुक रखने वाली दीपाली गोयनका ने बिजनेस की दुनिया में अपनी खास पहचान बनाई है। 1969 में एक मारवाड़ी परिवार में जन्मीं दीपाली ने महारानी गायत्री देवी गर्ल्स स्कूल से अपनी पढ़ाई पूरी की। 18 साल की उम्र में 1987 में वेलस्पन ग्रुप के को-फाउंडर और चेयरमैन बालकृष्ण गोयनका से उनकी शादी हो गई। शादी के बाद लंबे समय तक वह गृहिणी की भूमिका में ही रहीं। दीपाली ने 30 साल की उम्र में कारोबारी जगत में कदम रखे। इसके बाद उन्होंने पति के साथ मिलकर वेलस्पन को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया।

ऐसे हुई कारोबारी जगत में एंट्री

साल 2002 में दीपाली ने वेलस्पन के डिजाइन स्टूडियो को संभालते हुए अपने करियर की शुरुआत की। कॉटन की खरीदारी से लेकर मैन्यूफैक्चरिंग प्रोसेस तक उन्होंने बिजनेस के हर पहलू को सीखा। अपनी मेहनत और लगन से वह जल्द ही कंपनी में अपनी जगह बनाने में कामयाब रहीं।

क्रिस्टी के अधिग्रहण में निभाया अहम किरदार

2004 में वेलस्पन ने गुजरात में 2,500 एकड़ में फैला एक बड़ा टेक्सटाइल मैन्यूफैक्चरिंग प्लांट वेलस्पन सिटी स्थापित किया। इससे कंपनी को ग्लोबल मार्केट में अपनी पकड़ मजबूत करने में मदद मिली। 2006 में दीपाली ने 1850 में स्थापित घरेलू लिनेन की प्रसिद्ध निर्माता क्रिस्टी के अधिग्रहण का नेतृत्व किया। इससे वेलस्पन के प्रोडक्ट पोर्टफोलियो का विस्तार हुआ। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंच गई। 2010 में दीपाली को वेलस्पन के ग्लोबल बिजनेस का सीईओ नियुक्त किया गया। 2014 तक वह कंपनी की जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर बन गईं।

झटकों में बिखरने नहीं दी कंपनी

हालांकि, 2016 में वेलस्पन को एक बड़े झटके का सामना करना पड़ा। तब अमेरिकी रिटेलर टारगेट ने मिस्र के कॉटन के इस्तेमाल के खिलाफ वेलस्पन के साथ अपनी साझेदारी खत्म कर दी। इससे वेलस्पन की साख को नुकसान पहुंचा और कंपनी के शेयरों में भारी गिरावट आई। इस झटके के बावजूद दीपाली के नेतृत्व में वेलस्पन ने डेवलपमेंट और डायवर्सिफिकेशन जारी रखा। कंपनी ने अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया सहित 32 देशों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

नेतृत्व में नई ऊंचाइयों पर पहुंची वेलस्पन

दीपाली के नेतृत्व में वेलस्पन ने तरक्की की नई इबारत लिखी है। कंपनी का मूल्यांकन अब 18,348 करोड़ रुपये है, जो उनकी रणनीतिक दृष्टि और उत्कृष्टता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। एक गृहिणी से एक सफल बिजनेस लीडर तक का दीपाली का सफर कई लोगों के लिए प्रेरणा है।

2 के शेयर में 6 दिन से है तूफानी तेजी, कंपनी कर रही अपने कारोबार का विस्तार

नईदिल्ली, एजेंसी। सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को शेयर बाजार में भारी बिकवाली देखने को मिली। इस माहौल के बीच कुछ पेनी शेयरों में रॉकेट सी तेजी थी। ऐसा ही एक पेनी शेयर नॉन-बैंकिंग फाइनेंस कंपनी सनशाइन कैपिटल का है। इस पेनी शेयर में शुक्रवार को 5 प्रतिशत का अपर सर्किट लग गया। यह लगातार 6वां दिन है जब शेयर में तेजी दर्ज की गई।

इस मल्टीबैगर पेनी शेयर के पिछले छह कारोबारी दिन के परफॉर्मेंस को देखें तो उनमें से 4 दिन अपर सर्किट लग गया। एक सप्ताह के दौरान इस शेयर में 24 प्रतिशत से अधिक की तेजी आई है। बता दें कि शुक्रवार को शेयर बाजार में बिकवाली का माहौल था। इस माहौल के बीच संसेक्स 1000 अंक टूटकर 81,150 अंक के नीचे आ गया। निफ्टी में भी 200 अंकों से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई।

शेयर में तेजी की वजह

सनशाइन कैपिटल के शेयरों में तेजी गैर-बैंकिंग वित्त कंपनी (एनबीएफसी) द्वारा की गई कुछ पॉजिटिव घोषणाओं के बाद आई है। बीते गुरुवार को कंपनी ने इंश्योरेंस ब्रोकिंग बिजनेस में उतरने की घोषणा की। सनशाइन कैपिटल के निदेशक मंडल ने बीमा ब्रोकिंग व्यवसाय में कंपनी के संचालन का विस्तार करने के लिए आगे बढ़ने का निर्णय लिया है।

सनशाइन कैपिटल ने स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में कहा- यह विस्तार हमारे ग्राहकों को बेहतर सेवा देने की पहल है। इस कदम का मकसद हमारी वित्तीय सेवाओं की सीमा को व्यापक बनाना है। बीमा ब्रोकिंग क्षेत्र में प्रवेश करके, कंपनी भारत के बीमा उद्योग में अनुमानित वृद्धि का लाभ उठाना चाहती है।

एनएसई पर लिस्टिंग की तैयारी

सनशाइन कैपिटल के बोर्ड ने नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के मेनबोर्ड पर सूचीबद्ध करने की संभावना तलाशने का भी संकल्प लिया है। वर्तमान में सनशाइन कैपिटल के शेयर केवल बीएसई पर सूचीबद्ध हैं। सनशाइन कैपिटल का स्टॉक 7 मार्च, 2024 को एक्स-बोनस और एक्स-स्प्लिट हो गया। कंपनी ने 7 :1 के रेश्यो में बोनस शेयर जारी किए थे, जबकि स्टॉक स्प्लिट 10 :1 के रेश्यो में हुआ था।

दर्शक से लेकर खलनायक बनने तक गौरव अरोड़ा का सफर

नई दिल्ली, एजेंसी। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि आप अपना भाग्य खुद लिखते हैं और बहुप्रतीक्षित शो 'तनाव 2' में प्रमुख खलनायक की भूमिका निभा रहे गौरव अरोड़ा ने इस बात को सच साबित किया है। इस महत्वपूर्ण भूमिका तक गौरव का सफर उनकी प्रतिभा का सबूत ही नहीं देता है, बल्कि विश्वास और अपने सपनों के साकार होने की ताकत भी दिखाता है। जब उन्होंने समीक्षकों द्वारा सराही गई ओरिजिनल इजराइली सीरीज 'फौदा' की गहराई और एनर्जी को पहली बार देखा तो उन्हें पता चला कि 'तनाव सीजन 1' में उसकी दमदार कहानी कैसे लाई गई है, तब उन्होंने अपने भीतर भी आग का अनुभव किया था। एक दर्शक के तौर पर वह बेहद रोमांचित हुए थे और फिर उन्होंने 'तनाव' में खुद की कल्पना की। उन्हें पता नहीं था कि यह कल्पना और गहरा लगाव आखिरकार उन्हें ऑफिशियल इंडियन रीमेक 'तनाव' के सीजन 2 में सबसे बड़े खलनायक की भूमिका तक पहुँचा देगा। अपने जुनून और कल्पना को सच्चाई में बदलने के बारे में बताते हुए, अरोड़ा ने कहा, ''तनाव' का पहला सीजन और ओरिजिनल सीरीज 'फौदा' देखने के बाद मैं पूरी तरह से हिल गया था।

एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने अपनी 1000वीं शाखा की शुरुआत की

मुंबई , एजेंसी। भारत के गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) क्षेत्र की एक प्रमुख कंपनी एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट कं. लि. ने वाशी, नवी मुंबई में अपनी 1000वीं शाखा खोलने की घोषणा की है। यह ऐतिहासिक घटना देश भर में अपने पदचिन्हों का विस्तार करने और कम पहुंच वाले बाजारों में वित्तीय सेवाएं लाने के प्रति कंपनी की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को चिन्हित करने के लिए, एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने इंडिया पोस्ट के साथ मिलकर एक विशेष कवर और माई स्टैम्प जारी किया है। आधिकारिक अनावरण के अवसर पर मुंबई में जापान के महावाणिज्य दूतावास के महावाणिज्यदूत श्री यागी कोजी, महाराष्ट्र सर्किल में डाक सेवाओं (मुख्यालय) के निदेशक श्री अभिजीत बंसोडे और

एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के सीईओ और एमडी श्री शांतनु मित्रा उपस्थित थे। 1000वीं शाखा का शुभारंभ एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के बड़े और विविध भारतीय बाजार में अपनी उपस्थिति को गहरा करने के नीतिगत दृष्टिकोण का प्रमाण है। 2007 में अपनी स्थापना के बाद से, कंपनी लगातार विकास करते हुए एक अखिल भारतीय संस्थान के रूप में विकसित हुई है जो अब 670 से अधिक शहरों और 70,000 गांवों में काम करती है, जिसे 23,000 से अधिक कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त है। पिछले दो वर्षों में, एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने लगभग 300 नई शाखाएं खोली हैं। यह विस्तार भारत भर में विविध आबादी तक औपचारिक ऋण पहुंच का विस्तार करने और उन्हें वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम बनाने के कंपनी के मिशन के अनुरूप है।

संक्षिप्त समाचार

इरानी-वावसोरी को मिश्रित युगल का खिताब

पेगुला-सबालेंका में होगा फाइनल मुकाबला

न्यूयॉर्क, एजेंसी। न्यूयॉर्क की 30 वर्षीय छठी वरीयता प्राप्त पेगुला ने करोलिना मुचोवा को 1-6, 6-4, 6-2 से हराकर पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया। महिला एकल के एक अन्य सेमीफाइनल में पिछले साल की उपविजेता सबालेंका ने अमेरिका की एम्मा नवारो को 6-3, 7-6 (2) से हराया।

सारा इरानी और एंड्रिया वावसोरी ने गुरुवार को टेलर टाउनसेंड और डोनाल्ड यंग को 7-6 (0), 7-5 से हराकर अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट में मिश्रित युगल का खिताब जीता। इटली की अपनी साथी रोबर्टा विंची के साथ महिला युगल में करियर ग्रैंड स्लैम जीतने वाली इरानी का यह अपने करियर का पहला मिश्रित युगल खिताब है। उन्होंने पिछले महीने जैस्मीन पाओलिनी के साथ मिलकर पेरिस ओलंपिक खेलों में महिला युगल में स्वर्ण पदक जीता था।

बचपन के मित्र टाउनसेंड और यंग को अमेरिकी ओपन में इस साल वाइल्ड कार्ड से प्रवेश दिया गया था। यंग पहले ही घोषणा कर चुके थे कि वह इस टूर्नामेंट के बाद टेनिस से संन्यास ले लेंगे। अमेरिका की जेसिका पेगुला ने पहला सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करके अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल के फाइनल में जगह बनाई जहां उनका सामना आर्यना सबालेंका से होगा।

न्यूयॉर्क की 30 वर्षीय छठी वरीयता प्राप्त पेगुला ने करोलिना मुचोवा को 1-6, 6-4, 6-2 से हराकर पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया। महिला एकल के एक अन्य सेमीफाइनल में पिछले साल की उपविजेता सबालेंका ने अमेरिका की एम्मा नवारो को 6-3, 7-6 (2) से हराया।

पेगुला की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उन्हें संघर्ष करना पड़ा। मुचोवा ने पहला सेट आसानी से 28 मिनट में जीता। उन्होंने पहले नौ गेम में से आठ में जीत हासिल की और दूसरे सेट में वह 3-0 से आगे थी लेकिन इसके बाद उनकी लय गड़बड़ा गई। पेगुला तब तक लय हासिल कर चुकी थी और उन्होंने इसके बाद अपनी प्रतिद्वंद्वी को कोई मौका नहीं दिया।

आईपीएल 2025 से पहले

कुमार संगाकारा लेंगे गौतम गंभीर की जगह

नईदिल्ली, एजेंसी। आईपीएल 2025 से पहले सिर्फ टीमों में खिलाड़ियों के रूप में नहीं, बल्कि कोचिंग स्टाफ के रूप में भी बड़े बदलाव देखने को मिल सकते हैं. जैसे मेगा ऑक्शन से पहले खिलाड़ी एक टीम से दूसरी टीम में जा सकते हैं, वैसे ही कोचिंग स्टाफ के सदस्य भी एक टीम से दूसरी टीम में शामिल हो सकते हैं. अब खबर सामने आई कि राजस्थान रॉयल्स के टीम डायरेक्टर कुमार संगाकारा कोलकाता नाइट राइडर्स में गौतम गंभीर की जगह ले सकते हैं. रिपोर्ट के मुताबिक, संगाकारा कोलकाता नाइट राइडर्स के मेंटॉर बनने की बातचीत में लगे हुए हैं. अगर संगाकारा केकेआर के मेंटॉर बनते हैं, तो वह गौतम गंभीर की जगह लेंगे. टीम इंडिया के हेड कोच बनने के बाद गंभीर को केकेआर का साथ छोड़ना पड़ा था. 2024 में गंभीर कोलकाता के मेंटॉर के रूप में नजर आए थे. अब 2025 में कुमार संगाकार केकेआर के मेंटॉर के रूप में दिख सकते हैं. रिपोर्ट में इस बात का भी खुलासा किया गया कि श्रीलंका के पूर्व बल्लेबाज कुमार संगाकारा राजस्थान रॉयल्स से अपने रास्ते अलग करके दूसरी टीमों के ऑफर को देखना चाहते हैं।

नीरज चोपड़ा ने ब्रुसेल्स में डायमंड लीग फाइनल के लिए क्वालीफाई किया

नई दिल्ली, एजेंसी। पेरिस ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाले भारतीय भाला फेंक स्टार नीरज चोपड़ा ने 14 सीरीज मीट के बाद समग्र स्टैंडिंग में चौथे स्थान पर रहकर ब्रुसेल्स में डायमंड लीग फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया है। सीज़न का समापन 13 और 14 सितंबर को दो दिवसीय कार्यक्रम होगा। डायमंड लीग का 2022 संस्करण जीतने वाले भारतीय स्टार एथलीट ने दोहा और लुसाने में श्रृंखला की दो प्रतियोगिताओं में भाग लिया और दूसरे स्थान पर रहकर 14 अंक अर्जित किए। उन्होंने गुरुवार को मीट के यूरिख चरण से बाहर होने का विकल्प चुना।

नीरज तीसरे स्थान पर मौजूद चेक गणराय के जैकब वाडलेच से दो अंक पीछे हैं। पेरिस ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता ग्रेनाडा के एंडरसन पीटर्स और जर्मन स्टार जूलियन वेबर क्रमशः 29 और 21 अंकों के साथ पहले दो स्थान पर हैं। 26 वर्षीय खिलाड़ी दो ओलंपिक पदक जीतने वाले दूसरे भारतीय ट्रैक और फील्ड एथलीट बन गए। इससे पहले उन्होंने टोक्यो ओलिंपिक में गोल्ड मेडल जीतकर इतिहास रचा था। पेरिस ओलंपिक में, नीरज अपनी कमर की चोट से जूझ रहे थे, जिसके कारण वह 90 मीटर के निशान को पार नहीं कर पाए।

नीरज अपने छठे और अंतिम प्रयास में 89.49 मीटर के थ्रो के साथ लुसाने डायमंड लीग में दूसरे स्थान पर रहे। पीटर्स ने अपने 90.61 मीटर के अंतिम थ्रो के साथ और जर्मनी के जूलियन वेबर ने 88.37 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ क्रमशः पहला और तीसरा स्थान हासिल किया। पेरिस में, चोपड़ा ने 89.45 मीटर के थ्रो के साथ रजत पदक हासिल किया, जो 87.58 मीटर में स्पष्ट सुधार था जिसने उन्हें टोक्यो में स्वर्ण पदक दिलाया, लेकिन यह मौजूदा विश्व चैंपियन और डायमंड लीग फाइनल विजेता के लिए पर्याप्त साबित नहीं हुआ। खेल में उनके अछे दोस्त पाकिस्तान के अरशद नदीम ने 92.97 मीटर की जबरदस्त थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीतने का ओलंपिक रिकॉर्ड बनाकर उन्हें पीछे छोड़ दिया।

900 गोल की उपलब्धि पर पहुंचे करिश्माई स्ट्राइकर रोनाल्डो

लिस्बन, एजेंसी। करिश्माई स्ट्राइकर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने क्लब और देश के लिए अपने करियर का 900वां गोल किया, यह उपलब्धि पहले कभी नहीं हुई। छह बार के बैलन डीओर विजेता ने यूईएफए नेशंस लीग ग्रुप मैच में क्रोएशिया पर 2-1 की जीत के दौरान पुर्तगाल का दूसरा गोल किया। जबरदस्त उपलब्धि के बाद, रोनाल्डो ने कहा कि वह रिकॉर्ड नहीं तोड़ते बल्कि वे उन्हें परेशान करते हैं। रोनाल्डो ने मैच के बाद साक्षात्कार में कहा, 900 गोल किसी भी अन्य मील के पत्थर की तरह लगते हैं, लेकिन केवल मैं ही जानता हूं कि अपना 900वां गोल करने के लिए हर दिन कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यह मेरे करियर में एक अनोखा मील का पत्थर है। मैं रिकॉर्ड नहीं तोड़ता, वे मुझे परेशान करते हैं! रोनाल्डो का गोल उस रात अंतर पैदा करने वाला साबित हुआ और पुर्तगाल को नेशंस लीग ग्रुप ए अभियान में विजयी शुरुआत करने में मदद मिली। 2016 यूरो विजेताओं के लिए यह उनका 131वां गोल था। अल-नासर फारवर्ड अपने मील के पत्थर के जश्न में छह-यार्ड बॉक्स के किनारे से स्कोर करने के बाद अपने घुटनों पर गिर गए और अपने देश में ऐसा करने का सम्मान पाने के जबरदस्त क्षण से भावुक थे।

हालाँकि यह अनिश्चित है कि रोनाल्डो का अंतर्राष्ट्रीय करियर कब समाप्त हो सकता है, पुर्तगालियों ने हाल ही में स्वीकार किया है कि यह सहज निर्णय होगा, 39 वर्षीय ने कहा कि वह अब राष्ट्रीय टीम के लिए ट्रॉफी जीतने के लिए प्रेरित नहीं हैं। उन्होंने कहा, पुर्तगाल का यूरो जीतना विश्व कप जीतने के बराबर है। मैं पहले ही पुर्तगाल के लिए दो ट्रॉफियां जीत चुका हूं जो मैं वास्तव में चाहता था। मैं इससे प्रेरित नहीं हूं। मैं फुटबॉल का आनंद लेने से प्रेरित हूं और रिकॉर्ड स्वाभाविक रूप से बनते हैं। अपने करियर में रोनाल्डो ने दो दशकों से अधिक समय तक यूरोप में अपना दबदबा कायम रखा है और वह फुटबॉल इतिहास में सबसे शानदार गोल स्कोरर में से एक साबित हुए हैं। स्पोर्टिंग लिस्बन (5 गोल) मैनचेस्टर यूनाइटेड (145 गोल), रियल मैड्रिड (450 गोल) जुवेंटस (101 गोल), अल-नासर (68 गोल। उनके कार्यकाल ने उन्हें अनगिनत रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज कराते देखा है।

इस ऐतिहासिक मील के पत्थर तक पहुंचने के बाद, रियल मैड्रिड, वह क्लब जहां पुर्तगाली स्ट्राइकर ने मिस्टर चैंपियंस लीग उपनाम अर्जित किया, ने अपने सर्वकालिक शीर्ष गोल स्कोरर को बधाई देने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लिया।

पूर्व गोलकीपर पीआर श्रीजेश बोले- अगले ओलंपिक में स्वर्ण जीत सकती है भारतीय हॉकी टीम

लॉस एंजिलिस, एजेंसी। भारत के महान गोलकीपर पी आर श्रीजेश का मानना है कि टोक्यो और पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के बाद भारतीय हॉकी टीम 2028 में लॉस एंजिलिस में होने वाले खेलों में स्वर्ण पदक जीत सकती है। पेरिस ओलंपिक के बाद खेल को अलविदा कहने वाले श्रीजेश ने यहां पत्रकारों से कहा, हमारे पास काफी प्रतिभाशाली टीम है । मेरी जगह लेने वाला कृशन पाठक शानदार गोलकीपर है। यह टीम लॉस एंजिलिस ओलंपिक में स्वर्ण जीत सकती है। श्रीजेश ने कहा, बिहार में मैने सकारात्मक बदलाव देखें हैं, खासकर राजगीर में खेल परिसर में। वहां अब एस्ट्रो टर्फ लग गई है और इस साल के आखिर में महिला एशियाई कप ट्रॉफी भी खेली जा रही है। उन्होंने कहा, बिहार देश में खेल का अगला केंद्र बन सकता है । मैने यहां खेल विभाग के अधिकारियों से बात की है और कई नयी पहल यहां शुरू हो रही है।

भारतीय जूनियर टीम के कोच बने श्रीजेश ने कहा कि उनकी नजरें अगले एशिया कप पर है और वे पूर्व क्रिकेट कप्तान और कोच राहुल द्रविड़ से प्रेरणा लेते हैं। भारतीय क्रिकेट की दीवार कहे जाने वाले द्रविड़ ने कोच के तौर पर भारतीय क्रिकेट में सराहनीय योगदान दिया है।

पूर्व पहलवान विनेश फोगाट ने भारतीय रेलवे से दिया इस्तीफा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की पूर्व पहलवान विनेश फोगाट ने निजी कारणों का हवाला देकर भारतीय रेलवे से शुक्रवार को इस्तीफा दे दिया जबकि उनके कांग्रेस पार्टी में शामिल होने की अटकलें तेज हैं।

विनेश ने एक्स पर लिखा, 'भारतीय रेलवे की सेवा करना मेरे जीवन का यादगार और गर्व से भरा समय रहा। उन्होंने आगे लिखा, 'मैने रेलवे की सेवा से खुद को अलग करने का फैसला किया है और भारतीय रेलवे के संबंधित अधिकारियों को अपना इस्तीफा भेज दिया है।

भारत को ऑस्ट्रेलिया में हराना क्यों है मुश्किल, मार्नस लाबुशेन ने बताई बड़ी वजह

मुंबई, एजेंसी। स्टार बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन ने कहा कि भारत के तेज गेंदबाजों के कारण उसे बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में आस्ट्रेलियाई हालात में हराना कठिन होगा। भारत ने 2014-15 में 1-2 से हारने के बाद ऑस्ट्रेलिया को हर द्विपक्षीय टेस्ट श्रृंखला में हराया है। भारत ने 2018-19 में ऑस्ट्रेलिया में श्रृंखला 2-1 से जीती थी।

लाबुशेन ने कहा, 'भारत के तेज गेंदबाज शानदार हैं जिसकी वजह से आस्ट्रेलियाई हालात में उन्हें हराना कठिन होगा। उन्होंने कहा, 'इस श्रृंखला को लेकर काफी अपेक्षाएं हैं। इन दोनों टीमों के बीच मुकाबले हमेशा कठिन होते हैं, चाहे वे जहां भी खेले जाएं। ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर नाथन लियोन ने भारतीय खिलाड़ियों को सुपरस्टार कहा और भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के साथ मैदान पर प्रतिद्वंद्विता फिर शुरू होने की उम्मीद जताई। उन्होंने कहा, 'मैने अपने पूरे करियर में कहा है कि मैं सर्वश्रेष्ठ के खिलाफ खेलना चाहता हूं। आप पूरी भारतीय टीम को देख लीजिये जिसमें सुपरस्टार भरे हैं। उन्होंने कहा, 'अश्विन और मैने एक ही समय पर पदार्पण किया था और कई श्रृंखलाओं में एक दूसरे के खिलाफ खेले हैं। मेरे मन में उनके लिए काफी सम्मान है। वह आफ स्पिन का महारती है और उससे काफी कुछ सीखने को मिलता है।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला 22 नवंबर से पर्थ में शुरू होगी। भारत विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप चक्र 2023-25 में 68.52 अंक लेकर शीर्ष पर है जबकि ऑस्ट्रेलिया 62.50 अंक लेकर दूसरे स्थान पर है। विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल अगले साल 11 से 15 जून को लाडर्स पर खेला जाएगा।

आपको अपना सर्वश्रेष्ठ देना होगा क्योंकि हर जीत मायने रखती है : यशस्वी जायसवाल

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के युवा बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल का मानना है कि टीम को अगले कुछ महीनों में खेले जाने वाले 10 टेस्ट मैचों में अपना सर्वश्रेष्ठ देना होगा। उन्होंने कहा कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के कारण हर जीत बहुत मायने रखती है। पिछले साल वेस्टइंडीज के खिलाफ अपने टेस्ट डेब्यू पर जायसवाल ने शानदार 171 रन बनाए और इस साल इंग्लैंड पर भारत की 4-1 की जीत में उन्हें प्लेयर ऑफ द सीरीज चुना गया जिसमें विशाखापत्तनम और राजकोट में लगातार दोहरे शतक शामिल हैं।

वह सुनील गावस्कर के बाद द्विपक्षीय टेस्ट सीरीज में 700 रन बनाने वाले दूसरे भारतीय बल्लेबाज बन गए। जायसवाल ने कहा, विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के कारण हर मैच महत्वपूर्ण है। आपको अपना सर्वश्रेष्ठ देना होगा क्योंकि हर जीत मायने रखती है। भारत के लिए खेलने का कोई भी अवसर अविश्वसनीय है, और देश

का प्रतिनिधित्व करना मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा है। भारत अपने घरेलू सत्र की शुरुआत बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर को चेन्नई में दो मैचों की टेस्ट सीरीज से करेगा। बांग्लादेश रावलपिंडी में पाकिस्तान पर 2-0 की ऐतिहासिक सीरीज जीत हासिल करने के बाद आएगा। जायसवाल ने कहा, मुझे लगता है कि वे अछा खेल रहे हैं। उनके साथ मैच खेलना मजेदार होगा, टेस्ट मैच खेलना मजेदार है। मैं वास्तव में इसके लिए उत्सुक हूं। जायसवाल ने गुरुवार को बेंगलुरु में भारत ए के खिलाफ दलीप ट्रॉफी के पहले दौर के खेल में भारत बी के 321 के कुल स्कोर में 30 रन बनाए। घरेलू क्रिकेट से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में आसानी से बदलाव करने में उनकी मदद करने वाली चीजों के बारे में पूछे जाने पर जायसवाल ने कहा, मैंने अपना फॉर्म बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत की है और इसे बनाए रखने के लिए ऐसा करना जारी रखूंगा। मैं अपने अभ्यास और तैयारी के साथ जितना अधिक सुसंगत रहूंगा मेरे परिणाम उतने ही बेहतर होंगे। मैं बहुत यादा नहीं सोचता, मुझे बस अछी तरह से तैयारी करने और एक खिलाड़ी के रूप में खुद को बेहतर बनाने की जरूरत है।

मुझे भी ऑफर मिला था, लेकिन..., बजरंग-विनेश की राजनीति में एंट्री के बीच साक्षी मलिक का बयान

नई दिल्ली, एजेंसी। विनेश ने एक्स पर लिखा, भारतीय रेलवे की सेवा करना मेरे जीवन का यादगार और गर्व से भरा समय रहा। मैंने रेलवे की सेवा से खुद को अलग करने का फैसला किया है और भारतीय रेलवे के संबंधित अधिकारियों को अपना इस्तीफा भेज दिया है।

भारत की पूर्व पहलवान विनेश फोगाट ने निजी कारणों का हवाला देकर भारतीय रेलवे से शुक्रवार को इस्तीफा दे दिया। इसके बाद वह कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गई हैं। वहीं, टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाले बजरंग पूनिया के भी कांग्रेस में शामिल हो चुके हैं। इस बीच बजरंग और विनेश को लेकर रियो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता पहलवान साक्षी मलिक का बयान भी सामने आया है।

उन्होंने कहा, किसी पार्टी में शामिल होना उनकी निजी पसंद है। मेरा मानना है कि हमें त्याग करना चाहिए। हमारे आंदोलन और महिलाओं के लिए लड़ाई को गलत धारणा नहीं दी जानी चाहिए। मेरी तरफ से आंदोलन जारी है। मुझे भी ऑफर मिले थे, लेकिन मैं अंत तक देखना चाहती थी कि मैंने क्या शुरू किया है। जब तक फेडरेशन की सफाई नहीं हो जाती और महिलाओं का शोषण बंद नहीं हो जाता, मेरी लड़ाई जारी रहेगी। यह लड़ाई वास्तविक है और यह जारी रहेगा।

विनेश ने एक्स पर लिखा, भारतीय रेलवे की सेवा करना मेरे जीवन का यादगार और गर्व से भरा समय रहा। मैंने रेलवे की सेवा से खुद को अलग करने

का फैसला किया है और भारतीय रेलवे के संबंधित अधिकारियों को अपना इस्तीफा भेज दिया है। विनेश ने लिखा, मैं रेलवे द्वारा देश की सेवा करने का मौका दिये जाने के लिये सदैव भारतीय रेलवे परिवार की आभारी रहूंगी। विनेश ने पेरिस ओलंपिक में 50 किलो के स्वर्ण पदक के मुकाबले से ठीक पहले अयोग्य करार दिए जाने के कारण कुश्ती से संन्यास ले लिया था। उनकी अपील को खेल पंचाट ने खारिज कर दिया था। भारतीय रेलवे की सेवा मेरे जीवन का एक यादगार और गौरवपूर्ण समय रहा है। जीवन के इस मोड़ पर मैंने स्वयं को रेलवे सेवा से पृथक करने का निर्णय लेते हुए अपना त्यागपत्र भारतीय रेलवे के सक्षम अधिकारियों को सौप दिया है।

विनेश और बजरंग के हरियाणा विधानसभा में चुनाव लड़ने की संभावना है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, विनेश को दादरी से टिकट दिया जा सकता है, जबकि बजरंग को किसी जाट बहुल सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। इससे पहले हरियाणा बीजेपी के वरिष्ठ नेता अनिल विज ने विनेश पर निशाना साधा था। उन्होंने कहा था कि अगर विनेश देश की बेटी से कांग्रेस की बेटी बनना चाहती है, तो हमें क्या दिक्कत होगी। उन्होंने पहलवानों के विरोध प्रदर्शन का जिक्र करते हुए कहा कि कांग्रेस के उकसाने से ही पहलवान आंदोलन चल रहे थे, नहीं तो उसका फैसला भी हो जाता।

संक्षिप्त समाचार

चुनाव से पहले ही हार मान चुकी है बीजेपी: कुमारी शैलजा

चंडीगढ़, एजेंसी। कांग्रेस नेता कुमारी शैलजा ने गुरुवार को बीजेपी के उम्मीदवारों की पहली सूची पर कहा कि यह पार्टी पहले ही हार मान चुकी है। इस सूची से पार्टी की कुंठा जाहिर होती है। ऐसा लग रहा है कि जैसे मानो कोई बंजर जमीन हो। कुमारी शैलजा ने आश्चर्य जताते हुए कहा कि पार्टी 10 सालों से सत्ता में है, लेकिन उसे उम्मीदवार बनाने के लिए कोई नेता तक नहीं मिला। आखिर मिलेगा भी कैसे? सभी तो पार्टी छोड़कर जा रहे हैं। मुझे लगता है कि बीजेपी को अब आत्मचिंतन की आवश्यकता है कि आखिर क्यों लोगों का उससे मोह भंग हो रहा है। कांग्रेस नेता ने बीजेपी को आड़े हाथों लेते हुए कहा, यह पार्टी अब हताश हो चुकी है। इस पार्टी से लोगों का विश्वास उठ चुका है। इसकी विश्वसनीयता ही खतरे में है। कुमारी शैलजा से जब कांग्रेस उम्मीदवारों की सूची के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने कहा, जल्द ही उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी जाएगी। अभी इसे लेकर बैठकों का दौर जारी है। लोगों की राय ली जा रही है। यह अच्छी बात है कि सभी के सुझावों का स्वागत किया जा रहा है, ताकि किसी भी नतीजे पर पहुंचने में कोई समस्या न हो। पार्टी नेतृत्व ने हमसे स्पष्ट कहा है कि आप प्रदेश की सभी 90 सीटों को लेकर अपने सुझाव दे सकते हैं। उल्लेखनीय है कि बुधवार को बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति ने उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की थी। इसमें कुल 67 उम्मीदवारों के नाम दर्ज हैं। इसके अलावा, नौ मौजूदा विधायकों का टिकट काट दिया गया और तीन पूर्व विधायकों पर भरोसा जताया गया। हरियाणा में एक ही चरण में पांच अक्टूबर को चुनाव होंगे और आठ अक्टूबर को नतीजे घोषित होंगे।

सैम पित्रोदा के बयान पर बीडी शर्मा बोले, कांग्रेस में चापलूसी का दौर

भोपाल, एजेंसी। कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा के एक बयान ने सियासी हलकों में तूफान मचा दिया है। पित्रोदा ने दावा किया कि राहुल गांधी अपने पिता राजीव गांधी से ज्यादा समझदार हैं। इस बयान के बाद से राजनीतिक दलों के नेताओं की प्रतिक्रिया का दौर जारी है। मध्य प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बीडी शर्मा ने पित्रोदा के बयान पर पलटवार करते हुए कहा है कि सैम पित्रोदा वही हैं, जो देश के अंदर कई विवादास्पद बयानों में घिरे रहे हैं। उन्होंने कहा कि सैम पित्रोदा का यह बयान कि राहुल गांधी राजीव गांधी से भी अच्छे हैं, कांग्रेस नेता लक्ष्मण सिंह ने ही खारिज कर दिया है। लक्ष्मण सिंह ने कहा कि सैम पित्रोदा कांग्रेस के घोर विरोधी हैं और उनका यह बयान कांग्रेस की चापलूसी का हिस्सा है। शर्मा ने कहा कि यह दौर कांग्रेस में चापलूसी का है, जो सैम पित्रोदा प्रदर्शित कर रहे हैं। बता दें कि लक्ष्मण सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर सैम पित्रोदा के उस बयान पर निशाना साधा था, जिसमें सैम ने कहा था कि राहुल गांधी पिता राजीव से ज्यादा समझदार हैं। लक्ष्मण सिंह ने एक्स पर लिखा था कि यह कांग्रेस का सबसे बड़ा दुश्मन है। बाप बेटे में फर्क पैदा कर रहा है। हालांकि, बाद में उन्होंने अपना पोस्ट डिलीट कर दिया था। सैम पित्रोदा ने कहा था कि राहुल गांधी अपने पिता राजीव गांधी से ज्यादा समझदार हैं। राहुल गांधी की इमेज को सोशल मीडिया पर खराब किया गया था, इसके लिए लाखों डॉलर खर्च किए गए थे। अब लोगों को दिख रहा है कि वह उनकी झूठी इमेज थी। राहुल गांधी भविष्य के प्रधानमंत्री की सारी योग्यताएं हैं। वो एक अच्छे इंसान हैं और पढ़ें लिखे हैं।

उमर अब्दुल्ला के लिए गांदरबल सीट आसान नहीं

इन चार नेताओं से होगा मुकाबला

गांदरबल, एजेंसी। जम्मू एवं कश्मीर की गांदरबल विधानसभा सीट पर मुकाबला नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला के लिए आसान नहीं होगा। इस सीट के लिए कुल 24 उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया है। जिनमें से चार उम्मीदवार उमर अब्दुल्ला को कांटे की टक्कर देंगे। मौलवी सरजन बरकती ने भी इस विधानसभा क्षेत्र से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया।

बता दें कि सरजन अहमद वागे उर्फ सरजन बरकती उर्फ आजादी चाचा 2016 में तब सुर्खियों में आया था, जब 8 जुलाई 2016 को अनंतनाग जिले के कोकरनाग इलाके में सुरक्षा बलों ने हिजबुल के पोस्टर बॉय बुरहान वानी को मार गिराया था। उस दौरान बरकती के भड़काऊ भाषणों ने युवाओं को आतंकवादी संगठनों में शामिल होने के लिए उकसाया था। बरकती इस समय जेल में बंद है। उसे पहली बार 2016 में गिरफ्तार किया गया था और रिहा होने के बाद पिछले साल उसे फिर से गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत गिरफ्तार किया गया। उसे आतंकवादी-अलगाववादी का विचारक, प्रवर्तक और समर्थक माना जाता है। उसकी पत्नी को भी धन शोधन के एक मामले में गिरफ्तार किया गया था।

इससे पहले शोपियां जिले के जैनपोरा निर्वाचन क्षेत्र में बरकती का नामांकन पत्र खारिज कर दिया गया था, क्योंकि जेल अधीक्षक द्वारा सत्यापित अनिवार्य शपथ पत्र नामांकन पत्र के साथ संलग्न नहीं था। अब गांदरबल और बीरवाह में उसके कागजात की जांच की जाएगी। रिश्तेदारों और समर्थकों का दावा है कि इस बार मौलवी के कागजात हर तरह से पूरे हैं। वैसे कहा ये भी जा रहा है कि उमर अब्दुल्ला के खिलाफ चुनावी मैदान में बरकती की दावेदारी का एनसी नेता के लिए कम चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि अब्दुल्ला परिवार एक राजनीतिक परिवार के रूप में गांदरबल में अच्छी तरह से स्थापित है। हालांकि बरकती ने उमर अब्दुल्ला के खिलाफ चुनौती को थोड़ा बढ़ा दिया है, लेकिन गांदरबल में एनसी की असली चिंता अन्य दो संभावित मजबूत उम्मीदवारों से है। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) के बशीर अहमद मीर और जेएंडके यूनाइटेड मूवमेंट (जेकेयूएम) से राह जुदा कर निर्दलीय ताल ठोक रहे इश्फाक जब्बार शामिल हैं। बता दें कि मीर पड़ोसी कंगन विधानसभा क्षेत्र से आते हैं। वह पहले भी एनसी के वरिष्ठ गुज्जर नेता मियां अल्ताफ अहमद को चुनौती देते रहे हैं। 2014 के चुनावों में मियां ने मीर को 2,000 से भी कम मतों से हराया था और यह उन लोगों के लिए एक बड़ा झटका था जो यह मान रहे थे कि कंगन निर्वाचन क्षेत्र में मियां परिवार की धार्मिक-राजनीतिक ताकत के सामने मीर काफी पीछे दूसरे स्थान पर रहेंगे। परिसीमन के बाद कंगन अब एक अनुसूचित जनजाति सीट है और यही मुख्य कारण है कि बशीर मीर पड़ोसी गांदरबल विधानसभा सीट पर चले गए। मीर का गांदरबल में जाना भगोड़े का भागना नहीं है। गांदरबल में पीडीपी की एक राजनीतिक पार्टी के रूप में अच्छी पकड़ है और यही वह निर्वाचन क्षेत्र है जहां 2002 के चुनावों में उमर अब्दुल्ला पीडीपी के काजी अफजल से हार गए थे। उमर ने बाद में 2008 में यहां से जीत हासिल कर अपनी हार का बदला लिया, लेकिन 2024 में मुकाबला कुछ हटकर मुकाबला होगा। युवा वोटर्स बशीर मीर के पक्ष में एकजुट हो गए हैं और इससे उमर अब्दुल्ला के खिलाफ संभावनाएं बढ़ गई हैं। इश्फाक जब्बार की मौजूदगी से भी एनसी की चिंताएं बढ़ गई हैं। 2014 में उन्होंने इस निर्वाचन क्षेत्र से एनसी उम्मीदवार के तौर पर जीत हासिल की थी, लेकिन बाद में उन्हें 'एनसी विरोधी गतिविधियों' के चलते पार्टी से निकाल दिया गया था। इश्फाक गांदरबल के लार गांव से ताल्लुक रखते हैं और दिवंगत शेख जब्बार के बेटे हैं, जो एक वरिष्ठ एनसी नेता थे, जिन्होंने 1984 में डॉ. फारूक अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली एनसी सरकार को गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी- तब 17 एनसी विधायकों ने पार्टी छोड़ दी थी और फारूक के बहनोई जीएम शाह ने दलबदलुओं का नेतृत्व करते हुए कांग्रेस के समर्थन से सरकार बनाई थी। इश्फाक ने पिछले 10 वर्षों से गांदरबल के लोगों के बीच अपनी उपस्थिति बनाए रखी है। इसी दौरान उन्होंने जेकेयूएम का गठन किया। उमर अब्दुल्ला के खिलाफ उनकी मौजूदगी ऐसी नहीं है जिसे एनसी हल्के में ले सकती है।

गुरुग्राम में बीटेक के छात्र का अपहरण, आरोपियों ने बाइक बेची और खाते से निकाले लाखों रुपए

गुरुग्राम, एजेंसी। गुरुग्राम विश्वविद्यालय के बी.टेक (सेकेंड ईयर) के छात्र का अपहरण कर उसकी बाइक बेचने और खाते से जबरन 1.87 लाख रुपए निकाले जाने का मामला सामने आया है। छात्र का आरोप है कि तीन युवकों ने कथित तौर पर एसयूवी में उसे अगवा कर लिया और रुपये निकाल लिए। इस बारे में गुरुवार को जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया कि आरोपियों ने बी.टेक छात्र को करीब 7 घंटे तक अपनी एसयूवी में बंधक बनाकर रखा और उसे दिल्ली ले गए, जहां उन्होंने पीड़ित की कावासाकी जेड 900 बाइक 5.80 लाख रुपए में बेच दी और उससे पैसे लूट लिए।

पुलिस ने बताया कि आरोपी उसे सेक्टर 56 में सड़क किनारे फेंककर भाग गए। घटना के बाद पीड़ित डर गया और उसने अपने चचेरे भाई मोहित को इस बारे में बताया, जो उसे सेक्टर 56 के पुलिस थाने ले गया। जिसके बाद पुलिस ने बीएनएस की संबंधित धाराओं के तहत तीन आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

पुलिस ने बताया कि घटना 28 अगस्त को पीड़ित अथर्व के पीजी में हुई। पीड़ित की पहचान पलवल के आगरा चौक निवासी अथर्व के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि अथर्व यहां सेक्टर 55 में एक पीजी में रहता है। अथर्व द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के अनुसार आरोपी भानु, तिलक और गौरव उसके दोस्त पंकज के माध्यम से सेक्टर 80 में उससे मिले थे। तीनों युवक गुंडे हैं और नशा करते हैं।

28 अगस्त को आरोपी तिलक ने वॉट्सएप कॉल के जरिए अथर्व की लोकेशन पूछी। उसने बताया कि वह अपने पीजी रूम में है और शाम करीब 4.15 बजे तीनों वहां पहुंचे और अपनी एसयूवी में उसका अपहरण कर लिया। अथर्व ने कहा कि उन्होंने उसे जान से मारने की धमकी देते हुए उसका मोबाइल फोन छीन लिया और उसके यूपीआई खाते से 1.7 लाख रुपए के चार ट्रांजेक्शन किए। शिकायतकर्ता ने कहा कि आरोपी तिलक और गौरव ने उसे अपनी एसयूवी में बंधक बना लिया और भानु मेरे कमरे में गया, जहां से उसने मेरा लैपटॉप, आईपैड, प्ले स्टेशन, घड़ी, एयरपॉड और पॉवर बैंक निकाला और कार में रख लिया। भानु ने पीड़ित की पैंट की जेब से उसकी लग्जरी कावासाकी जेड 900 बाइक की चाबी भी निकाली और उसे लेकर निकल गया। उनके साथ अन्य दो लोग भी कार से दिल्ली के नारायणा स्थित बाइक शोरूम पहुंचे।

मोदी सरकार के लिए वक्फ संशोधन विधेयक पास कराना अब आसान नहीं ! बीजेडी भी हुई बिल के खिलाफ

भुवनेश्वर, एजेंसी। भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के लिए वक्फ संशोधन विधेयक को राज्यसभा में पास कराना चुनौतीपूर्ण हो सकता है. कभी मोदी सरकार के तमाम फैसलों के साथ खड़ी होने वाली पार्टी बीजेडी ने राज्यसभा में वक्फ संशोधन विधेयक का विरोध करने का एलान किया है. ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री और बीजू जनता दल (बीजेडी) के अध्यक्ष नवीन पटनायक ने गुरुवार को कहा कि अगर संसद में वक्फ संशोधन विधेयक पेश किया जाता है तो उनकी पार्टी इसका कड़ा विरोध करेगी.

भुवनेश्वर में शंख भवन में बीजेडी अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की बैठक के समापन सत्र को संबोधित करते हुए पटनायक ने कहा कि ओडिशा सद्भाव, भाईचारे और शांति के लिए जाना जाता है. पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, अगर यह विधेयक संसद में पेश किया जाता है तो बीजेडी इसका कड़ा विरोध करेगी. पटनायक ने कहा कि हमें अपनी सांस्कृतिक विविधता पर गर्व है. समृद्ध देश के निर्माण के लिए सभी के सहयोग की जरूरत है. पटनायक ने यह भी दावा किया कि वह हर दिन अल्पसंख्यक समुदायों के लोगों से मिल रहे हैं और वे असुरक्षा की भावना व्यक्त की है.

राज्यसभा सांसद मुन्ना खान का बयानत्र बीजेडी के राज्यसभा सांसद मुन्ना खान ने कहा कि उनकी पार्टी राज्यसभा में वक्फ संशोधन विधेयक का विरोध करेगी. बीजेडी अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष खान ने कहा, भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार संसद में वक्फ संशोधन विधेयक लाने की कोशिश कर रही है. वक्फ संशोधन विधेयक के लिए जेपीसी का गठन किया गया है. बीजेडी वक्फ संशोधन विधेयक का विरोध करेगी. बीजेडी अध्यक्ष नवीन पटनायक ने हमें इस बारे में स्पष्ट निर्देश दिए हैं. हम संसद में इस विधेयक का विरोध करेंगे.

उन्होंने यह भी कहा कि पूर्व में ओडिशा में बीजेडी की सरकार थी. हम संघीय व्यवस्था में केंद्र सरकार के साथ मिलकर काम कर रहे थे. हमने ओडिशा को आगे बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार का समर्थन किया है. हमने विरोध भी किया है. उन्होंने हमारी इस आस्था को नहीं माना कि हमने भाजपा का समर्थन किया था.

बता दें, बीजेडी से पहले भाजपा के सहयोगी दलों ने भी वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर आपत्ति जताई है. जेडीयू, लोक जनशक्ति और टीडीपी ने भी विधेयक का विरोध किया है. देश में मुसलमानों के हितों की रक्षा के लिए विभिन्न राजनीतिक दल प्रस्तावित कानून में बदलाव चाहते हैं।

राष्ट्रपति चुनाव में राजपक्षे को समर्थन देने पर चार मंत्री बर्खास्त, विक्रमसिंघे ने की कार्रवाई

कोलंबो, एजेंसी। श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने गुरुवार को अपनी सरकार के चार जूनियर मंत्रियों को बर्खास्त कर दिया। मंत्रियों के खिलाफ 21 सितंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रपति पद के निर्दलीय उम्मीदवार राजपक्षे का समर्थन करने पर यह कार्रवाई की।

राष्ट्रपति विक्रमसिंघे ने बंदरगाह और विमानन सेवा राज्य मंत्री प्रेमलाल जयशेखर, बिजली और ऊर्जा राज्य मंत्री इंडिका अनुरुद्ध, कृषि राज्य मंत्री मोहन प्रियदर्शन डी सिल्वा और राजमार्ग राज्य मंत्री सिरिपाला गमलाथ को बर्खास्त किया। राष्ट्रपति कार्यालय ने कहा कि यह निर्णय संविधान के अनुच्छेद 47 (3) द्वारा उन्हें दिए गए अधिकार के तहत लिया गया।

बर्खास्त किए गए मंत्रियों ने श्रीलंका पोदुजाना पेरामुना (एसएलपीपी) के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार नमल राजपक्षे को समर्थन देने की घोषणा की थी। राजपक्षे ने 75 वर्षीय विक्रमसिंघे से समर्थन वापस ले लिया। मंत्रियों को बर्खास्त करने का निर्णय प्रधानमंत्री दिनेश गुणावर्धने की अध्यक्षता में एक महागठबंधन पीपुल्स यूनाइटेड फ्रीडम अलायंस के गठन के बाद आया। इसमें 25 से अधिक राजनीतिक दल शामिल हैं, जो राष्ट्रपति चुनाव में विक्रमसिंघे का समर्थन कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री दिनेश गुणावर्धने ने कहा कि राष्ट्रपति चुनाव के बाद होने वाले संसदीय चुनाव लड़ने के लिए गठबंधन बनाया गया है। विक्रमसिंघे, जिन्होंने 2022 में अपदस्थ राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के शेष कार्यकाल के लिए राष्ट्रपति पद संभाला था, को एसएलपीपी ने संसद में बहुमत वोट द्वारा स्टॉप-गैप राष्ट्रपति बनाया था। श्रीलंका पोदुजाना पेरामुना (एसएलपीपी) के कई युवा सदस्यों ने दिवालिया अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में विक्रमसिंघे की काम में मदद की। इन्होंने भी देश को आर्थिक संकट से उबारने के लिए राष्ट्रपति का समर्थन करने का फैसला किया। एसएलपीपी ने भी राजपक्षे की उम्मीदवारी पर विक्रमसिंघे का समर्थन करने वाले सदस्यों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने का फैसला लिया है।

विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने दिए राजनीति से दूरी के संकेत, बोले- बच्चों के साथ वक्त बिताना चाहता हूं

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने संकेत दिए हैं कि वह राजनीति से दूरी बना सकते हैं। दरअसल उन्होंने कहा है कि वह अपने बच्चों के साथ समय बिताना चाहते हैं। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि एंटनी ब्लिंकन अगली सरकार में विदेश मंत्री का पद न संभालें। गौरतलब है कि पिछले एक साल में एंटनी ब्लिंकन की व्यस्तता काफी बढ़ गई है। खासकर इस्राइल-हमास युद्ध के बाद से ब्लिंकन ने नौ बार पश्चिम एशिया का दौरा किया है।

ब्लिंकन हैती के दौरे पर हैं। बीते एक दशक में हैती दौरे पर आने वाले ब्लिकंन पहले अमेरिकी विदेश मंत्री हैं। वहां पत्रकारों से बात करते हुए ब्लिंकन ने कहा कि जहां तक मेरे भविष्य की बात है तो मैंने पिछला हफ्ता अपने बच्चों के साथ बिताया था और मैं भविष्य में उनके साथ और ज्यादा वक्त बिताना पसंद करूंगा। एंटनी ब्लिंकन के दो बच्चे हैं। एंटनी ब्लिंकन को जो बाइडन का करीबी माना जाता है और जो बाइडन के सीनेटर रहने, उपराष्ट्रपति रहने और अब राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान भी ब्लिंकन के साथ काम कर रहे हैं। अब बाइडन अगला राष्ट्रपति चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। ऐसे में ब्लिकंन भी राजनीति से दूरी बना सकते हैं।

गौरतलब है कि अमेरिका में किसी विदेश मंत्री का चुनाव के बाद भी पद पर बने रहना बहुत ही असामान्य बात है। आखिरी बार जॉर्ज शुल्ज ने लगातार दो कार्यकाल विदेश मंत्री का पद संभाला था। ऐसा कहा जाता है कि ब्लिंकन जितने बाइडन के करीबी हैं, उतने वे कमला हैरिस के करीबी नहीं हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि ब्लिंकन अगली सरकार में विदेश मंत्री पद पर नहीं रहेंगे। अमेरिका में नवंबर में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होने हैं। डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से कमला हैरिस राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार हैं, जबकि रिपब्लकिन पार्टी की तरफ से डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति पद की रेस में हैं।

यूक्रेन ने नियुक्त किया नया विदेश मंत्री

कीव, एजेंसी। यूक्रेनी संसद ने दिमित्रो कुलेबा की जगह एंड्री सिबिहा को देश का नया विदेश मंत्री नियुक्त करने के लिए मतदान किया है। लॉ मेकर ओलेक्सी होन्चारेंको ने इसकी जानकारी दी। होन्चारेंको ने गुरुवार को टेलीग्राम पर कहा कि सिबिहा ने उपस्थित 315 सांसदों में से 258 का समर्थन हासिल किया है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, इससे पहले गुरुवार को संसद ने कुलेबा को बर्खास्त करने के लिए मतदान किया, जिन्होंने बुधवार को अपना इस्तीफा दे दिया था।

49 वर्षीय साइबिहा ने पहले राष्ट्रपति कार्यालय के उप प्रमुख के रूप में कार्य किया था और अप्रैल में कुलेबा के डिप्टी बने। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने रूस के साथ युद्ध के अहम मोड़ पर हो रहे फेरबदल के बारे में कहा है कि देश को नई ऊर्जा की जरूरत है।

सिबिहा, एक डिप्लोमैट रहे हैं और इन्होंने जेलेंस्की के कार्यालय में कई सालों तक काम किया। वह गुरुवार को नियुक्त किए जाने वाले 8 नए मंत्रियों में से एक हैं। आलोचकों ने कहा है कि यह फेरबदल राष्ट्रपति कार्यालय के प्रमुख एंड्री यरमक के साथ संबद्ध जेलेंस्की के वफादारों के एक छोटे समूह द्वारा सत्ता पर काबिज होने की कोशिश है। तुर्की में पूर्व राजदूत सिबिहा ने यरमैक के डिप्टी के रूप में भी काम किया था।

इसके साथ ही युद्ध के दौरान यूक्रेन की रेलवे को चालू रखने का काम करने वाले लोकप्रिय व्यक्ति अलेक्जेंडर कामिशिन को भी सामरिक उद्योग मंत्रालय से राष्ट्रपति कार्यालय में स्थानांतरित किया जा रहा है। यूक्रेन पर रूसी हमलों के बीच बड़े स्तर पर हो रहे फेरबदल को लेकर कई तरह के सवाल उठने लगे हैं। ये नियुक्तियां तब हुई हैं जब जेलेंस्की इस महीने के अंत में अमेरिका की यात्रा करने की तैयारी कर रहे हैं। जेलेंस्की ने बार-बार सहयोगियों से उन प्रतिबंधों को हटाने का आह्वान किया है जो कीव को रूस में लंबी दूरी के हमलों के लिए पश्चिमी हथियारों का उपयोग करने से प्रतिबंधित करते हैं।

रूसी सेनाएं पूर्व में आगे बढ़ रही हैं और उन्होंने कीव और अग्रिम पंक्ति से दूर अन्य यूक्रेनी शहरों पर मिसाइल और ड्रोन हमलों के अपने अभियान को तेज कर दिया है। आरोप है कि बिजली क्षेत्र और अन्य बुनियादी ढांचे पर रूस की ओर से लगभग रोज हमले हो रहे हैं। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार को कहा कि कुर्स्क के रूसी क्षेत्र में यूक्रेन की घुसपैठ नाकाम रही है बल्कि यूक्रेन की अग्रिम पंक्ति ही कमजोर साबित हुई है। रूस के इस दावे का प्रतिवाद नाटो के महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने किया, जिन्होंने ओस्लो में संवाददाताओं से कहा कि यूक्रेन ने अपने कुर्स्क आक्रमण में बहुत कुछ हासिल किया है। पुतिन ने व्लादिवोस्तोक में ईस्टर्न इकोनॉमिक फोरम में कहा कि रूसी सेना धीरे-धीरे यूक्रेनी सैनिकों को कुर्स्क से बाहर धकेल रही थी, जहां 6 अगस्त को यूक्रेन ने दूसरे विश्व युद्ध के बाद रूस पर सबसे बड़ा विदेशी आक्रमण किया गया था।

दुनिया का सबसे पुराना व विशालकाय नील मगरमच्छ, वजन लगभग 700 किलो और लंबाई 16 फीट

स्कॉटबर्ग, एजेंसी। हेनरी अब 124 साल का हो चुका है जिसकी 6 पत्नियां और 10 हजार बच्चे हैं। हो गए न हैरान यहां किसी इंसान की बात नहीं हो रही। यह है दुनिया का सबसे पुराना व विशालकाय नील मगरमच्छ जो अफ्रीका के स्कॉटबर्ग स्थित क्रोकवर्ल्ड कंजर्वेशन सेंटर में रह रहा है। हेनरी का वजन लगभग 700 किलो और लंबाई 16 फीट है।

हेनरी का जन्म 1900 के दशक की शुरुआत में हुआ था। वह अफ्रीका की नील प्रजाति से संबंधित है, जो अफ्रीका के 26 देशों में पाई जाती है। हेनरी अब तक 10,000 से अधिक बच्चों का पिता बन चुका है। उसके पास छह पत्नियां हैं और इनसे उसने हजारों संतानें पैदा की हैं। आत्मरक्षा और संरक्षित जीवनः हेनरी एक नरभक्षी मगरमच्छ है, जिसका आतंक एक समय में काफी प्रसिद्ध था। फिलहाल, वह एक सुरक्षित और संरक्षित वातावरण में जीवन व्यतीत कर रहा है।

हेनरी के विशाल आकार और उम्र के कारण, वह कई वर्षों से शोध और संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। उसकी लंबाई और वजन उसे अन्य मगरमच्छों से अलग बनाते हैं।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129